१५. शोध प्राविधि का अवमूल्यन हो जाएगा यदि आप - उ० - यहाँ किसी ~~अतिरिक्त~~ व्यक्ति को (अतिरिक्त ढंग से) महत्व ~~देंगे~~ देंगे तथा महिमामण्डित करेंगे

१६. अनुसंधान ग्रन्थ की सुन्दरता में वृद्धि की जा ~~सकी~~ सकती है - उ० - इसमें की जा सकने वाली टंकण संबंधी सौन्दर्यवृद्धि, इसमें दिए गए सुन्दर चित्र एवं व्यवस्थित ग्राफ, इसकी उत्तम जिल्द एवं मुखपृष्ठ.

१७. एक शोध प्रतिवेदन को तैयार कराने के लिए यदि शोधकर्ता में अपेक्षित योग्यता नहीं है, तो इसके द्वारा सम्पन्न किया गया कार्य होगा - उ० - निम्न श्रेणी का.

१८. किसी शोधग्रन्थ में ग्राफों एवं चित्रों का महत्व है - उ० - ये इसमें गुणवत्ता उत्पन्न करते, ये सौन्दर्यबोध कराते हैं, ये अन्वेषणात्मक तथ्यों को सहज बनाते हैं.

१९. अनुसंधानकर्ता में ग्राफ एवं चित्रों के नामांकन, पृष्ठांकन तथा स्वरूप परिमार्जन के लिए भी आवश्यकता होती है - उ० - कलात्मक गुणों की.

२०. शोधग्रन्थ का प्रमुख भाग है - उ० - मुखपृष्ठ, धड़ भाग, पश्च भाग.

२१. शोधग्रन्थ में विषय-प्रवेश का महत्व है - उ० - यह समस्या के महत्व को अपने में संजोए रखता है, यह समस्या संबंधी सर्वेक्षण की दिशा का निर्धारण करता है, यह समस्या के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है.

२२. संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण से लाभ है - उ० - यह सम्पूर्ण शोध की रीढ़ की तरह है, यह उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के निर्माण में सहायक है, यह अध्ययन के अभिकल्प (Design) के निर्माण में मदद करता है.

२३. किस उद्देश्य की प्राप्ति में संबंधित साहित्य हितकर होगा - - उ० - समस्या के परिभाषीकरण में, परिकल्पना निर्माण में, उपकरण चयन में.

किस उद्देश्य की प्राप्ति में संबंधित साहित्य हितकर नहीं होगा ? - उ० - निष्कर्षों की खोज में.

(Research Design)

२४. शोध अभिकल्प का संबंध है — उ० — न्यादर्श से, प्रायोगिक अभिकल्प निर्माण से, उपकरण चयन एवं निर्माण से.

२५. प्रदत्त विश्लेषण एवं विवेचन में अधिकाधिक ग्राह्यता के (Data Interpretation and Analysis) लिए सहायता की जानी चाहिए — उ० — ग्राफों एवं चित्रों की

२६. प्रत्येक शोध ग्रन्थ के अन्त में प्रायः सुझाव एवं संस्तुतियाँ प्रकट की जाती हैं, क्योंकि — उ० — यह एक पारम्परिक चलन है.

२७. आप अपने शोध प्रबन्ध में सुझाव देते वक्त प्राथमिकता में रखेंगे — उ० — अपने अनुसंधान में आने वाली कठिनाइयों को, अपने शोध में निहित परिसीमाओं को, अपने अनुसंधान में किए जा सकने वाले भावी सुधारों को.

२८. शोध सुझावों का महत्व है — उ० — भविष्य में शोधार्थियों के लिए आवश्यक ऊर्जा स्रोत के रूप में.

२९. सभी संदर्भों की युक्तियुक्त वैज्ञानिक सूची का नाम है — उ० — संदर्भ ग्रन्थसूची.

३०. साक्ष्य-सामग्री (Evidences in Research) संग्रह की जाती है — उ० — प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से.

३१. प्राथमिक स्रोत में सम्मिलित किया जाता है — उ० — हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को, मौलिक लेखकों के मूल लेखों को, शोध प्रबन्धों को प्रत्यक्ष रूप में.

३२. विश्वकोष में समाहित सामग्री होगी — उ० — द्वितीयक स्रोत.

३३. Year Books में शोध ग्रन्थों का लेखा-जोखा रहता है — उ० — केवल विशेष विषय की वार्षिकी का.

३४. संदर्भ सूची (Reference) दिया जाता है — उ० — उद्धृत सामग्री की प्रामाणिकता की पुष्टि के लिए.

३५. संदर्भ एवं संदर्भ-ग्रन्थ सूची में एक टेक्नीकल भेद है — उ० — पूर्व में सत्य पृष्ठांकन अंकित किया जाता है, पूर्व में लेखक के नाम के अन्तिम भाग को सर्वप्रथम लिखा जाता है, पूर्व में सम्पूर्ण एवं बारीक सूचनाओं का संग्रह उनके सत्यापन के रूप में किया जाता है.

१. सम्प्रेषण (Communication) शब्द की व्युत्पत्ति हुई है - उ० - कम्यूनिस (Communis) से.

२. 'कम्यूनिस' शब्द ग्रहण किया गया है - उ० - लैटिन भाषा से,

३. कम्यूनिस' (Communis) से तात्पर्य है - उ० - ~~सामान्य~~ सामान्य.

४. सम्प्रेषण सम्भव है - उ० - दो एक ही जाति के जीवों में, एक जीवित प्राणी एवं मशीनों के साथ, मध्य, एक व्यक्ति एवं समूह के मध्य.

५. एन्डरसन ने बताया है - उ० - सम्प्रेषण को एक गत्यात्मक प्रक्रिया.

६. लीगन्स के अनुसार सम्प्रेषण का तात्पर्य है - उ० - दो या दो से अधिक ~~व्यक्त~~ व्यक्तियों के मध्य विचार विनिमय, दो व्यक्तियों के मध्य वार्तालाप, दो व्यक्तियों के मध्य अन्तः प्रक्रिया.

७. सम्प्रेषण है एक - उ० - प्रक्रिया, जोकि स्रोत से लेकर ग्रहणकर्ता के मध्य सम्पन्न होती है, विचार-विनिमय की दशा है, सूचनाओं के हस्तान्तरण की विधि है

८. सम्प्रेषण की प्रकृति होती है - उ० - विचार-विमर्श की प्रक्रिया, उद्देश्यपरक प्रक्रिया, मनोसामाजिक प्रक्रिया

९. सम्प्रेषण की प्रकृति किस के अनुकूल है - उ० - निर्देशात्मक प्रक्रिया, पृष्ठपोषणयुक्त प्रक्रिया, गत्यात्मक प्रक्रिया.

सम्प्रेषण की प्रकृति किस के अनुकूल नहीं है - उ० - ~~निष्क्रिय~~ निष्क्रिय प्रक्रिया

१०. सम्प्रेषण के प्रमुख तत्व हैं - उ० - स्रोत - प्राप्तकर्ता.

११. सम्प्रेषण की सरल प्रक्रिया के तत्व हैं - उ० - संदेश स्रोत - संदेश माध्यम - संदेश प्राप्तकर्ता.

१२. संदेश वाहक का कार्य है - उ० - संदेश का निर्माण करना, संदेश को संकेतों में बदलना, संदेश को प्रसारित करना.

१३. संदेश के गुजरने ~~वाले~~ वाले मार्ग को कहते हैं - उ० - चैनल.

१४. संदेश ग्रहण करने के लिए संदेश प्राप्तकर्ता को क्या करना अनिवार्य है - उ० - उसमें संदेश को प्रसारित करने की योग्यता हो, उसमें संदेश को डिकोडिंग करने की योग्यता हो, उसमें संदेश की व्याख्या करने की योग्यता हो.

१५. संदेश को संकेतों में बदलता है - उ०- इनकोडिंग.
१६. डिकोडिंग का सम्बन्ध है - उ०- संदेश प्राप्तकर्ता से.
१७. 'डिकोडिंग' के अन्तर्गत संदेशों के साथ कौन सी प्रक्रिया की जाती है - उ०- संदेश संकेतों में छिपे गुप्त संदेशों को समझा जाता है
१८. सम्प्रेषण के प्रकार हैं - ~~के~~ उ०- दो.
१९. शाब्दिक सम्प्रेषण किया जाता है - उ०- भाषा के माध्यम से.
२०. यदि आप किसी विदेशी व्यक्ति की भाषा से अनजान हैं, तो संदेश का सम्प्रेषण कैसे करेंगे ? - सांकेतिक भाषा में.
२१. अशाब्दिक सम्प्रेषण सम्भव है - उ०- चक्षुसंकेत के द्वारा.
२२. सम्प्रेषण में उत्पन्न होनेवाली बाधाओं को वर्गीकृत किया जा सकता है - उ०- भौतिक, भाषा संबंधी एवं मनोवैज्ञानिक बाधाओं में.
२३. सम्प्रेषण की सबसे बड़ी बाधा है - उ०- शोर.
२४. सम्प्रेषण की बाधा का निराकरण संभव है यदि - उ०- यह सरल, सुगम्य हो, यह प्रतिपुष्टि युक्त हो, यह उत्तम श्रवण संबंधी नियमों का अनुपालन करने वाला हो.
२५. सम्प्रेषण की बाधाओं पर विजय प्राप्त की जा सकती है यदि - श्रवणकर्ता में उत्तम श्रवण संबंधी सभी गुण विद्यमान हों, श्रवण कर्ता प्रेरित स्थिति में हो, श्रवणकर्ता को कुछ लाभ प्रतीत होता हो.
२६. एक प्रभावी सम्प्रेषण में आवश्यकता नहीं है - उ०- छात्रों के लगाव (Involvement) की
२७. एक श्रेष्ठ ~~शिक्षक शिक्षक~~ शिक्षण शिक्षक के किस गुण में निहित माना जाता है ? - उ०- व्यावसायिक निष्ठा एवं प्रेम में.
२८. एक प्रभावी शिक्षक सुनिश्चित करता है - उ०- अपने छात्रों में प्रतिस्पर्धा अथवा सहयोग को जिसकी भी आवश्यकता हो.
२९. यदि आपका एक साथी आपकी उस त्रुटि के प्रति इंगित करता है जो आपने कक्षा में की थी (पढ़ाते समय) तो आप उसकी आलोचना के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करेंगे?

-उ०- आप अतः कुटिपर शिक्षक साथी के साथ विचार-विमर्श करेंगे, उसे समझायेंगे, यदि गलत सिद्ध हुए तो, तो मानेंगे तथा ~~धन्यवाद~~ उनका धन्यवाद ज्ञापन करेंगे,

३०. यदि आपके पढ़ाने के उपरान्त भी छात्र किसी विषयवस्तु को समझने में असमर्थ रहे हैं, तो आप क्या करेंगे?
उ० - आप पुनः नये ढंग से समझाने का प्रयास करेंगे.

३१. आप एक प्रभावशाली ~~सम्प्रेष~~ सम्प्रेषणकर्ता के लिए अनिवार्य रूप से प्रथम चरण मानते हैं - उ०- सम्प्रेषण के लक्ष्यों का निर्धारण करना.

३२. यदि आपकी नियुक्ति किसी महाविद्यालय में एक शिक्षक के रूप में हो जाती है, तो आप अपनी कक्षा में छात्रों के प्रति कैसा व्यवहार करेंगे? - उ०- प्रजातांत्रिक.

३३. देश में वैज्ञानिक जागरूकता पैदा करने की दृष्टि से जनसाधारण के प्रदर्शन हेतु कौन सी स्पेशल ट्रेन चलाई गई थी?
-उ०- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी रेल.

३४. यदि आप अपने छात्रों में प्रजातांत्रिक प्रवृत्तियों को सम्प्रेषित करने के लिए उत्सुक हैं, तो कौन सी पद्धति इस लक्ष्य की सम्भावित पूर्ति करने में समर्थ सिद्ध होगी?
उ०- आप अपने दैनिक व्यवहार में प्रजातांत्रिक मूल्यों को तरजीह दीजिए तथा कक्षा के समस्त छात्रों को कक्षा प्रबंधन हेतु में संलग्न कीजिए तथा उन्हें उपयुक्त ड्यूटी भी बाँटिए.

३५. शिक्षण का सम्प्रेषण प्रभावी हो इसके लिए आवश्यक है
-उ०- शिक्षक वहाँ से प्रारम्भ करे जहाँ तक छात्र जानते हैं.

३६. एक सम्प्रेषण ~~क्रिया~~ प्रक्रिया में पृष्ठ-पोषण का अन्तिम लक्ष्य होता है - उ०- सम्प्रेषण प्रक्रिया में अभीष्ट परिवर्तन करना.

३७. शिक्षा-मनोविज्ञान का आधारभूत कार्य है प्रशिक्षुओं को -
उ०- छात्रों की आवश्यकताओं, समस्याओं एवं व्यवहार की स्टाइल्स में ~~अन्तर्दृष्टि~~ अन्तःसूझ पैदा करना.

३८. यदि एक शिक्षक अपने विचारों को भलीभाँति ढंग से छात्रों तक ~~पहुँच~~ पहुँचाने में असमर्थ रहता है, तो इसका परिणाम होगा -उ०- कक्षा में अनुशासन का समापन, शिक्षक के द्वारा पढ़ाए जानेवाले टॉपिक में छात्रों की रुचि का समापन, कक्षा में छात्रों की अधिकाधिक अनुपस्थिति.

३९. जनसंचार (Mass Communication) की एक प्रमुख सीमा है - पृष्ठ-पोषण तंत्र अत्यधिक दुर्बल स्थिति में होता है.

४०. कौन सी स्थिति में छात्र अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता के साथ पारस्परिक क्रियाओं में व्यस्त रह सकते हैं -उ०- छोटे समूह के साथ विचार-विमर्श करने पर.

४१. कौन सी स्थिति में कक्षा सबसे अधिक प्रभावी सिद्ध होगी -उ०- यदि शिक्षक शिक्षण के दौरान छात्रों को रिलेक्स करें रखें.

४२. यदि आप अपनी कक्षा में प्रभावी सम्प्रेषण जारी रखने में रुचि रखते हैं, तो आपको करना होगा -उ०- संदेश भेजने वाले के संकेतों को ज्यों का त्यों छात्रों द्वारा पकड़ा जाना.

४३. आपके मतानुसार ~~कौन सा~~ एक कक्षा में प्रभावी सम्प्रेषण के मार्ग में बाधा माने जा सकते हैं -उ०- एक दीर्घ कथन, एक अस्पष्ट कथन, एक ऐसा कथन जो श्रवणकर्ता को यह अवसर प्रदान करे कि वह स्वयं इससे निष्कर्ष निकाले.

~~४३~~ आपके ~~मतानुसार~~ मतानुसार एक कक्षा में प्रभावी सम्प्रेषण में बाधा नहीं माना जा सकता -उ०- एक संक्षिप्त कथन.

४४. किसी शोध कार्य को सम्प्रेषित करने के लिए कौन सी वस्तु अनिवार्य है ? -उ०- भाषा पर सम्पूर्ण प्रभुत्व, उद्देश्यों का कथन.

४५. आपके अनुसार यदि एक शिक्षक को उत्तम सम्प्रेषणकर्ता मान लिया जाए, तो उसकी प्रमुख ड्यूटी होनी चाहिए -उ०- वह छात्रों में चिन्तन योग्यता का संचार करें.

४६. समस्त औपचारिक एवम् अनौपचारिक सम्प्रेषणों में गुण निहित रहता है -उ०- समानता.

४७. प्रायः सम्प्रेषण में प्रत्यक्षीकरण, धारणा, एवं पुनर्वहन की स्थिति होती है -उ०- चैनल चरों के समान.

४८. एक प्रभावी सम्प्रेषण में आप किस पद को प्राथमिकता प्रदान करेंगे -उ०- सम्प्रेषण के उद्देश्यों का विशिष्टीकरण करना.

४९. एक प्रभावी सम्प्रेषण प्रक्रिया में आवश्यकता नहीं होती है - उ०- सौन्दर्यपूर्ण व्यक्तित्व की.

एक प्रभावी सम्प्रेषण में आवश्यकता होती है - उ०- वाणी में उतार-चढ़ाव या अन्य परिवर्तनों की, उचित मूक भावों की, विषय-वस्तु की 'मास्टरी' की

५०. कौन सा कथन सत्य नहीं है? -उ०- "एक उत्तम सम्प्रेषणकर्ता का भाषा पर अधिकार होता है"

कौन सा कथन सत्य है -उ०- "एक उत्तम सम्प्रेषणकर्ता - एक उत्तम शिक्षक नहीं हो सकता है" "एक उत्तम सम्प्रेषणकर्ता में - हास्य की उत्तम अनुभूति होती है, "एक उत्तम सम्प्रेषणकर्ता में बृहद् पठनीय क्षमता होती है"

५१. एक कक्षा में सम्प्रेषण के मार्ग में सबसे बड़ा व्यवधान है- उ०- कक्षा में अत्यधिक शोर.

५२. एक प्रभावी सम्प्रेषण, संदेश ग्रहणकर्ता में उत्पन्न करता है -उ०- स्वीकृति

५३. एक शिक्षक को प्रभावी सम्प्रेषणकर्ता के रूप में स्वयं को कक्षा में स्थापित करने के लिए कौन सा उपाय अपनाना चाहिए? -उ०-

वह किसी पाठ के संदर्भ में पूछे जाने वाले प्रश्नों के सही उत्तर ढूँढने में छात्रों की मदद करे.

५४. प्रायः कई बार ऐसा देखा गया है कि कक्षा में शिक्षण सम्प्रेषण असफल हो जाता है ~~उ०~~ क्योंकि - उ० - कक्षा के अंदर एवं बाहर अत्यधिक शोर जारी है.

५५. प्रभावी सम्प्रेषण सम्पन्न होगा यदि -उ०- संदेश को श्रवणकर्ताओं के अनुकूल डिज़ाइन किया गया है.

५६. शिक्षक को अपने सम्प्रेषण में प्रयुक्त करना चाहिए -उ०- दीर्घ स्वर (Elongated Tone)

५७. कक्षा में सम्प्रेषण प्रक्रिया को दोषयुक्त बनाता है? - उ० - व्युत्क्रमीकरण (Reversing) - मूल्यांकित करना - केन्द्रित करना (Focussing), मूल्यांकित करना - केन्द्रित करना - उद्धरण देना, मूल्यांकित करना - केन्द्रित करना - बढ़ा-चढ़ाकर बताना.

कक्षा में सम्प्रेषण प्रक्रिया को दोषयुक्त नहीं बनाता है - उ० - मूल्यांकित करना - उद्धरण प्रस्तुत करना - बढ़ा-चढ़ाकर बोलना (Exaggerating)

५८. कक्षा में होने वाले शोर को नियंत्रित करने की सर्वोत्तम विधि है - उ० - शिक्षक बिल्कुल शांतिपूर्वक खड़ा रहे तथा सम्पूर्ण कक्षा का नेत्रों से सूक्ष्म निरीक्षण करे.

५९. एक प्रभावशाली उत्तम शिक्षक में आप कौनसे गुण देखना पसन्द करेंगी - उ० - विषय-वस्तु गहन ज्ञान, प्रभावी शाब्दिक सम्प्रेषण, छात्रों से सम्मान प्राप्त करने की दक्षता.

६०. एक उत्तम शिक्षण के लिए शिक्षक द्वारा कक्षा में दिये जाने वाले व्याख्या संबंधी शिक्षण कौशल हैं - उ० - कक्षा में सम्प्रेषण बूस्टरों का (Booster) का अधिकाधिक प्रयोग करना, उद्दीपक में परिवर्तन करना, प्रश्न-पूछने की कुशलतायें

६१. पृष्ठ-पोषण से सम्प्रेषण प्रक्रिया में लाभ प्राप्त होता है - उ० - यह सम्प्रेषण को शुद्ध और स्पष्ट बनाता है

६२. प्रभावी सम्प्रेषण का द्योतक है - उ० - छात्रों के लिए जो भी लाभप्रद हो उसे बतायें.

६३. शिक्षक के विचारों का छात्रों तक सम्प्रेषण का तात्पर्य है - उ० - ~~विचारें~~ विचारों का मस्तिष्क में समावेश करना.

६४. जब आप कक्षा में अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं, तो यह अधिक अच्छा है, यदि आप - उ० - यह जानें कि आपके विचार के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों के विचार क्या है, यह जानें कि कक्षा में बैठे समस्त छात्र-समांगी (Homogeneous) प्रकृति के नहीं हैं, अन्य विचारों को भी पर्याप्त तरजीह दें.

६५. एक शिक्षक का कक्षा में प्रभावी शिक्षण होगा यदि - उ० - वह छात्रों को अनेक प्रकार के अधिगम अनुभव (Learning experiences) प्रदान करता है.

टिप्पणी: एक बृहद् कक्षा में प्रायः ऐसा देखा गया है कि अधिकांश छात्र शिक्षक को धोखा देने का प्रयास कर रहे होते हैं, इसमें दोष है – उप-शिक्षण प्रक्रिया का।

Information and communication Technology ICT
सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी
Data and Information
प्रदत्त एवं सूचना।
Information communication Technology – ICT
सूचना सम्प्रेषण तकनीकी
Application
प्रयोग, उपयोग।
Computer Assisted Instruction CAI
कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन
Terminology Related to computer
कम्प्यूटर सम्बंधी शब्दावली।
Computed Assisted Designing CAD
Disk operating system DOS
Read only Memory ROM
Random Access Memory RAM
~~Picture~~ Picture cells PIXEL
Power Supply Unit PSU
Compact Disc-Read only Memory CD-ROM
Local Area Networking LAN
Wide Area Networking
उच्च शिक्षा में कैरियर अभिमुखीकरण या उच्चशिक्षा में व्यवसायीकरण
~~Career~~ Career Orientation in Higher Education or Vocationalisation of Education.

संगठनात्मक ~~ढाँचे~~ ढाँचा = ~~orag~~ organisational structure
आवासीय विश्वविद्यालय = Residential Univs. = एकात्मक शिक्षण विश्वविद्यालय
संबद्धक विश्वविद्यालय = Affiliating Univs.
आवासीय-संबद्धक विश्वविद्यालय = Residential cum Affiliating Univs.

— Books with Authors.

स्वायत्तता = Autonomy
समवर्ती = Concurrent list.

573
186
187

समन्वय एवम् उन्नयन मशीनरी
Co-ordination and Promotional Machinery.

पारम्परिक विश्वविद्यालय = Traditional Univs.
मुक्त विश्वविद्यालय = Open Univs.

(विश्वविद्यालय स्वायत्तता)
University Autonomy.
विश्वविद्यालय हेतु कानून व्यवस्था
Legislation for Univs.

उच्च शिक्षा का नियंत्रण, राज्य शासन एवं प्रशासन
Governance Polity and Administration of Higher Education.

SCOVE => Standing Committee of Vocational Education.

University Grants Commission — U.G.C.

National Council of Educational Research and Training — NCERT

Inter-University Board (IUB) or Association of Indian Universities — AIU

HRDM — मानव संसाधन विकास मंत्रालय — Human Resource Development Ministry

Central Advisory Board of Education — CABE

Indian ~~Council~~ Council of ~~Secondary~~ Secondary Education — ICSE

राष्ट्रीय ग्रामीण उच्च शिक्षा परिषद् National Council of Rural Higher Education — NCRHE

All India Council of Technical Education — AICTE

National Council of Teacher Education — NCTE

All India Council of Women Techears — AICWT

All India Board of Adult Education — AIBAE

National Board for Promotion of Books — NBPB

CAB — Central Advisory Board (Organisation for ~~physi~~ physical Education and Entertainment.

All India Council for Sports — AICS.

Central Institute of Educational Technology — CIET

Regional Colleges of Education — RCE's

International Center for Material Science — ICMS] situated in Bangalore
CNR Hall of Science — Started in year 2008 Dec 4.

= Unitary Teaching Univs, संघात्मक विश्वविद्यालय (~~Unitary Teaching~~ Federal Univrs)

1. सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का कार्य है – उ० – सूचनाओं का संकलन एवं संगृहण करना, सूचनाओं का सम्प्रेषण करना, सूचनाओं का प्रोसेसिंग करना.

2. प्रदत्त एवं सूचना – उ० – सूचना प्रदत्तों से जन्म लेती है.

3. सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का लक्ष्य है – उ० – शिक्षा एवम् अनुसंधान सहित ~~आदि~~ विषय सामग्री का अधिकाधिक संचार करना, वर्तमान पीढ़ी को प्रभावी 'साइबर शिक्षा तंत्र' में प्रतिस्थापित करना, विभिन्न अनौपचारिक शिक्षा पाठ्यक्रमों का प्रचार-प्रसार करना.

4. ~~सूचना~~ सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी की आवश्यकता शिक्षा जगत में है – उ० – शिक्षा की बढ़ती माँग को संतुष्ट करना तथा एक ज्ञान समृद्ध समाज (Knowledge based Society) का निर्माण करना.

5. मल्टी मीडिया किट तैयार करने का प्रथम पद है – उ० – पाठ्यवस्तु स्वं उसके उद्देश्यों का निर्धारण करना, उपयुक्त सम्प्रेषण तकनीकी का चयन करना, उपयुक्त तकनीकी का प्रयोग करने के लिए निर्देशों का अनुपालन करना.

6. सूचना सम्प्रेषण तकनीकी की शिक्षा में भूमिका है – उ० – आमने-सामने बैठकर परामर्श प्रदान करना, टेलीफोन द्वारा परामर्श प्रदान करना, श्रव्य-दृश्य कैसेट्स का परामर्श में प्रयोग करना.

7. आजकल सूचना क्रांति का युग है, अतः सूचनाएँ मानी जाती हैं – उ० – उपभोग की वस्तुएँ, आर्थिक विकास की वस्तुएँ, ~~संचित~~ राष्ट्रीय उन्नति एवं विकास की वस्तुएँ.

8. ~~कम्प्यूटर~~ कम्प्यूटर कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं कर सकता है – उ० – प्रोग्राम के बिना.

9. कम्प्यूटर शब्द का प्रायः प्रयोग किया जाता है C.P.U तथा – उ० – आन्तरिक मेमोरी (Internal Memory) के लिए

10. एक डिजिटल कम्प्यूटर में कंट्रोल यूनिट (Control Unit) को कहा जाता है – उ० – घड़ी (Clock), आई सीज (ICs), नर्व सेंटर.

11. आदेशों का समूह (Group of Instructions) जो कम्प्यूटर को निर्देशित करता है, उन्हें कहते हैं – उ० मेमोरी (Memory)

12. कम्प्यूटर आधारीय सूचना तंत्र में किस प्रकार का सर्वाधिक हार्डवेयर इनपुट फेज में प्रयोग किया जाता है? – उ० – कीबोर्ड (Keyboard)

१३. एक कम्प्यूटर सिस्टम में किस प्रकार की युक्तियाँ प्रयोगकर्ता को उसमें अन्य कम्पोनेन्ट्स (components) और कैपेबिलिटीज (capabilities) को जोड़ने की सुविधा प्रदान करते हैं? -उ०- एक्सपेन्सन स्लॉट्स (Expansion slots)

१४. भारत में सर्वप्रथम कम्प्यूटर कब और कहाँ स्थापित किया गया? -उ० - इण्डियन स्टेटिस्टिकल इंस्टीट्यूट, कोलकाता, 1955 में.

१५. 'कम्प्यूटर का पितामह' कहा जाता है? —उ०- चार्ल्स बैबेज को.

१६. कौन-सी मापन यूनिट को कम्प्यूटर सिस्टम के संदर्भ में प्रयोग किया है? - उ० - बाइट, किलोबाइट, मेगाबइट
Byte, Kilobyte, Megabyte.

१७. हार्डडिस्क एवं डिसकैटी (Diskette) हैं -उ० - डाइरेक्ट एक्सेस स्टोरेज डिवाईसेज (Direct Access Storage Devices)
DASD

१८. कम्प्यूटर के द्वारा सम्पन्न होनेवाले सभी कार्य नियंत्रित होते हैं -उ० - सी पी यू (CPU) द्वारा.

१९. कम्प्यूटर आधारीय सूचना तंत्र में आउटपुट फेज में कौन-सी क्रिया घटित होती है -उ०- सूचनाओं की हार्ड कॉपी या सॉफ्ट कॉपी तैयार की जाती है.

२०. कम्प्यूटर आधारीय सूचनातंत्र को उत्तम ढंग से किस प्रकार वर्णित किया जा सकता है - उ० - एक ऐसा सिस्टम जिसमें कम्प्यूटर का प्रयोग प्रदत्तों (Data) को सूचनाओं में परिवर्तित करने के लिए किया जाता है.

२१. कम्प्यूटर्स को प्रयोग करने से लाभ हैं कि - उ० - कम्प्यूटरद्वारा गणनाएँ तीव्रता से की जाती हैं तथा उसमें अधिकाधिक डेटा को सुरक्षित रखा जा सकता है, यदि आपका इनपुट अशुद्ध हो, तो भी प्राप्त आउटपुट शुद्ध होगा, कम्प्यूटर कभी न थकने वाली मशीन है

२२. प्रायः सुपर कम्प्यूटर्स का प्रयोग किया जाता है -उ०- इनपुट-आउटपुट की इन्टेसिव प्रोसेसिंग में, डेटा रिट्रीवल आपरेशन्स में, मैथेमेटिकल - इन्टेसिव साइन्टिफिक एप्लीकेशन में.

OCR = optical character Reader
OMR = optical Mark Reader
ROM =

२३. एक कम्प्यूटर को चालू (खोलने) करने के लिए सूचनाएँ संग्रहीत होती हैं – उ० – रोम (ROM – Read only मेमोरी) में.
(E.P.O)

२४. कम्प्यूटर घटकों में सर्वाधिक तीव्र गतिवाला घटक है – उ० – सीपीयू

२५. डेटा एन्ट्री (Data Entry) की जा सकती है? – उ० – ओसीआर (OCR) द्वारा, ओएमआर (OMR) द्वारा, स्वर पहचान सिस्टम द्वारा.
२६. डेटा एन्ट्री नहीं की जा सकती – उ० – कोम (COM) द्वारा.

२७. MICR के प्रयोग से लाभ हुआ है – उ० – पैसा रहित समाज के निर्माण में.

२८. ऑप्टीकल करैक्टर रीडर (optical character Reader – OCR) पढ़ सकता है – उ० – मशीन को.

२९. मैग्नेटिक टेप कार्य कर सकता है – उ० – इनपुट मीडिया की तरह, आउटपुट मीडिया की तरह, सैकेन्ड्री स्टोरेज मीडिया की तरह.

३०. डेटा ~~प्रोसेसिंग~~ प्रोसेसिंग का सर्वाधिक मितव्ययी ढंग है – बैच प्रोसेसिंग (Batch Processing)

३१. चैक (cheque) की धनराशि (Amount) मैग्नेटिक इंक के रूप में रिकॉर्ड किया जाता है – उ० – एनकोडर (Encoder) के द्वारा.

३२. एक फ्लॉपी डिस्क (Floppy Disk) में निहित होती है – 1,440,000 बाइट्स.

३३. दो प्रमुख प्रकार के कम्प्यूटर चिप्स होते हैं – उ० – प्राइमरी मेमोरी चिप, माइक्रो प्रोसेसर चिप.

३४. कम्प्यूटर का मॉनीटर इससे जुड़ा रहता है – उ० – एक केबिल के द्वारा.

३५. एक कम्प्यूटर सिस्टम में कार्य के आधार पर कौन-सी डिवाइस की-बोर्ड के ठीक उल्टा (विपरीत) है? – उ० – प्रिंटर (Printer)

३६. एक मॉनीटर एक टीवी सैट की तरह दिखाई देता है, किन्तु यह नहीं कर पाता है – उ० – टीवी संकेतों की प्राप्ति.

३७. लोकल एरिया नेटवर्क (LAN) में प्रयोग नहीं किया जाता है – उ० – मॉडेम को. (local area networking)

३८. मॉडेम को कनेक्ट किया जाता है – उ० – टेलीफोन लाइन एवं कम्युनिकेशन एडेप्टर के मध्य.

लोकल एरिया नेटवर्क (LAN) में प्रयोग किया जाता है – उ० – प्रिंटर को, केबिल को, कम्प्यूटर को.

३९. जब हम एक छोटे एरिया में कम्प्यूटर्स के समूह को परस्पर जोड़ देते हैं और उन्हें जोड़ने में टेलीफोन लाइन का इस्तेमाल नहीं करते हैं, तो इसे कहा जाता है - उ० - लोकल एरिया नेटवर्क (LAN)

४०. एक ऐसा कम्यूनिकेशन नेटवर्क जो वृहद् संस्थानों/प्रतिष्ठानों के द्वारा क्षेत्रीय, राष्ट्रीय अथवा वैश्विक सूचनाओं के सम्प्रेषण में मदद करता है, उसे कहते हैं - उ० - WAN.

४१. एक बाइट बराबर होती है - उ० - ८ बिट्स के.

४२. एक किलोबाइट (1KB) = 1024 बाइट्स
मेगाबाइट (1MB) = 1000 किलोबाइट्स.

~~४३. एक कम्प्यूटर की क्लॉक स्पीड (Clock speed) का मापन किया जाता है - उ० - मेगा बाइट्स एवं गीगाबाइट्स में.~~

~~४४. एक कम्प्यूटर अपनी सभी गणितीय एवं तार्किक गणनायें करता है - उ० - मेमोरी यूनिट में~~

४३. एक कम्प्यूटर की क्लाक स्पीड (Clock speed) का मापन किया जाता है - उ० - मेगाहर्ट्ज, ~~एवं~~ गीगाहर्ट्ज ~~में एवं ह~~

४४. एक कम्प्यूटर अपनी सभी गणितीय एवं तार्किक गणनायें करता है - उ० - सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट में (CPU) (Central processing Unit)

४५. कम्प्यूटर के 'संदर्भ में 'रैम' (RAM) से तात्पर्य है - उ० - ~~रीड ऑनली~~ रैन्डम एक्सेस मेमोरी. (Random access memory)

४६. इनपुट डिवाइस का उदाहरण है - उ० - की-बोर्ड माउस, ऑप्टीकल मार्करीडर (optical mark reader) Keyboard, Mouse.

४७. 'प्रोग्राम' शब्द से तात्पर्य है - उ० - सूचनाओं (आदेशों) की सूची.

४८. C, C++ एवं जावा - उदाहरण हैं - उ० - प्रोग्रामिंग लैंग्वेजेज के.

४९. UNIX (यूनिक्स) DOS (डास) एवं WINDOWS (विन्डोज़) उदाहरण हैं - उ० - ऑपरेटिंग सिस्टम के.

५०. मल्टीमीडिया डिवाइसेज के द्वारा कम्प्यूटर को प्रयोग किया जाता है - उ० - मनोरंजन के लिए.

५१. किन्हीं दो अंकों को जोड़ने का ऑपरेशन किया जाता है - उ० - (ए. एल. यू.) ALU में

५२. रजिस्टर्स (Registers) उच्च गति वाले एलीमेण्ट्स हैं, जोकि स्थित रहते हैं – सीपीयू (CPU) में
५३. मशीन लैंग्वेज एवं असेम्बली लैंग्वेज (Assembly Language) उदाहरण हैं – उ० – Low Level Language के (लो लेवल लैंग्वेज के)
५४. H.T.M.L (एच.टी.एम.एल) एक संक्षिप्त नाम है, जिसे प्रयोग किया जाता है – उ० – एक ऐसी भाषा के लिए जिसे वेबपेज तैयार करते हैं (webpage)

५५. http://www. एनीमेशन. कॉम – यह एक उदाहरण है – उ० – यू आर के (URK) का
५६. एक संगठन के प्रारम्भिक वेबपेज को कहते हैं – उ० – होमपेज (Homepage)
५७. POP3 एवं IMAP – ऐसे ई-मेल एकाउंट हैं, जिनके द्वारा – एक व्यक्ति को एक सर्वर (server) से जोड़ दिया जाता है जिससे कि वह ई-मेल भेज सके तथा प्राप्त कर सके.
५८. संक्षिप्त शब्द डी.एन.एस. (DNS) का तात्पर्य है – उ० – डोमेन नेम सिस्टम (Domain Name System)
५९. सर्वप्रथम मैकेनिकल डिजिटल कैलकुलेटर ईजाद किया था – उ० – ब्लेज पास्कल ने.
६०. आधुनिक कम्प्यूटर का पिता कहते हैं – उ० – चार्ल्स बैबेज को
६१. प्रथम इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर का नाम था – उ० – एनिएक (ENIAC)
६२. जिसे बिट्स एवं बाइट्स में नापते हैं – उ० – कम्प्यूटर स्टोरेज कैपेसिटी.
६३. विश्व के क्षेत्र में कौनसा नेटवर्क सर्वप्रथम विकसित किया गया – उ० – वैन (WAN) wide area networking
६४. गेटवे (Gateways) को जोड़ने के लिए प्रयोग किया जाता है – उ० – दो बिल्कुल असमान नेटवर्क्स को.
६५. मॉडेम (MODEM) को हम प्रयोग करते हैं, जब हम डेटा को सम्प्रेषित करते हैं – उ० – वैन (WAN) में
६६. कौनसी टोपोलोजी (TOPOLOGY) सर्वोत्तम है – उ० – Bus Topology
६७. इन्टरनेट से एक उद्यम को लाभ है – उ० – वह अपने ज्ञान को अद्यतन बना सकता है तथा उसे संवर्द्धित करता है,

वह छात्रों को परामर्श प्रदान कर सकता है, वह शिक्षण हेतु शिक्षण सहायक सामग्री तैयार कर सकता है।

६८. वेबपेज के कंटेंट को इन्टरनेट सर्विस के माध्यम से उपलब्ध कराने वाले उपकरण को कहते हैं – उ० – सर्वर (Server)

६९. वेब क्लाइन्ट्स (Web Clients) को कहते हैं – वेब ब्राउजर (Web Browser)

७०. एमएस वर्ड ~~एमएस~~ (MS WORD) उदाहरण है – उ० – (एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर) Application Software का।

७१. MS WORD के लाभ हैं – उ० – पत्र-लेखन संबंधी कार्यों में, व्याख्यान तैयार करने ~~संबंधी~~ संबंधी कार्यों में, ~~परीक्षा~~ परीक्षा प्रश्न-पत्र तैयार करने में

७२. एक अध्यापक प्रश्न-बैंक (Question Bank) तैयार कर सकता है – उ० – एम-एस. वर्ड की सहायता से

७३. (MS WORD) में अंतिम क्रिया (Last Action) को विपरीत किया जा सकता है (UNDO) के द्वारा।

७४. हैडर्स (Headers) एवं फुटर्स (Footers) प्रदर्शित किए जाते हैं – उ० – In Print Layout.

७५, आप टंकण करने के लिए, सामग्री के सम्पादन के लिए तथा उसकी फॉर्मेटिंग (Formatting) करने के लिए, कम्प्यूटर विण्डो जिसका उपयोग करेंगे – उ० – Normal View का।

७६. प्रस्तुत किए जाने वाले पैकेज (Presentation Package) तथा Slides को तैयार किया जाता है – उ० – (Power Point) में

७७. एक व्यक्ति पॉवर पॉइन्ट के द्वारा प्रेजेन्टेशन (Presentation) कर सकता है (प्रदर्शित कर सकता है) – उ० – सेल्स प्रमोशन के लिए, शिक्षण के लिए, एम्प्लोइज के प्रशिक्षण के लिए (अभिविन्यास – orientation के लिए)

७८. Power Point में New Presentation तैयार करने के लिए हम किस ~~कमांड~~ कमांड का प्रयोग करेंगे – उ० – ऑटो कन्टेन्ट विजर्ड (AUTO Content Wizard)

७९. New Slide के चुनाव के लिए आप (Menu Bar) मेनू बार के कौन से भाग को खोलेंगे – उ० – इन्सर्ट (Insert).

65536

८०. Slide order को परिवर्तित करने के लिए आप किस कमान्ड का ~~का~~ चुनाव करेंगे - उ० - Slide Sorter.

८१. Font size को बदला जा सकता है - उ० - Insert Menu से,

८२. हम Report card तैयार कर सकते हैं - उ० - एक्सेल (Excel में)

८३. हम एक (Pie Graph) पाई ग्राफ बना सकते हैं - उ० - एक्सेल में.

८४. एक worksheet में 256 columns हैं, उसमें पंक्तियाँ (Rows) होंगी - उ० - 65536.

८५. एक्सेल (Excel) में सभी सूत्र (Formulae) प्रारम्भ होते हैं - उ० - (=) बराबर के चिह्न से.

८६. मल्टीमीडिया है - उ० - एक ~~हैलो लॉज~~ टेक्नोलॉजी.

८७. पारम्परिक कम्प्यूटर में कमी होती है - उ० - प्रभावी सम्प्रेषण में.

८८. मल्टीमीडिया में CD-ROM की किस (Range) का इस्तेमाल किया जाता है - उ० - 200-600 मेगाबाइट (MB)

८९. रेखीय प्रोग्रेमिंग का जनक माना जाता है - उ० - बी० एफ० स्किनर को.

९०. Computer Assisted Instruction का उपयोग किया जाता है - उ० - ज्ञानात्मक एवं भावनात्मक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु,

९१. computer Assisted Instruction ~~का~~ एक प्रारूप है - उ० - हार्डवेयर एप्रोच का.

९२. Modem का तात्पर्य है - Modulater - Demodulater
मोडेम का तात्पर्य है - मॉड्यूलेटर - डिमोड्यूलेटर.

१. सन 2002-03 तक उच्च शिक्षा में (विश्वविद्यालयों की संख्या में) कितने गुना वृद्धि दर्ज की गई है? - उ० - 13 गुना.

२. 2005 तक ~~भारत में डीम्ड~~ भारत में डीम्ड विश्वविद्यालयों की संख्या है - उ० - ८९

३. भारत में आजकल कृषि शिक्षा संस्थानों की संख्या है - उ० - ३४.

४. देश में ~~कुल~~ विश्वविद्यालयों की संख्या है - उ० - ६.

५. देश में कुल महिला विश्वविद्यालय हैं - पाँच.

६. दसवीं पंचवर्षीय योजना में उच्च शिक्षा परिव्यय है - उ० - 41765 लाख रुपए.

७. दसवीं पंचवर्षीय योजना (2002-07) में उच्च शिक्षा का विकासात्मक उद्देश्य है - उ० - Sustainable मानव विकास, विश्व संदर्भ में उपयुक्तता, शिक्षण गुणवत्ता में सुधार.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के प्रतिवेदन ~~(2002-03)~~ (2002-03) में उच्च
8. शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्य हैं - उ० - उच्च शिक्षा की उपयुक्तता पर बल,
उच्च शिक्षा की गुणवत्ता, मूल्यांकन एवम् एक्रेडिटेशन पर बल,
अनुसंधान एवं विकास पर बल,

9. दसवीं पंचवर्षीय योजना के प्रथम वर्ष में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
ने उच्चशिक्षा हेतु बजट निर्धारित किया था - उ० - 516.75 करोड़ रुपए,

10. उपर्युक्त बजट के अन्तर्गत जो स्कीम लागू की गई थी, वह है -
उ० - विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों का सामान्य विकास, पहुँच एवं
सापेक्ष सहभागिता में वृद्धि, उपयुक्त शैक्षिक उन्नयन.

11. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने दसवीं योजना के अन्तर्गत
निर्धारित बजट में 10 प्रतिशत अतिरिक्त बजट को सुरक्षित किया है
-उ० - उत्तर-पूर्वी विश्वविद्यालयों एवम् उनके संबद्ध महाविद्यालयों के
लिए.

12. 2002-03 तक सभी विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में छात्रों के
नामांकन की संख्या थी - 88.25 लाख,

13. उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली छात्राओं का अनुपात कुल छात्र संख्या
के संदर्भ में 2002-03 तक था - उ० - 39.84%

14. देश में छात्राओं का उच्च शिक्षा में सर्वाधिक नामांकन वाला राज्य था
(2002-03 तक) केरल.

15. 2001 तक देश के सभी विश्वविद्यालयों द्वारा प्रदत्त पी०एच०डी० डिग्री की
संख्या थी - उ० - 11,450.

16. 2002-03 के आँकड़ों के अनुसार, विभिन्न विश्वविद्यालयों में कार्यरत
शिक्षकों की संख्या 0.75 लाख है इनमें हैं - 20.22 प्रतिशत प्रोफेसर,
31.55 प्रतिशत रीडर तथा 45.78 प्रतिशत व्याख्याता

17. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने कैरियर अभिमुखीकरण (Career Orientation) कार्यक्रम का
प्रारम्भ किया था - उ० - 1994-1995 में

18. उच्च शिक्षा में व्यावसायीकरण (Vocational Education) शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है - उ० - उच्च
परास्नातक कक्षाओं में प्रवेशार्थी छात्रों की बाढ़ को रोकना.

19. स्कोवी (SCOVE) का तात्पर्य है
Standing Committee of Vocational Education.

~~२१. U.G.C की~~ २०. SCOVE की स्थापना करने वाला अभिकरण है – उ०- U.G.C.

२१. U.G.C की ~~SO~~ SCOVE के लक्ष्य हैं – उ०- ऐसी संस्थाओं की पहचान करना। जिनमें व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को लागू किया जा सकता है, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों हेतु शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करना, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए अध्ययन सामग्री तैयार करना.

२२. विश्व बैंक से अनुदान प्राप्त करने के लिए U.G.C. ने एक प्रारूप प्रस्ताव भेजा है (२००१-०२ में) किस कार्ययोजना के लिए – उ०- उच्च शिक्षा स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को संचालित करने के लिए.

२३. राधाकृष्णन आयोग के अनुसार उच्च शिक्षा का लक्ष्य है– उ०- भारत में ऐसी विभूतियों को तैयार करना जो राजनीति, प्रशासन, व्यवसाय, उद्योग एवं वाणिज्य आदि क्षेत्रों में स्वस्थ प्रतिनिधित्व कर सकें, लोकतांत्रिक आदर्शों की सुरक्षा करना तथा व्यक्ति एवं समाज में सामञ्जस्य स्थापित करना, प्राचीन ~~मान्यताओं~~ मर्यादाओं का सम्मान करते हुए नवीन मान्यताओं, विचारधाराओं के बौद्धिक अग्रदूतों को तैयार करना.

२४. कोठारी आयोग के अनुसार उच्च शिक्षा के ~~का~~ लक्ष्य हैं – उ०- सत्य के परिप्रेक्ष्य में नवीन ज्ञान की खोज करना, प्राचीन ज्ञान एवं विश्वास की नई आवश्यकताओं एवं खोजों के संदर्भ में व्याख्या करना, जीवन के सभी क्षेत्रों में सही नेतृत्व प्रदान करना, सामाजिक न्याय एवं समानता को प्रोत्साहित करना.

कोठारी आयोग के अनुसार उच्च शिक्षा का एक लक्ष्य नहीं है – उ०- व्यक्तियों में जन्मजात गुणों की खोज करना तथा प्रशिक्षण द्वारा उनका विकास करना.

२५. संगठनात्मक ढाँचे के आधार पर विश्वविद्यालयों को वर्गीकृत किया जा सकता है – उ०- आवासीय एवं संबद्धक विश्वविद्यालय में.

२६. दिल्ली विश्वविद्यालय है – उ०- केन्द्र शासित विश्वविद्यालय.

२७. सन् २००४-०५ में किस राज्यस्तरीय विश्वविद्यालय को केन्द्रशासित विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया गया है – उ० इलाहाबाद विश्वविद्यालय,

२८. २००५ तक भारत में कुल केन्द्रिय विश्वविद्यालयों की संख्या है – उ०- 18.

२९. आवासीय विश्वविद्यालय ऐसे विश्वविद्यालय हैं जिनमें होते हैं – उ०- शिक्षा प्रदान करने हेतु केन्द्रिय परिसर,

३०. स्वात्मक शिक्षण महाविद्यालय कहा जाता है - उ०- आवासीय विश्वविद्यालय को

३१. जब किसी विश्वविद्यालय का अपना पृथक शिक्षण परिसर हो तथा साथ-ही-साथ उससे जुड़े अनेक स्वायत्त महाविद्यालय एवं संघटक महाविद्यालय हों तो ऐसी संरचना वाले विश्वविद्यालय को कहेंगे - उ० - संघात्मक विश्वविद्यालय

३२. सम्बद्ध विश्वविद्यालय से तात्पर्य है - उ०- ऐसे विश्वविद्यालय जिनके केन्द्रिय परिसर में शिक्षण कार्य नहीं होता है बल्कि यह कार्य सम्बद्ध महाविद्यालयों में सम्पन्न होता है, ऐसे विश्वविद्यालय जिनके द्वारा पाठ्यक्रम लागू किए जाते हैं तथा परीक्षाओं का संचालन किया जाता है, ऐसे विश्वविद्यालय जो उपाधि वितरण का कार्य करते हैं.

३३. यदि कोई विश्वविद्यालय अपने केन्द्रिय परिसर में कुछ पाठ्यक्रमों का शिक्षण संचालित करता है तथा अन्य पाठ्यक्रमों को सम्बद्ध महाविद्यालय द्वारा संचालित किया जाता है तो ऐसे विश्वविद्यालय को कहना उचित होगा - उ०- आवासीय- सम्बद्धक विश्वविद्यालय.

३४. शिक्षण प्रक्रिया के आधार पर विश्वविद्यालयों के प्रकार हैं - उ० - पारम्परिक एवं मुक्त विश्वविद्यालय.

३५. मुक्तविश्वविद्यालयों को गैर-पारम्परिक विश्वविद्यालय माना जाता है, क्योंकि - उ०- उनमें शिक्षण अधिगम हेतु नवीन विधाओं का प्रयोग किया जाता है, उनमें प्रवेश, पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन के नवीन नियमों का पालन किया जाता है, आधुनिक सम्प्रेषण ~~तकनी~~ तकनीकियों का उपयोग करते हैं.

३६. Complex of colleges कहा जाता है - उ०- संघात्मक विश्वविद्यालय को
Federal Univ.

३७. प्रायः संघात्मक प्रकार के विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रमों की व्यवस्था इस प्रकार की जाती है - उ० - विश्वविद्यालय परिसर में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम तथा संघटक महाविद्यालयों में स्नातक स्तरीय पाठ्यक्रम.

३८. इण्डियन एजूकेशन कमीशन (1964-66) ने एक तथ्य को छोड़कर विश्वविद्यालय के प्रशासन एवं नियंत्रण नीतियों की विशद व्याख्या की है. उक्त तथ्य है - उ० - रजिस्ट्रार (कुलसचिव) की भूमिका.

३९. सन् 1969 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने नियुक्ति की थी - विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय की शासन पद्धति.

९. शिक्षा एवं जनसंख्या में संबंध है – उ० – शिक्षित पुरुषों एवं महिलाओं में शिक्षा के प्रसार के फलस्वरूप 'लघु परिवार' का प्रचलन हुआ है, शिक्षा का प्रसार जनसंख्या की वृद्धि दर को नियन्त्रित कर सकता है, शिक्षा का प्रसार जनसंख्या में गुणात्मक परिवर्तन ला सकता है.

१०. शैक्षिक प्रक्रिया का विचार किसके संदर्भ में किया जाता है – उ० – राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक व्यवस्थाओं के संदर्भ में

११. सामाजिक परिवर्तन का कारण है – उ० – राजनैतिक शक्तितंत्र, अर्थव्यवस्था की प्रगति, शिक्षा एवं कानून व्यवस्था.

१२. यदि आप उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रौद्योगिकी को लाने की बात करते हैं जिससे कि इसमें अपेक्षित वृद्धि एवम उत्पादकता को बढ़ावा दिया जा सके तो यह जिम्मेवारी किसे सौंपी जानी चाहिए – उ० – अर्थशास्त्रियों को.

१३. किसे शिक्षा नीति के साथ पर्याप्त तालमेल बनाये रखना चाहिए – उ० – मानव शक्ति नियोजन.

१४. यदि आप रुचि रखते हैं कि परिवार नियोजन के माध्यम से जनसंख्या नियंत्रण की जानी चाहिए, तो आपको क्या उपाय करना चाहिए – उ० – स्त्रियों की साक्षरता दर में पुरुषों की अपेक्षा अधिक बढ़ोत्तरी करना.

१५. किस क्षेत्र में श्रवण विकलांग बालक सामान्य बालकों की तुलना में निम्नता का प्रदर्शन करते हैं – उ० – भाषा-संबंधी विकास में.

१६. प्रजातांत्रिक व्यवस्था में वैयक्तिक विभेदों को प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है, क्योंकि – उ० – यह एकसमान लक्ष्य के लिए विभिन्न प्रकार के लाभकारी योगदान देते हैं.

१७. ~~चित्~~ चिकित्सीय विज्ञानों के द्वारा कौन सी खोज सम्भव प्रतीत नहीं होती है – उ० – संक्रामक रोगों जैसे – हैजा, मलेरिया का पूर्ण निदान करना.

१८. नर्सिंग प्रोफेशन में किस वर्ग की सबसे अधिक स्त्री जनसंख्या कार्यरत है – उ० – एंग्लो-इंडियन्स एवं क्रिश्चियन.

१९. यदि आप विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा में उन्नति चाहते हैं तो किसकी (उपायकी) संस्तुति करना पसंद करेंगे? - उ०- जिन छात्रों को उच्चशिक्षा में प्रवेश लेना हो उन्हें कठिन बौद्धिक प्रवेश परीक्षा से गुजारा जाना चाहिए, उच्च शिक्षा को औद्योगिक एवं व्यावसायिक विकास से अनिवार्य रूप से जोड़ देना चाहिए.

२०. शिक्षित महिलाओं की दृष्टि से उनके लिए सर्वोत्कृष्ट व्यवसाय है - उ०- शिक्षण व्यवसाय, चिकित्सा व्यवसाय, नर्सिंग व्यवसाय

२१. आजकल प्रचलित शैक्षिक व्यवस्था के संदर्भ में आपका विचार है - उ०- यह सामाजिक स्तरीकरण के अनुरूप शिक्षा प्रदान करती है

२२. भारत के संदर्भ में ऐसा माना जाता है कि यहाँ पर शिक्षा क्रांति विलम्ब से हुई है. इसका प्रमुख ~~कारक~~ कारण है - उ०- सरकार के द्वारा शिक्षा पर किए जाने वाले व्यय को उपभोग किये जाने वाला व्यय माना जाता रहा है

२३. यदि आप यह चाहते हैं कि भारत में टेक्नीकल शिक्षा पर होने वाले व्यय को घटा दिया जाय तो आपके विचार में कौन सा उपाय अधिक उपयुक्त होगा - उ०- टेक्नीकल शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाओं को अपने छात्रों को अपरेन्टस ट्रेनिंग चयनित कम्पनियों में प्रदान की जानी चाहिए.

२४. स्वातंत्र्योत्तर पब्लिक एवं प्राइवेट सेक्टर में होने वाली अप्रत्याशित वृद्धि के परिणामस्वरूप उनमें उपलब्ध रोजगार के अवसरों की प्राप्ति के संदर्भ में कौनसा दृष्टिकोण अधिक सत्य है - उ०- इन दोनों क्षेत्रों में उन अभ्यर्थियों का अधिकाधिक चयन हुआ है, जोकि शिक्षित उच्च वर्ग से ताल्लुक रखते थे.

२५. उच्चशिक्षित वर्ग के संदर्भ में आपका मत है कि - उ० - यह वर्ग अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता के प्रति जागृत है.

२६. स्वतंत्रता काल में शोषित वर्ग ~~का~~ का उत्थान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रमुख लक्ष्य था, क्योंकि - उ०- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता महात्मा गांधी की इस भावना का आदर करते थे, राष्ट्रीय आन्दोलन के नेताओं में उन्नत सामाजिक जागरूकता थी, यह डॉ० भीमराव अम्बेडकर एवं महात्मा फूले जैसे नेताओं के प्रभाव का परिणाम था।

२७. आज भी उच्चशिक्षा में प्रमुख है -उ०- अंग्रेजी का।
२८. प्रायः समय-समय पर विवाद उठता रहा है कि कुछ इतिहासविद् ऐतिहासिक तथ्यों को विकृत रूप में प्रस्तुत करते हैं, इसके संदर्भ में आपका विचार है कि - ~~प्राय~~ उ०- प्रायः समाज के लोग इतिहासविदों द्वारा प्रस्तुत तथ्यों में विश्वास व्यक्त करते हैं, इतिहासविदों से सत्य तथ्यों की अपेक्षा करना व्यर्थ है।
२९. नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शिक्षा में अनेक परिवर्तनों की पहल की है, इनमें निहित है -उ०- वर्तमान शिक्षा व्यवस्था राष्ट्रीय लक्ष्यों एवम् आवश्यकताओं के अनुकूल नहीं है, वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता है।
३०. बाल-अपराध की समस्या का प्रमुख रूप से संबंध है - उ० - अनेक जटिल समस्याओं से।
३१. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्राथमिक विद्यालय स्तर की शिक्षा के संदर्भ में सटीक वाक्य प्रतीत होता है -उ०- यह बाल-केन्द्रित शिक्षा प्रणाली से संबंधित है।
३२. आज आपके विचार में स्कूल कार्मिकों को किन उत्तरदायित्वों का निर्वाह करना अनिवार्य है -उ०- वे समाज की अपेक्षाओं एवं बालकों की आवश्यकताओं के मध्य सामंजस्य स्थापित करें।
३३. आधुनिक विद्यालयों का आधारभूत लक्ष्य है -उ०- विद्यार्थियों के व्यवहारों का उचित विकास करना।
३४. भाषा को माना जाता है -उ०- अनुभवों को वर्गीकृत करने वाली नामावली।
३५. उद्योग एवं वाणिज्य दोनों के लक्ष्य हैं -उ०- सम्पत्ति एवं लाभ
३६. आपके विचार में बालिका शिक्षा के संदर्भ में ग्रामीण परिवेश में कौनसी समस्या प्रायः प्रकट होती है? -उ०- माता-पिता अपनी पुत्रियों को लड़कों के साथ पढ़ाने के पक्ष में नहीं होते हैं, माता-पिता की निर्धनता बालिकाओं को विद्यालय से वंचित करती है, माता-पिता दोनों ही बालिकाओं को घर में तथा कृषि कार्यों में व्यस्त रखते हैं,

३८. शिक्षा जगत् में "हड़ताल" करने संबंधी आपका मत क्या है?
-उ०- शिक्षा जगत में "हड़ताल" को मान्यता दी जानी चाहिए, क्योंकि यह अन्य कर्मचारियों की भाँति शिक्षकों को भी अपनी माँगों की पूर्ति में सहायक होती है.

३९. प्रजातांत्रिक राज्य में राजनैतिक दलों पर प्रतिबन्ध नहीं लगने चाहिए, क्योंकि -उ०- प्रजातंत्र - राजनैतिक दलों के बिना जीवित नहीं रह सकता है, यदि राजनैतिक दलों को ~~प्रतिबन्ध~~ प्रतिबन्धित कर दिया जाये, तो लोगों को संविधान के द्वारा प्रदत्त स्वतंत्रता का अधिकार लुप्त हो जायगा, केवल राजनैतिक दल ही जनता के अभिमत को संगठित एवं प्रोत्साहित कर सकते हैं.

४०. यदि आप प्रभावी ढंग से श्रवण करने में रुचि रखते हैं तो उन विचारों को भी ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए, जो आपको पसंद नहीं होते हैं." उक्त कथन से आप किस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे -उ०- प्रभावी ढंग से श्रवण करने के लिए उसमें व्यक्तिगत रुचियों एवम् अरुचियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है.

४१. प्रचलित शिक्षा व्यवस्था में सर्वप्राथमिक दोष क्या है -उ०- दीर्घकालिक, दीर्घ लिखित, परीक्षा पद्धति.

४२. एक शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत आपके द्वारा स्वीकृत तात्कालिक आवश्यकता है -उ०- छात्रों में स्वरोजगार की शक्ति का विकास करना.

४३. भारत में शिक्षा-नीति के निर्धारण में प्रमुख समस्या है - उ० - ऐसे व्यक्ति जो उच्च टेक्नीकल शिक्षा प्राप्त हैं उनके लिए भारत में पर्याप्त रोजगार उपलब्ध नहीं हैं.

४४. कौन सा ऐसा प्रभाव है जिसने द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणाम-स्वरूप शिक्षा के ट्रेंड को परिवर्तित किया है? - उ० - शिक्षा-नीति में स्कूलों ~~स्कूलों~~ को अप्रत्याशित महत्व, हाईस्कूल एवं ~~व~~ एवम् उच्चशिक्षा संबंधी कौशलों की वृद्धि (छात्रों में)

४५. "प्रायः ऐसा देखने में आया है कि सरकार ने ज्यों-ज्यों पंचायती राजतंत्र को मजबूत किया है वह उतना ही ग्रामीण शिक्षा व्यवस्था

के प्रति उपेक्षापूर्ण होता गया है" आपके विचार में इसका कारण है -उ०- इन लोगों के पास शिक्षा व्यवस्था के लिए प्रबंधकीय एवम आर्थिक अधिकार नहीं होते हैं,

४६. ग्रामीण क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा की जिम्मेदारी है -उ०- ग्राम पंचायत एवं जिला समिति पर.

४७. मुक्त शिक्षण संस्थाएँ औपचारिक शिक्षण संस्थाओं से पृथक होती हैं -उ०- मूल्यांकन विधियों के संदर्भ में, क्योंकि औपचारिक शिक्षण संस्थाओं में यह अधिक जटिल होता है

४८. प्लेटो के शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्त में निहित है -उ०- प्लेटो का विज्ञान कारीगरों (workers) के लिए है, किन्तु उसका डायालेक-टिक (Dialectic) शासकों के लिए है,

४९. प्रकृति के अनुरूप शिक्षा से तात्पर्य है -उ०- प्रकृति की ओर लौटना, प्राकृतिक नियमों एवम उनकी अनुप्रयुक्ति को शिक्षा प्रक्रिया के संदर्भ में अध्ययन करना, मानव विकास की प्रकृति के अनुरूप लोगों को शिक्षित करना,

५०. "समान शैक्षिक अवसरों" से तात्पर्य है -उ०- बालकों के लिए शिक्षा में समान अवसरों की व्यवस्था,

५१. प्रारम्भिक मानव की शिक्षा का संबंध था -उ०- व्यावसायिक, धार्मिक तथा नैतिक पक्ष से.

५२. ऐसा माना जाता है कि भारत में हम लोग उच्च शिक्षा की द्रुत मात्रात्मक वृद्धि की समस्या को झेल रहे हैं, इसके लिए आपकी दृष्टि में सर्वोत्तम साधन हो सकता है -उ०- सम्पूर्ण जीवन तक पढ़ने के लिए वैकल्पिक व्यवस्था की जाय

५३. यदि उच्च शैक्षिक कक्षाओं में धार्मिक पाठ्यक्रम की व्यवस्था की जाए, तो इस संदर्भ में आपकी संस्तुति होगी -उ०- यह केवल इस सीमा तक हो जिससे मानवीय मूल्यों को पोषित किया जाए.

५४. एक विश्वविद्यालय ~~स~~ तथा मानद विश्वविद्यालय (Deemed University) में अन्तर यह है कि पूर्ववर्ती -उ०- केवल सम्बद्धित कॉलेज की देखभाल करती है.

५५. कौन सी एजेन्सी उच्च शिक्षा के लिए अनुदान प्रदान करती है? - उ० - म्युनिसिपल कॉरपोरेशन एवं जिला परिषद्

~~५६. औपचारिक शिक्षा है - उ०-~~

५६. प्रायः ऐसा देखा गया है कि महिलाएँ ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य करने से कतराती हैं. आपकी दृष्टि में इसका कारण है - प्रायः ग्रामीण जनता महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार करती है प्रायः ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत महिलाएँ ग्रामीण लोगों के द्वारा अश्लील व्यवहार की शिकार हो जाती हैं, प्रायः ग्रामीण जनता को नौकरी पेशा महिलाओं के प्रति घृणा भाव होता है.

५८. स्त्री शिक्षा के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है - उ० - लड़कियों के लिए स्कूलों की उचित सुविधा उपलब्ध नहीं है, विद्यालय में नामांकित होने वाली अधिकांश लड़कियाँ बीच में ही पढ़ाई छोड़ देती हैं.

५९. मान लीजिए आपको अपने ही एक साथी द्वारा शिक्षक यूनियन की सदस्यता स्वीकारने के लिए दबाव बनाया जाता है. आप इस परिस्थिति में क्या निर्णय लेना पसंद करेंगे? - उ० - आप समझते हैं कि आपके द्वारा सदस्यता स्वीकारने से शिक्षण समुदाय की शक्ति में संवर्द्धन होगा, अतः सदस्यता ले लेंगे.

६०. आपके मतानुसार ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों की सेकण्डरी शिक्षा को जारी रखने के लिए कौन सी कठिनाई से गुजरना होता है? - उ० - माता-पिता की कठिनाई यह होती है कि वे अपनी लड़कियों को सह-शिक्षा वाले विद्यालयों में पढ़ाना पसन्द नहीं करते हैं, माता-पिता की निर्धनता, लड़कियों का घर के कामों में हाथ बँटाना तथा कृषि कार्यों में मदद करना.

६१. अनौपचारिक शिक्षा एवं औपचारिक शिक्षा में एक भेद है कि - उ० - पूर्ववर्ती संगठित नहीं होती है, किन्तु दूसरी होती है.

६१. 'समान शैक्षिक अवसर' इस कथन से तात्पर्य है - उ० - सभी को समान अवसर प्रदान करना। जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार शिक्षा प्राप्त कर सकें

६२. शैक्षिक परामर्श का एक लक्ष्य नहीं है - उ० - कुछ चयनित छात्रों को विभिन्न विषयों से संबंधित द्रुत प्रशिक्षण प्रदान करना,

शैक्षिक परामर्श का लक्ष्य है - उ० - छात्रों को उनकी शारीरिक, मानसिक एवं शैक्षिक समस्याओं के समाधान में मदद करना, छात्रों को शिक्षा संबंधी नवीन चैनलों की जानकारी जुटाने में मदद करना, छात्रों की उनके समायोजन में मदद करना.

६४. यदि आप अपने छात्रों में स्थायी परिवर्तन लाना चाहते हैं, इसके लिए क्या उपाय करेंगे? - उ० - अधिगम अनुभव अनुभवों के माध्यम से.

६५. 'शिक्षा एक निवेश के रूप में' इसका लक्ष्य है - उ० - उत्पादकता में वृद्धि करना.

६६. 'पाठ्यक्रम नियोजन' उपवर्ग है - उ० - शैक्षिक क्रियाओं का.

६७. शिक्षा के प्रति राष्ट्र की एप्रोच होनी चाहिए - उ० - मानव संसाधनों को विकासोन्मुखी बनाने की.

६८. शैक्षिक परामर्शक बाल अपराधी बालकों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन करने के लिए क्या उपाय अपना सकते हैं - उ० - ऐसे बालकों में बुनियादी व्यावहारिक परिवर्तनों के लिए उनसे मित्रवत व्यवहार किया जाए.

६९. उच्च शिक्षा में संलग्न छात्रों के लिए सर्वोत्कृष्ट प्रेरणा होगी - उ० - व्यक्तिगत उपलब्धियाँ.

७०. छात्रों को प्रभावी ढंग से सूचनाएँ सम्प्रेषित करने का एक माध्यम है - उ० - श्यामपट्ट प्रस्तुतीकरण से.

७१. उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षण की प्रभावी युक्ति है - उ० - छात्रों को सूचनाओं के स्रोतों तक ले जाना.

७२. यदि एक छात्र के क्रियाकलाप में आपको कोई मौलिक एवं नवीन क्रिया दृष्टिगोचर हो रही है, तो आप उसे किस पद के द्वारा व्यक्त करेंगे - उ० - बुद्धि.

३३. प्रसार शिक्षा (Extension Education) को समझा जा सकता है — उ० – ग्रामीण क्षेत्रों में ज्ञान ज्योति का प्रसार करना।
३४. प्रायः कुछ लोग शैक्षिक क्षेत्र में रोजगार इसलिए ग्रहण करते हैं, क्योंकि – उ० – अन्य क्षेत्रों में रोजगार के न्यून अवसर हैं।

<——x——x——x——>

१. दूरवर्ती शिक्षा की प्रमुख अवधारणा है – उ० – दूरवर्ती शिक्षा में रेडियो एवं दूरदर्शन की सक्रिय भूमिका है, दूरवर्ती शिक्षा साधारण शिक्षक को भी उत्तम रूप में प्रस्तुत करती है, दूरवर्ती शिक्षा स्वगति से अधिगम पर आधारित है।
२. दूरवर्ती शिक्षा की विशेषताएँ हैं – उ० – साक्षरता का द्रुतगति से प्रचार-प्रसार, सम्प्रेषण माध्यमों का अधिकाधिक उपयोग, मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना में सहयोग, दूरवर्ती शिक्षा की विशेषता नहीं है – उ० – औपचारिक शिक्षा पद्धति।
३. दूरवर्ती शिक्षा है – उ० – अपारम्परिक शिक्षा प्रक्रिया, गुणात्मक अनुदेशन प्रक्रिया का विस्तार, प्रणाली विश्लेषण उपागम का अनुगमन।
४. दिल्ली विश्वविद्यालय में पत्राचार विभाग (Correspondence Department) की स्थापना की गई थी – उ० – 1962 में।
५. भारत में सर्वप्रथम स्वतंत्र रूप से मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना का श्रेय जाता है उ० आन्ध्र सरकार को।
६. इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना किस वर्ष में हुई थी? उ० – सन् 1985 में।
७. राज्य सरकार के द्वारा स्थापित उत्तरप्रदेश का मुक्त महाविद्यालय है – उ० – राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन मुक्त महाविद्यालय।
८. दूरवर्ती शिक्षा में जो छात्र सहायक सेवाएँ सम्मिलित की गई हैं, वह है – उ० – सम्पर्क सेवा, पुस्तकालय एवम् अध्ययन केन्द्र सेवा, सॉफ्टवेयर सेवा एवं हार्डवेयर सेवा।
९. दूरवर्ती शिक्षा की विशिष्ट सेवाएँ हैं – उ० – गृहकार्य संबंधी सेवा, पाठ्य सामग्री संबंधी सेवा, परामर्श संबंधी सेवा।

दूरवर्ती शिक्षा की एक विशिष्ट सेवा के अन्तर्गत सम्मिलित नहीं की जाती है - उ० - व्यक्तिगत सम्पर्क सेवा.

१०. देश में सर्वप्रथम मुक्त विद्यालय (open school) की स्थापना कब और कहाँ की गई थी? - उ० - 1979 में केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली

११. राष्ट्रिय मुक्त विद्यालय में पढ़ाया जाता है - उ० - फाउन्डेशन कोर्स, माध्यमिक कोर्स, सीनियर सेकेण्डरी कोर्स.

१२. मुक्त व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम चलाया जाता है - उ० - राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय से.

१३. मुक्त विश्वविद्यालय से लाभान्वित होनेवाला एक बड़ा जनसंख्या वर्ग है - उ० - प्रौढ़ व्यक्ति जिन्होंने मध्य में उच्च शिक्षा छोड़ दी हो, कार्यरत व्यक्ति जो अपने क्षेत्रों के ज्ञान का संवर्द्धन करने में रूचि रखते हों, प्रौढ़ महिलाएँ जो किसी कारणवश उच्च शिक्षा से वंचित रह गई हों.

१४. मुक्त विश्वविद्यालय की प्रमुख विशेषता है - उ० - परिसर नियमितीकरण से मुक्त, शिक्षण विधियों में वैविध्यता, वैचारिक मुक्ति.

१५. मुक्त विश्वविद्यालय का लक्ष्य है - उ - अधिकाधिक लोगों को उच्च व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा प्रदान करना, दूरस्थ प्रदेशों में रहनेवाले लोगों को उनके द्वार पर उच्च शिक्षा प्रदान करना, विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों को व्यक्तियों एवं संस्थाओं के माध्यम से राष्ट्र विकास से जोड़ना.

१६. मुक्त विश्वविद्यालय की अनुदेशन विधियाँ हैं - उ० - स्वतः अनुदेशन सामग्री द्वारा सिखाना, सैटेलाइट द्वारा सिखाना, कम्प्यूटर के माध्यम से सिखाना.

मुक्त विश्वविद्यालय की अनुदेशन विधि नहीं है - उ - आमने-सामने बैठकर सिखाना.

१७. दूरवर्ती शिक्षा से अभिप्राय है - उ० - जो दूरस्थ स्थान से प्रदान की जाए, जो दूरदर्शन के माध्यम से प्रदान की जाए, जो दूरवर्ती स्थानों तक पहुँचायी जाए.

१७. दूरवर्ती शिक्षा के लाभ हैं - उ- प्रत्येक व्यक्ति को लिए, प्रत्येक स्थान पर बिना किसी भेदभाव के, निरक्षरता उन्मूलन का कारगर उपाय, महिलाओं के लिए सुरक्षित शिक्षा.

१८. SITE से तात्पर्य है - Sattellite Instructional Television Experiment

२०.१९. दूरवर्ती शिक्षा में अभिनव तथ्य हैं - उ- औपचारिक प्रवेश एवं पंजीकरण की समस्या से मुक्त, संवैधानिक निर्देशों का अनुपालन (सभी को शिक्षा के समान अधिकार), अवकाशकाल का उत्तम प्रयोग.

२१. साईट (SITE Programme) चलाया गया था - उ- ISRO तथा Indian Television Authority के पारस्परिक सहयोग के द्वारा.

२२. SITE के द्वारा वयस्क व्यक्तियों के लिए चलाए जाने वाला प्रोग्राम था - उ- राष्ट्रीय समाचार एवं घटनाएँ, विभिन्न विषयों की उन्नत विधियों का अनुदेशन, शिक्षात्मक मनोरंजन.

२३. SITE द्वारा प्रसारित होने वाले प्रोग्राम थे - उ- पूर्व प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए, प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के लिए, सामान्य जनता के लिए जागरूकता कार्यक्रम,

२४. INSAT-3A छोड़ा गया था - उ- 10 अप्रैल 2003 को.

२५. सर्वप्रथम विश्वविद्यालयों में शैक्षिक कार्यक्रमों के प्रसारण का श्रेय जाता है उ→ INSAT 1-B को

२६. EDUSAT प्रक्षेपित किया गया था - उ- 20 सितम्बर 2004 को.

२७. इन्टरनेट है - उ- कम्प्यूटरों के मध्य स्थापित विशाल सम्पर्कसूत्र.

२८. WWW से अभिप्राय है - उ- ~~Wor~~ World Wide Web.

२९. भारतवर्ष में इन्टरनेट सेवा का प्रारम्भ हुआ - उ- जनवरी 1997 से

३०. इन्टरनेट (Internet) एवं इन्ट्रानेट (Intranet) में प्रमुख भेद है - स्थान (दायरे) का.

३१. BITNET नेटवर्क का प्रयोग किया जाता है - उ- शिक्षा एवं शोध में.

३२. HTML है - Higher Text Markup Language.

३३. I.S.D.N. के द्वारा सम्प्रेषित किए जाते हैं - उ- ध्वनि संकेत, दृश्य, लिखित सूचनाएँ.

३४. Modem का प्रयोग किया जाता है - उ- Computer को Internet से जोड़ने के लिए.

जिसकी
३५. ऐसा software ~~किसी~~ मदद से Internet में उपस्थित सूचनाओं की खोज की जाती है - उ० - Search Engine.

३६. U.R.L. है - उ० - Universal Resource Locater

३७. EARN का पूरा नाम है = उ० - European Academic and Research Network

३८. Internet Surfing से तात्पर्य है - उ० - Internet पर अपेक्षित सूचना को खोजने से.

३९. E-Mail है ~~ई~~ - उ० - Electronic Mail.

४०. E-Mail से संभव है - उ० - सूचनाएँ सम्प्रेषित करना, सूचनाएँ दूसरे ~~कम्प्यूटर~~ Computer Monitor पर पढ़ना, सूचनाओं को मुद्रित करना एवं सुरक्षित रखना।

४१. E-Mail का मुख्यता से प्रयोग किया जाता रहा है - उ० - शिक्षा संस्थानों में, व्यापारिक प्रतिष्ठानों में, सैन्य संगठनों में.

४२. E-Mail ने व्यापारिक जगत में सूचना क्रांति कर दी है क्योंकि यह - उ० - सुविधाजनक है, कम ~~खर्चीली~~ खर्चीली पद्धति है, अत्यधिक गति से कार्य करती है.

४३. भारत की प्रमुख E-Mail Companies हैं, - ~~उ०~~ उ० - Vipro V.T. Mail, Global Mail, ~~X~~ X E-Mail (एक्स ई Mail).

४४. शिक्षा सेवा के सम्पूर्ण स्वरूप को साकार किया गया है - उ० - Edusat-2004 में,

४५. Edusat का संभावित जीवनकाल है - उ० सात वर्ष.

१. मूल्य शब्द की उत्पत्ति मानी जाती है - उ० - लैटिन शब्द वैलेरी (Valere) से.

२. मूल्य को संस्कृत भाषा में कहते हैं - उ० - इष्ट,

३. भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ बताए गए हैं - उ० - चार,

४. पुरुषार्थ चतुष्टय है - उ० - धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष.

५. भारतीय सांस्कृतिक लौकिक मूल्य हैं - उ० - धर्म, अर्थ एवं काम,

६. प्लेटो की मूल्य संबंधी धारणा है - उ० - मूल्य बुद्धिग्राह्य अर्थ है न कि इन्द्रिय ग्राह्य पदार्थ, मूल्य और सत का मौलिक अभेद है, मूल्य निरपेक्ष ~~■~~ नित्य स्वरूप सत विषय है.

७. मूल्यों की प्रकृति संबंधी प्रचलित दृष्टिकोण है - उ० - आत्मपरक, वस्तुपरक एवं सापेक्षिक दृष्टिकोण.

८. "किसी शिक्षा के उद्देश्यों का वर्णन करना ही उसके शैक्षिक मूल्यों का वर्णन करना है" यह कथन है - उ० - ब्रूबेकर का.

९. वस्तुपरक मूल्य उपस्थित रहते हैं - उ० - वस्तुओं में.

१०. कौनसा मूल्य जीवन-संबंधी मूल्य के अन्तर्गत नहीं आता है - उ० - शाश्वत मूल्य.

११. समय-संदर्भित मूल्य हैं (वर्गीकरण के आधार पर) - उ० - शाश्वत एवम अस्थायी मूल्य.

१२. शैक्षिक मूल्य होते हैं - उ० - तात्कालिक, विवेकपूर्ण इच्छाओं के अधीन, सौन्दर्यात्मक.

१३. मूल्यपरक शिक्षा के आवश्यक तत्व हैं - उ० - विश्वबन्धुत्व की भावना, सह अस्तित्व, धर्म निरपेक्षता.

१४. मूल्य शिक्षा प्रदान करने की विधि है - उ० - उपदेशात्मक विधि, कहानी कथन विधि, मनोवैज्ञानिक अभिनय विधि.

१५. कौन सी एक विधि बालकों में मूल्यों का विकास नहीं कर सकती है - उ० - व्याख्यान विधि.

१६. मूल्य शिक्षा के सन्दर्भ में कोठारी आयोग के विचार हैं - उ० - विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के द्वारा दिए गए मूल्यपरक शिक्षा संबंधी सभी संस्तुतियों को क्रियान्वित करना, निजी प्रबंधतन्त्रों के द्वारा संचालित संस्थाओं में भी मूल्योन्मुखी शिक्षा को लागू करना, शिक्षण संस्थाओं की समय-सारणी में मूल्योन्मुखी शिक्षा के लिए एक घण्टे का प्रावधान करना.

१७. शिक्षकों के संदर्भ में कोठारी आयोग ने मूल्यपरक शिक्षा को लागू करने के लिए सुझाव प्रस्तुत किया है - उ० - विद्यार्थियों के समक्ष शिक्षकों का व्यवहार आदर्शपूर्ण हो तथा विषय का शिक्षण करते समय वे उक्त मान्यताओं एवम आदर्शों को विकसित करने का प्रयास करें.

१८. राष्ट्रीय शिक्षा नीति १९८६ के अनुसार मूल्य परक शिक्षा का एक गुण होना चाहिए - उ० - सार्वजनीन एवं शाश्वत मूल्यों का क्रियान्वयन भारत के बृहद् सांस्कृतिक-सामाजिक परिवेश के अनुरूप होना चाहिए.

उक्त शैक्षिक मूल्यों से धार्मिक अंधविश्वास, कट्टरता, असहिष्णुता, हिंसा एवं भाग्यवाद जैसे निषेधात्मक विचारों का ह्रास होना चाहिए।

9(i). शैक्षिक मूल्य के एक गुण हैं – क – उपयोगिता, सोद्देश्यता, उपयुक्तता।

शैक्षिक मूल्य का एक गुण नहीं है – ख – विश्वसनीयता।

१. शिक्षण की प्रक्रिया को विभाजित किया जा सकता है (राजनैतिक पृष्ठभूमि के आधार पर) — उ० — तीन वर्गों में।

२. निरंकुश शासनतंत्र के अनुकूल शिक्षण की परिभाषा के प्रवर्तक हैं — उ० — एच० सी० मॉरीसन

३. एन० एल० गेज का ~~निम्नलिखित में से~~ संबंध है —
उ० — प्रजातांत्रिक प्रणाली संबंधी शिक्षण की परिभाषाओं से।

४. एक राष्ट्र की राजनैतिक प्रणाली वहाँ के शिक्षण को प्रायः प्रभावित करती है, क्योंकि —
उ० — राजनीति ही राष्ट्र के शिक्षा मूल्यों का निरूपण करती है।

५. जॉन ब्रूबेकर प्रभावित हैं —
उ० — हस्तक्षेप रहित शिक्षण प्रणाली से।

६. 'शिक्षण एक पारस्परिक प्रभाव है जिसका उद्देश्य है अन्य व्यक्तियों के व्यवहारों में अपेक्षित परिवर्तन लाना' यह भाव व्यक्त किया है
उ० — गेज ने।

७. शिक्षण को आप मानते हैं —
उ० →
१. एक परिपक्व एवं दूसरे अपरिपक्व व्यक्ति के मध्य संबंध।
२. एक अन्तः प्रक्रिया मात्र
३. सीखने में सहायक प्रक्रिया.

८. शिक्षण संभव नहीं है —
उ०
१. दो परिपक्व व्यक्तियों के मध्य जो किसी एक समान विषय में पारंगत हैं।
२. विद्यालय के बाहर
३. बिना पाठ्यक्रम के.

९. 'दूसरों को दिशा निर्देशन करने (सीखने के लिए) तथा अन्य प्रकार से निर्देशित करने की प्रक्रिया ही शिक्षण है' यह कथनांश है —
उ० — रियान्स का।

१०. शिक्षण प्रक्रिया ~~निम्नलिखित में से~~ किस एक प्रक्रिया की ओर संकेत नहीं करती है
उ० — सामाजिक प्रक्रिया

११. शिक्षण है
उ० →
१ आमने-सामने चलने वाली प्रक्रिया.
२. सोद्देश्य प्रक्रिया
३. उपचारात्मक प्रक्रिया

१२. शिक्षण हो सकता है उ. 30 →
१. मापन योग्य
२. बालोपचार योग्य
३. बाल सुधारात्मक

१३. शिक्षण एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है, क्योंकि इसमें सम्मिलित हैं
उ० – छात्र – शिक्षक – पाठ्यक्रम।

१४. शिक्षण में सम्प्रेषण होता है –
१. शिक्षक एवं बालक के मध्य.

१५. शिक्षण को सुधारात्मक प्रक्रिया माना गया है, क्योंकि –
उ० – इसमें शिक्षक बाल व्यवहार में अपेक्षित सुधार करते हैं।

१६. सतत् प्रक्रिया का अर्थ है –
उ० – हर एवं स्थान, हर क्षण चलनेवाली.

१७. एक उत्तम शिक्षण की विशेषता है –
उ० –
१. अपेक्षित सूचनाओं का आदान-प्रदान करना.
२. प्रजातांत्रिक आदर्शों के प्रति अनुकूलन.
३. निर्देशात्मकता.

१८. उत्तम शिक्षण का एक गुण नहीं है –
उ० – १. यह संवेगात्मक अस्थिरता का सृजन करता है।

१९. भारतीय परिस्थितियों में उत्तम शिक्षण की आधार शिला है
उ० –
१. प्रजातांत्रिक मूल्य
छात्र योग्यताओं का संवर्द्धन.
शिक्षक एक मित्र एवं दार्शनिक,

२०. शिक्षण उद्देश्यों के आधार पर शिक्षण को वर्गीकृत किया जाता है
उ० – ज्ञानात्मक – भावात्मक एवं क्रियात्मक शिक्षण में।

२१. ज्ञानात्मक उद्देश्यों का संबंध है – उ० – मानसिक योग्यताओं से।

२२. मानसिक योग्यताओं में समाहित है – उ० – स्मृति, तर्क, चिन्तन, सृजनात्मकता.

२३. शिक्षा में 3H से तात्पर्य है – हैड, हार्ट एवं हैण्ड.

२४. प्रशंसनीय गुणों एवं मूल्यों को रखा जाता है – भावात्मक शिक्षण क्षेत्र में।

२५. मनोगत्यात्मक का अर्थ है - उ०- मानसिक योग्यताएँ ही वास्तविक व्यवहार में अभिव्यक्त होती है।

२६. माँसपेशीय क्रियाएँ एवं समस्त अभिव्यक्त मानव व्यवहार को संग्रहीत करते हैं - उ०- मनोगत्यात्मक शिक्षण के अन्तर्गत.

२७. ~~शिक्षक~~ शिक्षक प्रायः शिक्षण प्रदान करते हैं - त्रिस्तर पर.

२८. निम्नलिखित चित्र में शिक्षण के तीन स्तर प्रदर्शित हैं -
(१) चिन्तनस्तर (२) अवबोध स्तर (३) स्मृतिस्तर इनमें उचित क्रम है
(३) - (२) - (१).

२९. स्मृति स्तर के शिक्षण का संभावित संबंध छात्र के किस व्यवहार से होगा। उ०- पुनर्वहन एवं पहचान से.

३०. एक उत्तम शिक्षक को न्यूनतम रूप से किस स्तर तक शिक्षण करना चाहिए - उ० ~~अवबोध स्तर~~ उ०- अवबोध स्तर.

३१. शिक्षक को उत्तम शिक्षण को चिन्तनस्तर तक पहुँचाना चाहिए उ०- प्रतिभाशाली कक्षा में.

३२. स्मृति में सम्मिलित नहीं है - उ०- मूल्यांकन.

३३. स्मृति स्तर में मास्टरी होने के बाद बालक का अधिगम स्वतः ही परिवर्तित हो जायगा उ०- अवबोध में।

३४. शिक्षण एक सातत्यांक है - जिसमें स्मृतिस्तर से लेकर चिन्तन स्तर तक की दूरी तय की जाती है, यहाँ इन दोनों के मध्य के अनिवार्य पड़ाव को कहते हैं - उ०- अवबोध स्तर.

३५. शिक्षण को स्वरूप के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है - उ०- वर्णनात्मक - निदानात्मक - उपचारात्मक स्वरूपों में।

३६. उपचारात्मक निदानात्मक शिक्षण की आवश्यकता अनुभव की

जाती है, जबकि - उ. छात्र किसी विशिष्ट तथ्य को समझने में असमर्थ हो।

३७. उपचारात्मक शिक्षण प्रदान किया जाता है -
उ. - विषयगत दुर्बलता के शिकार एवं पिछड़े बालकों को,

३८. उपचारात्मक शिक्षण की पहचान की जाती है -
१. बालकों को उपलब्धि परीक्षण देकर,
२. बालक की कक्षा में निरन्तर जाँच करके,
३. बालक के कक्षा में अनुत्तीर्ण होने पर।

३९. निदानात्मक शिक्षण का आधारभूत उद्देश्य है -
उ. - बालकों की विषयसंबंधी दुर्बलताओं का पता लगाना।

४०. शैक्षिक क्रियाओं के संदर्भ में शिक्षण के अर्थ है -
उ. - प्रस्तुतीकरण - प्रदर्शन - क्रिया।

४१. शैक्षिक व्यवस्था के सन्दर्भ में शिक्षण को वर्गीकृत किया जा सकता है - उ. - औपचारिक - अनौपचारिक एवं निरौपचारिक शिक्षण में।

४२. औपचारिक शिक्षण की महत्वपूर्ण संस्था है - उ. - विद्यालय

४३. औपचारिक शिक्षण की पहचान है - उ. - निश्चित स्थान, निश्चित लक्ष्य, निश्चित समय-सारिणी।

४४. अनौपचारिक शिक्षण की आवश्यकता अनुभव की जाती है -
उ. - १. निरक्षरों को साक्षर बनाने के लिए
२. नवसाक्षरों को साक्षर (स्थायी) बनाने के लिए
३. विद्यालय के ड्रापआउट्स के लिए

४५. शिक्षण प्रक्रिया में स्वतंत्र चर है - शिक्षक।

४६. छात्र को परतंत्र चर (Dependent Variable) माना जाता है, क्योंकि यह
उ० - अध्यापक के शिक्षण के अनुरूप अधिगम करता है।

४७. शिक्षा के चरों का प्रमुख कार्य है - उ० - निदानात्मक, उपचारात्मक, मूल्यांकन

४८. निदानात्मक कार्य में सम्मिलित है - उ० - १. छात्रों का पूर्व व्यवहार
२. पाठ्यवस्तु के घटकों का विश्लेषण, ~~३. पाठ~~

४९. निदानात्मक शिक्षण के अन्तर्गत शिक्षक का प्रमुख दायित्व है
- उ० - १. छात्रों के पूर्व व्यवहार का निर्धारण करना.
२. छात्रों की वैयक्तिक व्यवहार संबंधी सूचनाओं को संकलित करना.
३. कार्य - विश्लेषण करना.

५०. शिक्षण सम्बन्धी उपचारात्मक कार्य का संबंध है -
उ० - शिक्षण-कौशल को व्यवहारपरक बनाना.
१.
२. पृष्ठ-पोषण प्रविधियों की व्यवस्था करना.

५१. शिक्षण सातत्यों की परिकल्पना की जाती है -
उ० - १. अनुबंधन से लेकर विश्वास प्रतिपादक तक.
२. व्यावहारिक परिवर्तन से लेकर विश्वास परिवर्तन तक.
३. प्रारूपिक सामान्य अधिगम से लेकर सम्पूर्ण आस्था में परिवर्तन तक.

५२. शिक्षण सातत्यों के प्रमुख पदों ~~है~~ की कड़ी है -
प्रशिक्षण - अनुदेशन - प्रतिपादन - अनुबन्धन.

५३ अनुबंधन द्वारा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है -
उ० - कुत्ते एवं बिल्ली के, मानव शिशु के, वयस्क व्यक्ति के।

५४. अनुबन्धन के प्रणेता हैं - उ० - पावलोव.

५५. प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है - उ० - मांसपेशियों को, निम्नश्रेणी के जीवों को, दस्तकारों को.

५६. अनुदेशन प्रदान किया जाता है उ० - कक्षा के अन्दर.

५७. प्रतिपादन (Indoctrination) किया जाता है -
उ० - 'ब्रेन वाशिंग' के द्वारा, आमूल-चूल विचारों में परिवर्तन करके, अमूल विश्वासों में परिवर्तन करके।

~~५८. निम्नलिखित में से कौन सा उद्देश्य 'अनुदेशन' से संबंधित है-~~
~~उ० अनुदेशन~~
~~५८~~

५८. 'अनुदेशन' से संबंधित उद्देश्य है - उ० ज्ञान का प्रसारण एवं ज्ञान का विकास करना.

५९. प्रतिपाद (Indoctrination) पद में प्रदान किया जाने वाला ज्ञान का रूप होगा - उ० - अमूर्त.

६०. उच्चस्तरीय क्रियात्मक ज्ञान (High level action oriented knowledg का संबंध है उ० प्रशिक्षण से.

६१. नियम एवं सिद्धान्तों का अधिगम कराया जाता है -
उ० - प्रतिपादन के द्वारा.

६२. अवबोध स्तर पर यदि आप शिक्षण करना चाहते हैं, तो
उ० अनुदेशन शिक्षण सातत्यक का चयन करेंगे.

६३. बालकों में ~~सकारात्मक~~ सकारात्मक अभिवृत्तियों के विकास के लिए ~~उचित~~ है - उ० - प्रतिपादन स्तरीय शिक्षण.

६४. संकेत अधिगम का संबंध है अनुबन्धन से तो बहुविभेदीकरण
सम्प्रत्ययों के अधिगम का संबंध होना चाहिए - ~~क- अनुदेश~~
उ- अनुदेशन से.

६५. औपचारिक शिक्षा का प्रभावी घटक है - उ- अनुदेशन.

६६. प्रशिक्षण द्वारा किया जा सकता है - कौशलों का विकास.

६७. शिक्षण की अवस्था है - उ- पूर्व तत्परता अवस्था, अन्तः प्रक्रिया
अवस्था, शिक्षण तत्परता के पश्चात की अवस्था.

६८. शिक्षण की पूर्व तत्परता अवस्था में सम्पन्न होने वाली
प्रमुख प्रक्रिया है - उ- १. शिक्षण के उद्देश्यों को निर्धारित करना.
२. पाठ्यवस्तु के संबंध में निर्णय लेना.
३. प्रस्तुतीकरण के लिए क्रमबद्ध व्यवस्था करना.

६९. शिक्षण की पूर्व तत्परता से संबंधित प्रक्रिया नहीं है उ- छात्रों से मूल्यांकन संबंधी प्रश्न पूछना.

७०. शिक्षण की अन्तः प्रक्रिया अवस्था से संबंधित है - उ- कक्षा के आकार-
प्रकार की अनुभूति से, छात्रों का निदान से, क्रिया एवं प्रतिक्रिया से.

७१. शिक्षण की अन्तःप्रक्रिया अवस्था के अन्तर्गत क्रिया- प्रक्रिया पद का
संबंध है - उ- उद्दीपकों के चयन से, उद्दीपकों के प्रस्तुतीकरण से,
युक्तियों के प्रयोग से.

७२. शिक्षण की तत्परता के बाद की अवस्था का वास्तविक रूप में
संबंध है - उ- मूल्यांकन से.

७३. शिक्षण क्रियाओं का महत्व है - उ- अध्यापकों के द्वारा कक्षा में
प्रवेश करने से पूर्व तथा बाद में की जानेवाली सम्पूर्ण

क्रियाओं का ज्ञान, अध्यापकों द्वारा अपने शिक्षण कौशलों में अपेक्षित सुधार, अध्यापकों के द्वारा। शिक्षण-चरों का उत्तम ज्ञान.

७४. गैने (Gagne) के अनुसार सीखने के प्रमुख प्रकारों की संख्या है - उ० - ५.

७५. 'अनुबन्धन' - गैने के प्रमुख सीखने का एक प्रकार नहीं है।

७६. शिक्षण-अधिगम के मध्य संबंध है -
उ० - शिक्षण, अधिगम - दोनों के योग से प्रभावी शिक्षा का विकास संभव है, शिक्षण सिद्धान्तों के विकास में अधिगम सिद्धान्तों का अत्यधिक महत्त्व है, शिक्षण सोद्देश्य प्रक्रिया है - अपेक्षित अधिगम तक पहुंचाती है।

७७. 'गेज' महोदय के अनुसार शिक्षण की मनोवैज्ञानिक शक्तियाँ हैं - उ० - व्यवहार-परिवर्तन करने वाली शक्तियाँ, अधिगम परिस्थितियाँ संबंधी शक्तियाँ, ज्ञानात्मक शक्तियाँ.

७८. रॉबर्ट गैने के अनुसार अधिगम परिस्थितियों के प्रमुख प्रकार हैं - उ० - ८.

७९. रॉबर्ट गैने के अनुसार अधिगम परिस्थितियों के स्तरीकरण में दोनों छोरों पर रहनेवाली अवस्थाएँ हैं
उ० - उद्दीपन - अनुक्रिया एवं समस्यात्मक अधिगम,

८०. गैने की अधिगम परिस्थितियों के स्तरीकरण में जटिल अवस्थाएँ हैं उ० - प्रत्यय - अधिनियम एवं समस्यात्मक अधिगम.

८१. गैने ने अधिगम परिस्थितियों को कितने वर्गों में विभक्त किया है? उ० - ८ वर्गों में.

८२. गैने की अधिगम परिस्थितियों में सबसे सरलतम प्रारूप है
उ० - संकेत अधिगम.

८३. संकेत अधिगम (Sign learning) का संबंध है -
उ० - पैवलोवियन अनुबन्धन से.

८४. उद्दीपन - अनुक्रिया का संबंध है - उ० - ऑपरैन्ट कान्डीशनिङ्ग से,

८५. अभिक्रमित अनुदेशन (प्रोग्राम्ड इन्सट्रक्शन) का जन्म माना जाता है - उ० - ऑपरैन्ट कान्डीशनिङ्ग से.

८६. शृंखला अधिगम के प्रकार हैं - उ० - शाब्दिक एवम् अशाब्दिक अधिगम.

८७. शाब्दिक सहसंबंध अधिगम को प्रचुरता से प्रयोग किया जाता है - उ० भाषा शिक्षण में,

८८. बहुभेदीय अधिगम का तुलनात्मक संबंध है - उ० अवबोधस्तर से

८९. बहुभेदीय अधिगम में मास्टरी हो जाने के बाद की अधिगम परिस्थिति होगी - उ० - प्रत्यय - अधिगम.

९०. अधिनियम अधिगम की उत्पत्ति को परिणाम माना गया है - उ० - दो या दो से अधिक शृंखलाओं का.

९१. समस्या - समाधान अधिगम का प्रत्यक्ष संबंध है -
उ० - चिन्तन स्तर से.

९२. थॉर्नडाइक ने शिक्षण सिद्धान्तों के आधार के रूप में कितने घटकों का ब्योरा प्रस्तुत किया है उ० - ७ घटकों का.

६३. क्रोनबैक के शिक्षण सिद्धान्त का क्रमबद्ध रूप है।-
उ० - परिस्थिति, छात्रों की विशेषताएँ, लक्ष्य, अर्थापन, क्रिया, परिणाम, भय के प्रति प्रतिक्रिया.

६४. परिस्थिति (situation) में क्रोनबैक ने सम्मिलित किया है
उ०- पाठ्यवस्तु - शिक्षक को, छात्र - अधिगम सामग्री को, अधिगम उद्देश्यों को।

६५. क्रोनबैक के अनुसार अर्थापन (Interpretation) से अभिप्राय है - उ० - छात्रों के अधिगम लक्ष्य.

६६. शिक्षण की उत्तर क्रिया अवस्था (Post teaching stage) का संबंध है - उ० १. शिक्षण द्वारा व्यवहारिक परिवर्तन के वास्तविक रूप की परिभाषा करना। २. मूल्यांकन की उपयुक्त प्रविधियों का चयन करना, ३. प्राप्त परिणामों से शिक्षण नीतियों में परिवर्तन करना.

~~६७. शिक्षण (क्रियाएँ) क्रियाओं का महत्व है, उ० १. शिक्षकों को दिशा निर्देश (देती) मिलता है कि उन्हें कक्षा में प्रवेश करने से पूर्व, कक्षा में रहकर तथा उसके पश्चात क्या करना चाहिए, २.~~

६७. शिक्षण क्रियाओं के महत्त्व के विषय में कहा गया है -
उ० - शिक्षकों को दिशा निर्देश मिलता है कि उन्हें कक्षा में प्रवेश करने से पूर्व, कक्षा में रहकर तथा उसके पश्चात क्या करना चाहिए, २. सीखने - सीखाने की क्रियाओं में घनिष्ठ संबंध स्थापित करता है, ३. स्मृति स्तर से चिन्तन स्तर तक के शिक्षण को प्रभावी बनाती है।

६८. अनुदेशन एवं शिक्षण में परस्पर एक समानता है
उ०- दोनों में ही पृष्ठ-पोषण, पुनर्बलन, पाठ्य विश्लेषण, पर बल दिया जाता है।

६९. शिक्षण में अनुदेशन निहित है ✓

Teaching: Nature objectives, ~~char~~ characteristics and Basic ~~Requirements~~. Requirements.

१००. शिक्षण स्तरों के कार्य है - १. निदानात्मक, उपचारात्मक, मूल्यांकन.

१०१. ~~उपर्युक्त प्रश्न~~ में निदानात्मक कार्य का संबंध है -
उ० - शिक्षण समस्या का विश्लेषण करना, छात्रों के पूर्व ज्ञान का निर्धारण करना, कार्य विश्लेषण एवं व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ज्ञान.

१०२. उपचारात्मक कार्य है - १. शिक्षण कौशल, नीति एवं युक्ति का ~~चय~~ चयन, पृष्ठ पोषण की प्रविधियों की व्यवस्था, निदान के अनुसार उपचार.

१०३. "अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन लाना ही अधिगम है", यह कथन है - गेट्स (Gates) महोदय का.

---

१. बालक का सामाजिक विकास प्राथमिक रूप से निर्भर करता है - वातावरण पर.

२. वंशानुक्रम का समानता का नियम प्रतिपादित करता है -
उ० - ~~जैसे~~ जैसे माता-पिता वैसे ही उनके ~~बच्चे~~ बच्चे.

३. प्रायः जब बालक अपने माता पिता की विपरीत विशेषताओं के अनुरूप होते हैं, तो उन पर वंशानुक्रम का सिद्धान्त लागू होगा - प्रत्यागमन का.

४. बालकों की ~~व्यव~~ व्यावहारिक मूलप्रवृत्तियों का उद्गम स्थल माना जाता है - उ० - वंशानुक्रम को.

५. बालक का शारीरिक संगठन प्रभावित होता है वंश से

६. ~~वि~~ ~~ए~~ एथलेटिक में सर्वाधिक शारीरिक क्षमताएँ होगी.

~~७. किस मनोवैज्ञानिक ने मणा~~

७. कार्ल पियर्सन ने (मनोवैज्ञानिकने) गणनात्मक अध्ययन द्वारा इस तथ्य की पुष्टि की है कि माता-पिता की लम्बाई रंग और स्वास्थ्य का प्रभाव बालकों पर पड़ता है।

८. विभिन्न मनुष्य प्रजातियों में पाया जाने वाला विभेद परिणाम है -उ०- वंशानुक्रम एवं पर्यावरण का.

९. बालक की मूल प्रवृत्तियों को जन्मजात प्रवृत्तियाँ कहा जाता है

१०. मूलप्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर होती है मानव एवं पशु-पक्षियों में।

११. मूलप्रवृत्तियों की एक विशेषता है प्रयोजन-मूलकता।

१२. 'पलायन' मूलप्रवृत्ति की अभिव्यक्ति होती है भय के अनुभव करने पर.

१३. मूलप्रवृत्तियों के अध्ययन के आधार पर व्याख्या की जा सकती है बालकों के रुझानों की.

१४. बालक को सामाजिक व्यवहार की शिक्षा दी जा सकती है विद्यालय में सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के द्वारा.

१५. अन्य व्यक्तियों के अनुभवों की अनुभूति करके व्यवहार करने की प्रक्रिया का नाम है सहानुभूति।

१६. बालकों में अधिगम सम्बन्धी योग्यताओं का विकास होता है रचनात्मक क्रियाकलापों के माध्यम से.

१७. बालक में अधिगम उन्नयन की ~~प्रथम~~ प्राथमिक अवस्था है अनुकरण.

१८. खेल एक ऐसी प्रक्रिया जिसका उपयोग किया जाता है बालकों को सिखाने में।

१९. जब बालक खेल खेल में अपने बड़ों का अनुकरण (Role model) करता है, तो इसे कहेंगे झूठमूठ के खेल.

२०. खेलों के द्वारा बालकों में विकास सम्भव है - उ० - पारस्परिक सम्मान देने की कला का, सहयोग, सामञ्जस्य की भावना का, सामाजिक सद्गुणों का,

२१. खेल आधारीय शिक्षण विधियों का जनक है - उ० - फ्रॉबेल.

२२. बालकों के सीखने पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है - प्रेरणा का,

२३. बाल्यावस्था की प्रमुख विशेषताएं हैं - १. यथार्थवादी दृष्टिकोण, २. अपेक्षाकृत स्थिर विकास प्रक्रिया. ३. अधिगम की तीव्रता.

२४. किशोरावस्था के बालकों की अधिकांश समस्याएं जन्म लेती हैं - उ० - क्रोध के फलस्वरूप.

२५. कक्षा के अन्दर बालकों के अधिगम पर सर्वाधिक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है - उ० - कक्षा का मनोवैज्ञानिक वातावरण.

२६. प्रायः मानसिक थकान की स्थिति में एक व्यक्ति अनुभव कर सकता है. - उ० - मानसिक दुर्बलता, अवधान निष्क्रियता, स्वभावगत बेचैनी.

२७. अवधान को केन्द्रित करने के उपाय हैं - उ० - विषय में परिवर्तन, रिलैक्सेशन, शांत वातावरण शांतवातावरण संयोजन.

२८. शैशवावस्था की अवधि मानी गयी है - जन्म से ६ वर्ष तक.

२९. बालविकास को प्रभावित करनेवाला प्रमुख कारक है - वंशानुक्रम.

३०. बालकों में स्वाधिकार की भावना का विकास होता है ६-१२ वर्षतक.

३१. टीन स्टेज (Teen Age) का काल है - 13 से 19 वर्षतक.

३२. भारतीय परिवेश में किशोरावस्था का समय माना गया है - उ० - १२ - १८ वर्षतक.

~~३३. निम्नलिखित में~~
३३. कौन सी अवस्था में आवेग की तीव्रतम स्थिति उत्पन्न हो सकती है? उ० - किशोरवय में।

३४. बाल्यावस्था में बालक प्रायः सम्पर्क स्थापित करता है - उ० - समलैंगिक बालकों से.

३५. कौन सा काल 'संघर्षकाल' कहा जाता है? - उ० - किशोरावस्था.

३६. "किशोरावस्था वह अवस्था है, जिसमें ~~बालक परिपक्व~~ बालक परिपक्वता की ओर अग्रसर होता है।" - यह ~~कथान~~ कथन है जेरसील्ड का.

३७. "किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तनाव, तूफान एवं विरोध की अवस्था है।" यह कथन है - स्टेनली हॉल का.

~~३८. किशोर को निर्देशन~~

३८. किशोर को निर्देशन के द्वारा निम्न प्रकार की सहायता प्रदान की जा सकती है उ०- उचित निर्णय लेने की, संवेग नियंत्रण की, मनोदैहिक ~~के~~ परिवर्तनों के प्रति सूझ की.

३९. किशोर को निर्देशन प्रदान करने का प्रयोजन को ~~स्वं को~~ के अनुसार है - ~~स्वास्थ्य~~ उ०- स्वास्थ्य संबंधी, यौन संबंधी, मानसिक अस्थिरता संबंधी.

४०. अभिप्रेरणा (मोटीवेशन) शब्द की व्युत्पत्ति हुई है - उ०- मोटम से (MOTUM से)

४१. एक अधिगमकर्त्ता को प्रेरित करने की उपयुक्त स्थिति (उपाय) है- उ०- प्रशंसा.

४२. आंतरिक प्रेरणा होती है - उ० - सकारात्मक.

४३. एक अधिगमकर्ता को उचित प्रेरणा प्राप्त हो सकती है - उ०- उत्तम विद्यालय परिवेश से.

४४. किस मनोवैज्ञानिक का कथन है कि "अभिप्रेरणा छात्र में रुचि उत्पन्न करने की कला है"? उ०- थॉमसन

४५. प्रेरणा के मूलप्रवृत्ति सिद्धान्त के प्रतिपादक हैं- मैक्डूगल

४६. मानव व्यवहार का विकास निर्भर करता है - उ०- आनुवंशिकता पर, पर्यावरण पर.

४७. बालक के शारीरिक लक्षण किन शारीरिक लक्षणों से सुनिश्चित होते है - उ० - आनुवांशिक प्रबल लक्षण.

४८. यदि माता एवं पिता का रंग काला है; तो उनके होने वाले

बालक के रंग की सम्भावना होगी - उ० - दोनों में से कैसा भी हो सकता है।

४९.

५०. आप मुझे एक बालक दें, मैं उसे अपनी इच्छानुसार कैसा भी बना सकता हूँ, यह कथन जोर देता है - उ- पर्यावरण की महत्ता पर

५१. "आनुवंशिकता एवं पर्यावरण जैसे शब्द किसी मूर्त वस्तु की ओर संकेत नहीं करते, बल्कि अमूर्तता की ओर संकेत करते हैं" यह कथन है - उ० - डेविस का

५२. किस मनोवैज्ञानिक संरचना का निश्चयीकरण केवल आनुवंशिकता के आधार पर होता है? उ० - लिंग।

५३. कौनसा प्रत्यय पर्यावरण से प्रभावित होता है? - उ० - बुद्धि, शारीरिक वृद्धि, स्वभाव.

५४. किस प्रसिद्ध परिवार का अध्ययन आनुवंशिकता का प्रभाव जानने के लिए किया गया था? उ० - कालिकॉक.

५५. आनुवंशिकता के प्रभाव के विरुद्ध कौन से तर्क प्रस्तुत किए जाते हैं? उ० - आनुवंशिकता का प्रभाव सीमित है, बुद्धि पर पर्यावरण का प्रभाव, शारीरिक लक्षणों पर पर्यावरण का प्रभाव.

५६. बालक का बौद्धिक विकास ८०% आनुवंशिकता एवं २०% पर्यावरण का परिणाम है, यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया है उ० यर्क्स ने,

५७. किस मनोवैज्ञानिक ने कहा है कि आनुवंशिकता हमें विकसित करने के लिए क्षमताएँ देती हैं, परन्तु इनका विकास पर्यावरण से ही संभव है? उ० - लैण्डिस एवं लैण्डिस.

५८. मानव समाज की केन्द्रिय सामाजिक संस्था कहा जाता है उ० - परिवार को.

५९. पारिवारिक सामाजिकरण का सर्वोत्तम साधन है - परम्पराएँ.

६०. बालक के भाषा विकास में आधारभूत योगदान देनेवाली संस्था है - परिवार.

६१. विद्यालय परिवेश में बालक के सामाजिक विकास के सन्दर्भ में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक है - उ०- पाठ्यक्रम.

६२. एक एकाकी बालक को देखकर आप क्या अनुमान लगायेंगे
उ०- ~~उसका~~ उसका उचित सामाजीकरण नहीं हो पाया है।

६३. बालकों पर सामाजिक स्तरीकरण के प्रभाव को उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं -
उ०- माता-पिता.

६४. बालक के सामाजीकरण का समानुपाती संबंध है -
उ० - सामाजिक विकास से.

६५. सामाजिक विकास में सबसे महत्वपूर्ण कारक कौनसा है?
उ०- सामाजिक प्रतिबद्धता.

६६. स्कूल में प्रवेश पूर्व बालकों के खेलों को वर्गीकृत किया जाता है -
उ० - आत्मकेन्द्रित खेलों में.

६७. सामाजीकरण प्रक्रिया के प्रारम्भ होने की अवस्था है -
शैशवावस्था.

६८. बालक के सामाजिक व्यवहार में निश्चयीकरण उत्पन्न होता है - उ०- तीन से छः वर्ष तक.

६९. बालकों में लैंगिक सम्बोध का विकास होता है - उ०- बाल्यावस्था में

७०. सामाजीकरण के संदर्भ में व्यवहारवादियों का दृष्टिकोण है
उ०- पर्यावरणवादी.

७१. सामाजीकरण में बालक द्वारा प्रत्यक्षीकृत किया जाता है -उ०- स्वयं को.

७२. बालक-बालिकाओं के पृथक् सामाजीकरण का कारण है :-उ०- उनकी पृथक् पृथक् भूमिका प्रत्याशाएँ.

७३. एक सीनियर क्लास जूनियर क्लास के लिए किस रूप में कार्य करता है;
उ०- मॉडल.

७४. मान लीजिए एक बालक अपने भाई-बहिनों एवं अन्य परिवार पारिवारिकजनों के साथ लड़ाई-झगड़ा करता है, उसकी इस बुरी आदत से छुटकारा दिलाने के लिए आप क्या करेंगे ?
उ०- आप उससे अकेले में बातें करेंगे तथा इस समस्या के कारण जान करेंगे.

७५. यदि बालक घर में आनेवाले व्यक्तियों को देखकर उग्र व्यवहार करता है. वैसे सामान्य दिखता है, तो ऐसे बालक के लिए माता-पिता को आप क्या सलाह देंगे ?
उ०- आप अपने बालक की बुनियादी समस्या को जानने का प्रयास करें तथा उसका निराकरण करें.

७६. प्रायः विद्यालय में ऐसे बालक प्रवेश लेते हैं जो अपने सहपाठियों की किताब-कापियाँ आदि सामान चोरी कर लेते हैं, ऐसे बालकों की चोरी की आदतों को छुड़ाने के लिए आप क्या उपाय करेंगे ?
उ०- आप जैसे ही चोरी पकड़ेंगे, गहन पूछताछ करेंगे उसके माता-पिता को बतायेंगे तथा निगाह रखेंगे,

७७. बालकों के व्यवहार परिवर्तन की सर्वाधिक प्रभावी पद्धति है-

उ०- पुरस्कृत करना,

७८. यदि एक बालक किसी भी खाने-पीने या खेल की वस्तु को देखकर जिद कर बैठता है तथा माता-पिता को सार्वजनिक स्थलों पर शर्मिंदगी उठानी पड़ती है, तो उसे कैसे ठीक करेंगे?
उ०- बालक को उस समय सन्तुष्ट करके, किन्तु बाद में भलीभाँति बताने की कोशिश करेंगे.

७९. आप एक ढीठ बालक के व्यवहार को संशोधित करने के लिए क्या करेंगे? सामान्य स्थिति में उसे प्यार से समझायेंगे ताकि वह आगे से ऐसा व्यवहार प्रदर्शन न कर सके।

८०. बालकों में स्वस्थ अध्ययन आदतों के विकास के लिए आप क्या करेंगे?
उ०- आप उन्हें संयमबद्ध ढंग से पढ़ने के लिए बचपन से ही प्रेरित करेंगे,

८१. बालकों में 'सच्चाई' के गुण का विकास सम्भव है-
उ०- स्वयं कठोरता से सच्चाई का पालन करने से.

८२. आपके यहाँ विद्यालय में मध्याह्न भोजनावकाश की व्यवस्था की जाती है, जिससे-
उ०- छात्र अपनी थकान को दूर कर सकें तथा शिक्षक भी 'रिलेक्स' हो सके,

८३. अभिप्रेरणा के संबंध में कौनसा तथ्य असत्य है-
उ०- अभिप्रेरित क्रियाएँ लक्ष्य की ओर अनिर्दिष्ट होती हैं,

८४. अभिप्रेरणा चक्र से संबंधित तत्व है उ०- आवश्यकता, प्रणोद, प्रोत्साहन.

८५. चालन (ड्राइव) एवम् आवश्यकता (नीड) का पारस्परिक संबंध है - उ० - एक - दूसरे के पूरक हैं।

८६. अभिप्रेरणा चक्र के संघटकों का क्रम है उ० - आवश्यकता -> चालन -> प्रोत्साहन.

८७. जन्मजात अभिप्रेरकों का दूसरा नाम है उ० - शारीरिक अभिप्रेरक एवं जैविक अभिप्रेरक.

८८. मैक्डूगल के अनुसार मूलप्रवृत्तियाँ है - उ० - जन्मजात एवम् अर्जित.

८९. मैक्डूगल ने मूलप्रवृत्तियों के तीन प्रधान तत्व बताए हैं एक पक्ष जो उसमें सम्मिलित नहीं है - उ० - प्रेरकशक्ति पक्ष,

९०. बालक में कुण्ठा जन्म लेती है - उ० - अभिप्रेरकों के संघर्ष के फलस्वरूप.

९१. किस मनोवैज्ञानिक ने यह तथ्य स्पष्ट किया कि बालक में जन्म के समय कुछ विशेष संवेग उपस्थित रहते हैं? उ० - वाटसन.

९२. आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने कौन से कारकों को संवेगात्मक विकास के लिए उत्तरदायी माना है? उ० - परिपक्वता एवम् अधिगम.

९३. परिपक्वता एवं संवेग विकास में समानुपाती संबंध पाया जाता है, इस मत के प्रवर्तक हैं - उ० - ब्रिजेज.

९४. प्रसिद्ध महिला मनोवैज्ञानिक ब्रिजेज ने किस आयुवर्ग के बालकों पर संवेग संबंधी अध्ययन किये थे? उ० - जन्म से २४ माह तक.

९५. जैसे-जैसे बालक बड़ा होता है उसके संवेगों का विकास निर्भर करता है - उ० - अधिगम योग्यता पर.

९६. स्थायीभाव (Sentiments) का प्रकार है - साधारण स्थायीभाव, जटिल स्थायीभाव, मूर्त-अमूर्त स्थायीभाव.

स्थायीभाव का प्रकार नहीं है - मूल्यपरक स्थायीभाव.

९७. वैलेन्टाइन (valentine) के अनुसार स्थायीभाव है -
उ० - व्यक्ति की संवेगात्मक प्रवृत्तियों एवं भावनाओं का संगठित स्वरूप.

९८. शिशु के प्रति माता का स्थायीभाव होगा - प्रेम.

९९. स्थायीभाव की विशेषताएँ है - व. अर्जित होते है, मानसिक रचनाएँ है, मूर्त होते हैं
'स्थायीभाव' की विशेषता नहीं है उ०- स्व अनुभूत होते हैं

१००. खेलविधियाँ हैं - बिनेटका योजना, बेसिक शिक्षा, डाल्टन योजना.
खेलविधि नहीं है - वाट्सन योजना.

---

१. कौन सा एक ऐसा तत्व है जिसका प्रभावी शिक्षण में न्यूनाधिक सहयोग पाया जाता है? उ० - शिक्षण अनुभूति.

२. शिक्षण नियोजन का संबंध है उ०- कार्य विश्लेषण से, शिक्षण उद्देश्यों की पहचान से, अध्ययन उद्देश्यों को व्यावहारिक रूपमें लिखने से.
शिक्षण नियोजन का संबंध नहीं है उ०- कक्षा में छात्रों को उचित स्थान पर बैठाने से.

३. कार्य विश्लेषण (Task Analysis) का संबंध है उ० - छात्र की अधिगम सम्बन्धी क्रियाओं से, छात्र के अधिगम संबंधी प्रत्याशित व्यवहार से, छात्र अधिगम संबंधी परिस्थितियों से, अपेक्षित निष्पत्ति सम्बन्धी मानदण्ड के निर्धारण से.

४. कार्य विश्लेषण से लाभ है — उ०- शिक्षक को शिक्षण कार्य से सुपरिचित कराना, शिक्षक को छात्र अधिगम संबंधी परिस्थितियों का सुपरिचित ज्ञान होना

५. शिक्षक के द्वारा पाठ्यवस्तु विश्लेषण के समय ध्यान दिया जाता है
उ० - प्रकरण पर, उपप्रकरण पर, पाठ्यतत्वों पर,

६. कौशल विश्लेषण का संबंध है - उ० - प्रश्न पूछने से, प्रयोग करने से, व्याख्या एवं निदान से,
कौशल विश्लेषण का संबंध नहीं है उ० - शिक्षणकाल में किए गए कार्यों से.

७. ज्ञानात्मक क्षेत्र के शिक्षण उद्देश्य हैं — ज्ञान - बोध — प्रयोग।
तथा - विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन.

८. ज्ञानात्मक उद्देश्यों के वर्गीकरण के प्रणेता का नाम है —
उ० - ब्लूम, बी. एस.

९. क्रियात्मक उद्देश्यों के दोनों सिरों के छोरों पर पाये जाने वाले उद्देश्य हैं — उद्दीपन — आदत निर्माण.

१०. भावात्मक उद्देश्यों के वर्गीकरण के लिए जिम्मेदार व्यक्ति का नाम है - उ० - क्रैथवोल.

११. ज्ञानात्मक उद्देश्यों का संबंध है - उ० - मस्तिष्क से.

१२. सर्वाधिक जटिल वर्गीकरण जो वर्तमान में भी मान्य है, वह है - उ० - भावात्मक क्षेत्र का.

१३. पाठ्यवस्तु विश्लेषण के प्रमुख स्रोत है उ० - प्रामाणिक पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन करना, छात्रों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखना, छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं पर ध्यान देना.

१४. पाठ्यवस्तु के तत्वों की विशेषता है - उ० - छात्रों के द्वारा तत्व के ज्ञान होने की स्थिति में अपनी सकारात्मक अनुक्रिया जाहिर करना, छात्रों के व्यवहार के आधार पर विभिन्न तत्वों की स्थिति का अनुमान लगाना, छात्रों की तत्वों के प्रति की जानेवाली अनुक्रिया के आधार पर व्यवहार परिवर्तन का पता लगाना

पाठ्यवस्तु के तत्वों की विशेषता नहीं है - उ० - छात्रों से तत्वों में पारंगत होने की स्थिति की प्रत्याशा करना.

१५. कौन सी व्यवस्था पाठ्य तत्वों की व्यवस्था के प्रतिकूल है - उ० - ज्ञान से अंधकार की ओर.

१६. शैक्षिक उद्देश्यों एवं शिक्षण उद्देश्यों में विभेद किया जाता है - उ० - स्वरूप/प्रकृति के आधार पर, अंश एवं सम्पूर्णता के आधार पर, कालिक आधार पर.

१७. 'राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास' यह उद्देश्य कहा जाएगा
उ० - शैक्षिक उद्देश्य.

१८. शैक्षिक उद्देश्यों का स्रोत होता है - उ० - मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त,

१९. ज्ञानात्मक उद्देश्यों का संबंध होता है - उ० - सूचनाओं, ज्ञान तथा तथ्यों की जानकारी से.

२०. ब्लूम की प्रसिद्ध पुस्तक का नाम है - उ० - टैक्सोनोमी ऑफ एजुकेशनल ~~ऑब्जेक्टिव~~ ऑब्जेक्टिव्स ऑफ कॉग्निटिव डोमेन.

२१. 'ज्ञान' (Knowledge) के अन्तर्गत आनेवाले प्राय अधिगम बिन्दु है - उ० - विशिष्ट वस्तुओं का ज्ञान कराना.

२२. बोध (Comprehension) के अन्तर्गत आनेवाले अधिगम बिन्दु है

उ०- अनुवाद करना, व्याख्या/विवेचना करना, अतिकरण करना (Interpolate)

२३. 'विश्लेषण' का संबंध है - उ०- तत्वों के विश्लेषण से, दो तत्वों के परस्पर सिद्धान्त का पता लगाने से, किसी सिद्धान्त का विश्लेषण करने से.

२४. ज्ञानात्मक उद्देश्य की सर्वोपरी श्रेणी मूल्यांकन (Evaluation) है, जिसका अर्थ है - उ० - स्वनिर्णय (बाह्य एवम् आन्तरिक निर्णय से)

२५. 'ज्ञान + बोध' दोनों के योग से बनता है - उ० अनुप्रयोग (Application)

२६. 'तथ्यात्मक सूचनाएँ' संकलित करने में मदद करते हैं' - उ०- ज्ञान एवम् अवबोध.

२७. सम्प्रत्यय संबोध (concept formation) की आधारशिला है - उ० - अवबोध एवं विश्लेषण.

२८. ब्लूम की परीक्षा-प्रणाली में अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान है - परीक्षाओं को उद्देश्य - आधारीय बनाकर पाठ्यवस्तु के महत्व को समाप्त करना.

२९. ~~निम्न लिखित~~ में से कौन सी "कार्यसूचक क्रिया" (Action verb) का संबंध ज्ञान (Knowledge) उद्देश्य से नहीं हो सकता है ?
उ० - व्याख्या करना.
कौन सी "कार्य सूचक क्रिया का संबंध ज्ञान उद्देश्य से हो सकता है - उ० - प्रत्यास्मरण करना, सूचीबद्ध करना, पहचान करना.

~~२७~~ ३०. 'विवेचन करना' (To Interpret) का संबंध हो सकता है
उ० - अवबोध उद्देश्य से.

३१. छात्र में किसी सिद्धान्त के पूर्वकथन करने की योग्यता का विकास हो पाना संभव है - उ० - ~~अनुप्रयोग~~ अनुप्रयोग के अन्तर्गत.

३२. श्रवण करना, स्वीकृति देना तथा रुचि प्रकट करना - इन तीनों कार्य सूचक क्रियाओं का संबंध होना चाहिए - अनुक्रिया (Responding) से.

३३. Regional college of Education, Mysore (RCEM) के अनुसार ज्ञानात्मक उद्देश्यों का सही वर्गीकरण है - उ० - ज्ञान- बोध- प्रयोग - सर्जनात्मकता.

३४. 'अनुप्रयोग' (Application) के अन्तर्गत 'मानसिक योग्यताएँ' (Mental Abilities) निहित रहती हैं उ०- तर्क करना एवं परिकल्पना का प्रतिपादन करना, परिकल्पना की स्थापना करना एवं निष्कर्ष निकालना, पूर्वकथन करना एवं विश्लेषण करना.

३५. क्रियासूचक शब्दों के आधार पर 'अनुप्रयोग उद्देश्य' (Application objective) की पहचान है ~~कीजिए~~ - उ० - छात्रों में परिकल्पना निर्माण की योग्यता है।

३६. मान लीजिए आप छात्रों को एक पाठ पढ़ा रहे हैं जिसका शीर्षक है - 'भारत का स्वतंत्रता संग्राम' ~~इस~~ आप इस प्रयोग के लिए अनुप्रयोग आधारित उद्देश्य क्या बनाएंगे?
उ० - छात्रों ~~में~~ में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की सफलता के संदर्भ में तर्क करने की योग्यता है

३७. सर्वोच्च स्तर पर सभी शिक्षण उद्देश्यों के एक विशेष गुण के दर्शन होते हैं यह गुण है - उ० - ~~सब~~ समस्त मानसिक पक्षों का एकीकरण - जिससे बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास हो सके.

38. शिक्षण व्यवस्था का संगठन (Organised Teaching) का संबंध है - उ० समुचित शिक्षण युक्तियों के चयन से, समुचित सम्प्रेषण विधियों के चयन से, समुचित दृश्य श्रव्य सामग्री के चयन से.

39. शिक्षण युक्तियों (Teaching Tactics) का संबंध है - उ० अधिगम संरचना (learning structures) से.

40. डेवीज (Davies) के अनुसार अधिगम परिस्थितियाँ हैं - उ० - संकेत अधिगम शृंखला अधिगम, प्रत्यय अधिगम

डेवीज (Davies) के अनुसार अधिगम परिस्थिति नहीं है - उ० सीमुलेटेड अधिगम.

41. संकेत अधिगम का तात्पर्य है कि प्राणी प्रत्येक उद्दीपक के लिए क्रियाएँ करेगा, उ० - अलग - अलग.

42. डेवीज के परिस्थिति चक्र में पाँच प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है यथा - संकेत - शृंखला - बहुभेदीय - प्रत्यय - सिद्धान्त.

43. संकेत अधिगम (Signal learning) की दशा में जिन शिक्षण युक्तियों का प्रयोग करना आवश्यक है वे हैं :-
उ० - छात्रों के लिए पर्याप्त उद्दीपन प्रदान करना जिससे कि वे अनुक्रिया के लिए तत्पर रह सकें, छात्रों की सही अनुक्रियाओं को पुनर्बलन प्रदान करना, छात्रों को ऐसे उद्दीपन प्रदान किये जायें जिससे वे अधिगम सामग्री पर आधिकार योग्यता (Mastery) प्राप्त कर सकें.

44. शृंखला अधिगम (chain learning) के परिप्रेक्ष्य में उत्तम शिक्षण युक्ति है - उ० छात्रों के समक्ष विषय वस्तु की सम्पूर्ण शृंखला को विस्तृत ढंग से प्रस्तुत किया जाए, उद्दीपन क्रियाओं को क्रमशः अग्रिम शृंखला (Progressive chain) के रूप में ~~प्रस्तुत किया जाए~~, तत्पश्चात पश्च शृंखला (Retrogressive chain) के रूप में प्रस्तुत किया जाए.

४८. बहुभेदीय प्रकार के अधिगम (Multiple Discrimination type learning MDTL) के लिए आवश्यक अधिगम उपाय हैं :
उ०- छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किये जाने वाले उद्दीपनों एवं अनुक्रियाओं को जहाँ तक सम्भव हो अलग-अलग रखना चाहिए, पुनः समस्त उद्दीपनों एवम अनुक्रियाओं को साथ-साथ प्रस्तुत किया जाये ताकि छात्रों द्वारा उनमें अन्तरों की पहचान की जा सके, छात्रों को मुक्त रूप से विभिन्न उद्दीपनों एवम अनुक्रियाओं में अन्तर ढूँढने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया जाये.

४७. सिद्धान्त अधिगम के अनुकूल शिक्षण युक्तियाँ हैं :-
उ०- छात्रों को सामान्यीकरण के लिए प्रेरित किया जाए, छात्रों को विभिन्नताओं को पहचानने के अवसर प्रदान किये जाएं।
'सिद्धान्त अधिगम' के अनुकूल शिक्षण युक्ति नहीं है :-
उ०- प्रत्ययों की शृंखला का अभ्यास कराया जाये जिससे कठिन स्थलों को सुगम बनाया जा सके.

४८. व्याख्यान विधि के द्वारा एक शिक्षक कौन से अधिगम उद्देश्य की प्राप्त कर पाता है? - उ० - ज्ञानात्मक, भावात्मक.
व्याख्यान विधि के द्वारा एक शिक्षक कौन से अधिगम उद्देश्य की प्राप्ति नहीं कर पाता है - उ० - क्रियात्मक.

४९. आव्यूह शिक्षण (Tutorials) का कार्य है - उ० - ज्ञानात्मक तथा भावात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति.

५०. 'संवेदनशील प्रशिक्षण' के माध्यम से एक शिक्षक किन अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकता है :- उ०- ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक उद्देश्य.

५१. क्रियात्मक उद्देश्यों (Psychomotor objectives) की प्राप्ति संभव है
उ० - पाठ-प्रदर्शन शिक्षण आव्यूह के द्वारा, संवेदनशील ~~प्र~~ प्रशिक्षण शिक्षण आव्यूह के माध्यम से।
(शिक्षण आव्यूह = ~~To~~ Tutorials)

५२. दृश्य श्रव्य सहायक सामग्री शिक्षण प्रक्रिया पर प्रभाव डालती है
उ०- धारणा शक्ति में वृद्धि करके, शिक्षण स्थानान्तरण करके, ज्ञान शक्ति एवं पुनर्बलन के रूप में.

५३. टेपरिकॉर्डर के प्रयोग द्वारा जिन अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है, वे हैं
उ०- ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक.

५४. अधिगम उद्देश्यों की सम्पूर्ण प्राप्ति में लाभदायक सहायक सामग्री युग्म है, उ० - टेप, ग्रामोफोन, दूरदर्शन.

५५. शृंखलाबद्ध अधिगम (chain ~~lea~~ learning) के उपयुक्त दृश्य-श्रव्य सामग्री है - रेडियो.

५६. भाषा प्रयोगशाला (language laboratory) के माध्यम से ~~किन~~ अधिगम के किन स्वरूपों की प्राप्ति सम्भव होती है - उ० - संकेत, शृंखला एवं बहुभेदीय अधिगम.

५७. शैक्षिक यात्राएं लाभप्रद सिद्ध होती हैं :- उ० - प्रत्यक्ष अधिगम, सिद्धान्त अधिगम एवं शृंखला अधिगम में.

५८. अभिप्रेरणा में 'मानव व्यवहार' को कौन से नियामक तत्व प्रदान किए जाते हैं - उ० - मानव व्यवहार को उत्पन्न करना, स्थायी करना, एवं निर्दिष्ट करना.

५९. मैस्लो (1954) के द्वारा किये गये आवश्यकताओं के वर्गीकरण में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है - उ० - स्वात्मीकरण संबंधी आवश्यकताओं ने.

६०. अभिप्रेरणा प्रविधियों का वर्गीकरण संभव है - उ० - बाह्य एवं आन्तरिक प्रविधियाँ.

अभिप्रेरणा = Motivation

51. अभिप्रेरणा एक विशेष आन्तरिक कारक अथवा अवस्था है जो क्रिया को आरम्भ करने अथवा निरन्तर बनाए रखने की प्रवृति की द्योतक है। यह कथन है किस मनोवैज्ञानिक का है - उ०- गार्डनर मर्फी.

52. अभिप्रेरणा में सम्मिलित नहीं है - उ०- प्रतिवर्त क्रियाएँ.

53. अभिप्रेरणा में कौन से लक्षण उपस्थित है - उ०- रासायनिक तीव्रता, चयापचय की तीव्रता, शारीरिक तीव्रता.

54. प्रशंसा एवं निन्दा दोनों ही अभिप्रेरणा प्रविधियाँ हैं इनमें से निंदा का प्रयोग करना उचित होगा - उ० - सामान्य छात्रों के साथ.

55. मनोवैज्ञानिक दृष्टि से कौन सी अभिप्रेरणा अधिक महत्वपूर्ण है उ० - सहयोग एवं प्रशंसा.

56. 'प्रगति का तात्कालिक ज्ञान' कार्य करता है - उ०- अभिप्रेरणात्मक व्यवहार उत्पन्न करने में.

57. कक्षा-शिक्षण में अभिप्रेरणा का महत्व है - उ०- छात्रों के व्यवहार को शक्ति प्रदान करना, छात्रों के वांछनीय परिवर्तन में सहायता करना, छात्रों के व्यवहार का संचालन करना.

58. 'दण्ड' का बहुधा प्रयोग विद्यालय अनुशासन को प्रभावी बनाने में किया जाता है, यह दण्ड अभिप्रेरणा के रूप में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगा यदि - उ०- इसे 'पुरस्कार' के साथ प्रयोग किया जाए, अवांछित व्यवहार का परिणाम क्षतिपूर्ण हो अवांछित व्यवहार की दशा में तत्काल दण्ड की व्यवस्था की जाय.

६९. छात्रों के लिए अभिप्रेरणा प्रविधियों के प्रयोग के लिए शिक्षक को उनके चयन के लिए किन मानदण्डों को प्रयोग करना चाहिए - उ०- छात्रों की आवश्यकताएँ, अधिगम के उद्देश्य, तथा अधिगम संरचना (Learning structures)

७०. आन्तरिक एवं बाह्य अभिप्रेरणा के प्रकारों के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जाता है उ०- नवीनता (Novelty) को, प्रगति के ज्ञान को, प्रतियोगिता एवं सहयोग को.

७१. स्वतः अभिप्रेरणा (Self motivation) व्यक्ति की सर्वोच्च अभिप्रेरणा है जिसका सम्बन्ध रहता है - उ०- मैसलो के स्वात्मीकरण (Self Actualization) से.

७२. पुरस्कार एवं दण्ड जैसी बुनियादी अभिप्रेरणाओं का संबंध है उ०- शारीरिक आवश्यकताओं से.

७३. "ऐसी प्रक्रिया जिसमें उद्देश्यों का विशिष्टीकरण किया जाता है और उनसे संबंधित प्रत्ययों, सिद्धान्तों, कौशलों, भाषा एवं समस्या-समाधान की व्यवस्था की जाती है उसे अनुदेशात्मक प्रक्रिया कहते हैं" यह परिभाषा प्रस्तुत की है - उ०- रॉबर्ट मेगर ने.

७४. अनुदेशात्मक प्रक्रिया के महत्वपूर्ण तत्व हैं - उ०- उद्देश्य रचना - कार्य विश्लेषण - पूर्व व्यवहार - शिक्षण सामग्री - शिक्षण प्रक्रिया - मूल्यांकन एवं निदान.

७५. किस प्रकार के अधिगम को मनोवैज्ञानिक रूप में 'अधिगम' नहीं कहा जा सकता है? - उ० - अभिप्रेरणा से उत्पन्न अधिगम, परिपक्वता से उत्पन्न अधिगम, थकान से उत्पन्न अधिगम इन सभी के फलस्वरूप होने वाला अधिगम.

७८. क्रमबद्ध बुनियादी अधिगम परिस्थितियाँ हैं - उ० - समीपता - सामान्यीकरण - विभेदीकरण - अभ्यास - पुनर्बलन.

७९. 'समीपता' (Contiguity) का सम्बन्ध है - उ० - दो उद्दीपकों को एक समान अनुक्रिया के लिए प्रस्तुत करना.

७८. प्रत्यय एवं सिद्धान्त (Concepts and Principles) के शिक्षण की उपयोगिता है उ० - छात्रों को बाह्य वातावरण में उपस्थित वस्तुओं से परिचित कराना, छात्रों को यांत्रिक क्रियाओं की शिक्षा प्रदान करना, अनुदेशन को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करना.

७९. गिलफर्ड के अनुसार सर्जनात्मकता के चार तत्व हैं - उ० - OF²E (मौलिकता, धाराप्रवाह, लचीलापन, विस्तार का कार्य. originality, frequency, flexibility, Expantion.

८०. कौशलात्मक शिक्षण की विशेषता है - उ० - क्रियात्मक क्रियाओं की श्रृंखलाबद्धता, शारीरिक एवं मांसपेशीय गतिविधियों का समन्वय, जटिल क्रियात्मक अनुक्रियाओं की श्रृंखलाबद्धता.

८१. कौशलात्मक अधिगम की अवस्थाएँ है - उ० - ज्ञानात्मक - स्थिरीकरण - स्वाधीनस्थ (Autonomous)

८२. अन्तः क्रिया विश्लेषण प्रविधि (Interaction Analysis) की आधारभूत मान्यता है - उ० - शिक्षण व्यवहार एक सामाजिक अन्तः प्रक्रिया है.

८३. फ्लैण्डर्स की दस वर्ग प्रविधि की आधारभूत मान्यताएँ है - उ० - कक्षा में शाब्दिक व्यवहार की प्रधानता, छात्रों पर शिक्षक व्यवहार की प्रभावशीलता, प्रजातान्त्रिक व्यवहार में छात्रों की रुचि.

८४. फ्लैण्डर्स ने कक्षा में समस्त शिक्षक व्यवहारों को वर्गीकृत किया है
उ० - तीन खण्डों में

८५. कक्षा में शिक्षक संबंधी अप्रत्यक्ष व्यवहार (Indirect Behaviour) की कसौटी है
उ०- छात्रों की अनुभूति को स्वीकार करना, प्रशंसा एवं प्रोत्साहित करना, छात्रों के विचारों को स्वीकार करना.

कक्षा में शिक्षक संबंधी अप्रत्यक्ष व्यवहार की कसौटी नहीं है-
उ० - छात्रों को दण्ड प्रदान करना.

८६. कक्षा में शिक्षक के प्रत्यक्ष व्यवहार संबंधी फ्लैण्डर्स ने मानदण्ड निर्धारित किए हैं - उ० - व्याख्यान देना, निर्देशन देना, आलोचना करना.

८७. अन्तः क्रिया विश्लेषण प्रणाली की सीमायें हैं - उ० - केवल शाब्दिक सम्प्रेषण का निरीक्षण किया जा सकता है, कक्षा शिक्षण का केवल दस वर्गों में विभाजन अनुपयुक्त है, शिक्षक एवं छात्र क्रियाओं का पृथक् पृथक् अंकन करना.

८८. शिक्षण कौशल है एक - उ० - शिक्षण क्रियाओं एवं व्यवहारों का सांगोपांग स्वरूप, कक्षा अन्तः प्रक्रिया की परिस्थिति, अधिगम सुगम्यता की स्थिति.

८९. एलन एवं रियान (Allen and Ryan) ने शिक्षण कौशलों की संख्या बताई है - उ० १४.

९०. उद्दीपन भिन्नता (Stimulus variation) का तात्पर्य है - उ० - शिक्षक द्वारा अपने व्यवहार में जानबूझकर परिवर्तन करना.

९१. विन्यास प्रेरणा का संबंध है - उ० - छात्रों के ध्यान आकर्षण से,

९२. 'पुनर्बलन कौशल' में शिक्षक करता है - उ० - छात्रों की प्रशंसा.

९३. शिक्षक को नवीन पाठ प्रारम्भ करना चाहिए - उ० - कहानी सुनाकर, कविता सुनाकर, चित्र दिखाकर - इन तीनों में से किसी भी एक या अधिक विधि के द्वारा.

1. शिक्षण विधि से तात्पर्य है - उ० - बाह्य जगत के ज्ञान का बालक की बुद्धि में ~~प्रतिस्थ~~ प्रतिस्थापन.

2. एक शिक्षण विधि सम्पन्न होती है - उ० अनेक तकनीकियों से.

3. शिक्षण विधि है एक उ० - एक कला एवं विज्ञान दोनों ही.

4. शिक्षक जन्मजात होते हैं, बनाये नहीं जा सकते हैं, इस तथ्य से संभावनाएँ हैं कि - उ० - शिक्षण विधि जन्मजात होती है

5. शिक्षण विधि के बिना पढ़ाना तो सम्भव है, किन्तु इससे हानि है - उ० - उद्देश्य की प्राप्ति न हो पाना, अविकसित अधिगम परिस्थिति, अव्यवस्थित क्रम।

6. बाह्य जगत के ज्ञान एवं छात्र के मस्तिष्क के मध्य जब प्रत्यक्ष सम्पर्क सूत्र स्थापित कर दिया जाता है तो इसे कहते हैं - उ० - शिक्षण विधि.

7. कौन सी विधि को एक अनिवार्य बुराई माना जाता है - उ० - व्याख्यान विधि.

8. बालकेन्द्रित शिक्षण विधि का गुण है - उ० - बालकों को उनकी आवश्यकता एवं रुचि के अनुकूल पढ़ाना.

9. बालकेन्द्रित शिक्षण विधि के अन्य गुण हैं - उ० - वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास करना, प्रजातांत्रिक मूल्यों की स्थापना करना, ~~स्वाश~~ स्वशासन की स्थापना करना.

बालकेन्द्रित शिक्षण विधि का गुण नहीं है - उ० - औपचारिक एवं कठोर वातावरण तैयार करना.

10. शिक्षक - केन्द्रित शिक्षण विधियों का अन्तिम परिणाम है - उ० - तथ्यों को याद करना, पारम्परिक संस्थाओं में आस्था व्यक्त करना, शिक्षक के प्रभुत्व पर आश्रित रहना.

११. शिक्षक-केन्द्रित शिक्षण विधि के प्रक्रियात्मक विमा में सम्मिलित है - उ० - पुनरावृति, प्रभुत्व, स्मृति.
शिक्षक-केन्द्रित शिक्षण विधि के प्रक्रियात्मक विमाओं में सम्मिलित नहीं है - उ० - खोज प्रवृति.

१२. शिक्षक-केन्द्रित विधियों ~~के गुण~~ में गुण उपस्थित रहते हैं - उ० - औपचारिकता का, शिक्षा की सम्प्रभुता का, नवीन तकनीकियों की अवहेलना का.

१३. एक शिक्षण विधि की विमा है - उ० - मूल तथ्यात्मक विमा, प्रक्रियात्मक विमा, पर्यावरणीय विमा.

१४. बाल-केन्द्रित शिक्षण विधियों के उद्देश्य हैं - उ० - छात्रों में मुक्त ढंग से सीखने की योग्यताओं का विकास करना, छात्रों में स्वतंत्र कौशलों का विकास करना, छात्रों में आत्मनिर्भरता का विकास करना.

१५. छात्र-केन्द्रित शिक्षण विधियों में प्रायः शिक्षक की भूमिकाएँ रहती हैं - उ० - समस्या उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों का निर्माण करना, छात्रों के लिए सम्भावित सामग्री एवं संसाधनों को जुटाना, छात्रों की उपकल्पना निर्माण में मदद करना.

१६. छात्र केन्द्रित विधि के ~~अंति~~ अन्तिम उत्पाद हैं - उ० - बालकों में उच्चस्तरीय प्रश्न पूछने की प्रक्रिया का विकास करना, बालकों को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करना, बालकों की क्षमताओं में वृद्धि करना.

१७. शिक्षक नवीन प्रयोग एवं तकनीकियों को अपनाने के लिए प्रयासरत रहता है - उ० - छात्र केन्द्रित विधियों में.

१८. शिक्षक प्रजातांत्रिक मूल्यों की स्थापना के लिए प्रयासरत रहता है - बाल-केन्द्रित शिक्षण विधियों में.

१९. व्याख्यान विधि का प्रमुख गुण है - उ॰ - मितव्ययता

२०. शिक्षण सिद्धान्त के अनुरूप नहीं है - उ॰ - व्याख्यान विधि.

२१. जब शिक्षक अति सक्रिय हो तथा छात्रगण निष्क्रिय हों और केवल श्रोतामात्र ही हों - तो ऐसी पद्धति को कहते हैं - व्याख्यान पद्धति.

२२. व्याख्यान विधि पर दोष आरोपित किए जाते हैं - उ॰ - वैज्ञानिक अभि अभिवृत्ति का अभाव, करके सीखने के सिद्धान्त का प्रतिकार, एकमार्गीय शिक्षण क्रिया.

२३. किस विधि के अन्तर्गत शिक्षक अपने छात्रों के ध्यानपूर्वक सुनने के प्रति अपेक्षाकृत कम सतर्क रहते हैं - उ॰ - व्याख्यान विधि में

२४. व्याख्यान विधि अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगी जबकि उसका प्रयोग इन परिस्थितियों में किया जाए :- उ॰ - जब शिक्षक किसी नवीन एवं जटिल पाठ को प्रारम्भ करने जा रहे हों, जब शिक्षक किसी सैद्धान्तिक पक्ष की व्याख्या करना चाहते हों, जब शिक्षक किसी प्रदर्शन की व्याख्या करने में रुचि रखते हों.

२५. व्याख्यान विधि के लिए आवश्यकता होती है - उ॰ - अभ्यास की.

२६. अपने नीरस व्याख्यान को सरस बनाने के लिए आप क्या उपाय करेंगे?
उ॰ - आप बीच-बीच में कुछ हास्य का पुट सम्मिश्रित करेंगे, आप छात्रों को प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता प्रदान करेंगे, जहाँ तक संभव होगा श्यामपट्ट की अधिकाधिक मदद लेंगे.

२७. प्रायः व्याख्यान विधि को उत्तम माना जाता है - उ॰ - बी॰ए॰ स्तर की कक्षाओं के छात्रों के लिए.

२८. व्याख्यान होना चाहिए – उ०- रोचक, सुगठित एवं व्यवस्थित, मध्यम स्तर एवम् आवश्यक उतार-चढ़ाव के साथ.

२९. आप अपने व्याख्यान को किस स्थिति में प्रभावी कहेंगे?
उ०- जब आप बोलें - छात्र अनुसरण करें.

३०. आधुनिक कक्षाओं में शिक्षक का अधिनायकवाद कहाँ तक उपयुक्त है? -उ०- काफी हद तक.

३१. भाषण विधि के गुण हैं - मितव्ययी विधि, तीव्र गति, समय की बचत.
भाषण विधि का एक गुण नहीं है - स्वतंत्र चिन्तन.

३२. भाषण विधि के दोष हैं -उ०- स्मृति पर अत्यधिक बल, स्वतंत्र चिन्तन का अभाव, वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास में बाधक.

३३. जब एक व्याख्यान को प्रायोगिक प्रदर्शन के साथ जोड़ दिया जाता है तो इससे लाभ प्राप्त होता है - उ०- यह मनोवैज्ञानिक हो जाता है.

३४. व्याख्यान एवं प्रयोग-प्रदर्शन दोनों सामूहिक रूप से किस शिक्षण सूत्र का पालन करते हैं -उ०- मूर्त अवस्था से अमूर्त अवस्था की ओर.

३५. यदि व्याख्यान विधि की एकांगिता को समाप्त करना हो तो आप कौन सा उपाय करेंगे? उ०- आप इसे प्रयोग-प्रदर्शन से जोड़ देंगे.

३६. एक उत्तम व्याख्यान-प्रदर्शन विधि की पहचान है - उ०- इसका कक्षा में सफलतापूर्वक परीक्षण, इसका पूर्वपरीक्षण, इसकी युक्तिसंगत व्यवस्था.

३७. व्याख्यान प्रदर्शन विधि के संदर्भ में कहा जाता है कि 'सच वह जो सिर चढ़ कर बोले' (Truth is that which works) इस उक्ति से यही तात्पर्य है - उ० - शिक्षक अपने शिक्षण संबंधी सामग्री (प्रयोग) प्रदर्शित करने के लिए विवश है, क्योंकि छात्र सच देखकर ही यकीन करता है।

३८. यदि आप एक विज्ञान शिक्षक हैं तो आप व्याख्यान प्रदर्शन विधि का प्रयोग करते हुए अपने प्रयोग को किस प्रकार उत्तम बनाएँगे - उ० - प्रयोग की उचित व्यवस्था करके जैसे - छात्रों का उचित अनुशासन प्रयोग हेतु ऊँची बड़ी मेज की उपलब्धता आदि,

३९. प्रयोग प्रदर्शन से पूर्व रिहर्सल किया जाना आवश्यक है क्योंकि इससे - उ० - शिक्षक में आत्मविश्वास जाग्रत होता है, शिक्षक प्रयोग में आने वाली अप्रत्यक्ष कठिनाइयों से परिचित हो जाता है, शिक्षक प्रयोग को भली-भाँति प्रदर्शित कर पाता है.

४०. व्याख्यान-प्रदर्शन विधि को छात्र केन्द्रित बनाने के लिए शिक्षक को उपाय करने चाहिए - उ० - छात्रों के उपकरण लगाने तथा व्यवस्थित आदि करने में सक्रिय सहयोग, छात्रों को प्रेक्षण स्वयं नोट करने की स्वतंत्रता, छात्रों की जिज्ञासाओं को शांत करने ~~की~~ के लिए प्रयोग के प्रत्येक पद की उत्तम व्यवस्था,

४१. व्याख्यान-प्रदर्शन विधि में शिक्षक को क्या नहीं करना चाहिए - उ० - त्रुटिपूर्ण एवम अप्रयुक्त उपकरणों का प्रयोग, एकाएक प्रयोग प्रारम्भ, छात्रों पर अत्यधिक दबाव.

४२. छात्रों की रुचि जाग्रत करने के लिए शिक्षक को क्या उपाय करना चाहिए - उ० - प्रयोग के दौरान सस्पेंस बनाए रखना,

४३. पाठ-प्रदर्शन की तैयारी के बिन्दु हैं - उ० - विषय-वस्तु चयन, पाठ-संकेत एवं प्रश्न चयन, आवश्यक उपकरणों को एकत्रित करना,

४४. प्रयोग-प्रदर्शन में पाठ (प्रकरण) की प्रस्तुति की जानी चाहिए - उ० - समस्यात्मक ढंग से.

४५. प्रयोग-प्रदर्शन के साथ-साथ विषय सामग्री के प्रस्तुतीकरण में एक शिक्षक को क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए ? - उ० - दृष्टांतों का पर्याप्त प्रयोग, उचित प्रश्नों की प्रस्तुति, स्पष्ट उच्चारण एवं भाषा प्रवाह.

४६. यदि शिक्षक प्रयोग-प्रदर्शन फूहड़पन से करेगा तो इससे छात्रों के व्यवहार में क्या परिवर्तन होने की सम्भावना होगी - उ० - छात्र भी और अधिक फूहड़पन से कार्य करेंगे, छात्र को वैज्ञानिक विधि का संवरण नहीं होगा, छात्र वैज्ञानिक अभिवृत्ति से वंचित रह जाएँगे.

४७. प्रयोग-प्रदर्शन के दौरान शिक्षक को कौन सी बात बार-बार नहीं दोहरानी चाहिए ? - उ० - 'ठीक है ... ठीक है - ऐसा ही होना चाहिए था', 'शाबास ! ठीक है', 'बहुत अच्छा - यही तो देखना चाहते थे'.

४८. प्रायः शिक्षक द्वारा व्याख्यान प्रयोग-प्रदर्शन के समय सम्भावित भूल हो सकती है - उ० - शिक्षक को प्रकरण के उद्देश्य तथा किये जानेवाले प्रयोग के मध्य तारतम्य बैठाने की भूल, शिक्षक द्वारा छात्रों में अपेक्षित उत्सुकता जाग्रत करने की भूल, शिक्षक द्वारा निरन्तर बोलते रहने की भूल.

४९. प्रयोग-प्रदर्शन विधि को एक मनोवैज्ञानिक विधि माना जाता है क्योंकि - उ० - इसका जन्मदाता एक मनोवैज्ञानिक है.

५०. प्रयोग-प्रदर्शन विधि के गुण हैं - उ० - यह मितव्ययी है, यह क्रियात्मक विधि है इसमें खतरनाक प्रयोगों को शिक्षक स्वयं करते हैं।

५१. व्याख्यान प्रयोग प्रदर्शन विधि के दोष हैं - उ० - यह छात्र केन्द्रित नहीं है,

यह वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास में बाधक है, यह प्रत्यक्ष अनुभवों की अवहेलना करती है।

५२. ~~इस~~ ह्यूरिस्टिक विधि के जन्मदाता हैं - उ० - प्रो० एच० ई० आर्मस्ट्रांग

५३. आर्मस्ट्रांग का मौलिक विचार है - उ० - मौलिक अनुसंधान और खोज ही विज्ञान का वास्तविक उद्देश्य है.

५४. ह्यूरिस्टिक की व्युत्पत्ति हुई है - उ० - ग्रीक शब्द 'ह्यूरिस्को' से.

५५. 'शिक्षण की अनुसंधानात्मक विधियाँ ऐसी हैं जिनमें जहाँ तक सम्भव हो सके विद्यार्थियों को अनुसंधान कर्ता के रूप में बनना पड़ता है' यह कथन प्रस्तुत किया है - उ० - आर्मस्ट्रांग ने.

५६. एच० ई० आर्मस्ट्रांग मूलतः कार्य करते थे - उ० - रसायनशास्त्र के प्रोफेसर के रूप में.

५७. ह्यूरेस्को (heurisco) का शाब्दिक अर्थ है - उ० - प्राप्त करना (to find out)

५८. 'ह्यूरिस्टिक' का एक समकक्ष ग्रीक शब्द 'ह्यूरिस्केन' (heuriskein) बताया गया है जिसका तात्पर्य है - उ० - विज्ञान की खोज करना (to discover science)

५९. ~~निम्न~~ निम्नलिखित गुण किस विधि से समायोजित किए जा सकते हैं - १. ऐसी विधि जो रूढ़िवादिता के विरुद्ध है, ऐसी विधि जिसमें प्रेक्षण शक्तियाँ सर्वोत्तम हैं, ऐसी विधि जो प्रेक्षणीय है, ऐसी विधि जिसमें 'स्वयं क्रिया' पर फोकस किया जाता है.
उ० - ह्यूरिस्टिक विधि.

६०. एक शिक्षक केन्द्रित विधि को छात्र - केन्द्रित विधि में परिवर्तित किया किया जा सकता है - उ० - आंशिक रूप से यदि शिक्षक ऐसा प्रयास करे तो.

६१. ह्यूरिस्टिक मेथड को वेस्टावे (westaway) ने माना है - उ० - एक 'विशेष विधिक प्रशिक्षण' के रूप में।

६२. कौन सा मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त ह्यूरिस्टिक विधि में समाहित है? उ० - स्वतंत्रता का सिद्धान्त, अनुभवों का सिद्धान्त, क्रिया का सिद्धान्त।

६३. ह्यूरिस्टिक मेथड का केन्द्रिय सिद्धान्त कहा जा सकता है - उ० - 'स्वयं करके सीखना'।

६४. ह्यूरिस्टिक विधि विश्वास करती है कि - उ० - यदि बालक को वैज्ञानिक खोज विधि में निपुण कर दिया जाय तो वह ज्ञान की खोज तो स्वयं ही कर लेगा।

६५. ह्यूरिस्टिक विधि में एक शिक्षक की क्या भूमिका रहती है? उ० - शिक्षक एक मित्र की तरह, शिक्षक एक स्टेज निर्माता की तरह, शिक्षक एक अत्र आगमनात्मक ढंग से बालक में निहित ज्ञान को परिलक्षित कराने वाले की तरह।

६६. 'ह्यूरिस्टिक विधि निर्माणात्मक (Formative) है सूचनात्मक (Informative) नहीं', इसका तात्पर्य यह है कि - उ० - ह्यूरिस्टिक विधि ~~निरीक्षक~~ निरीक्षक शक्तियों का विकास करती है, स्वतंत्र चिन्तन को उत्साहित करती है, प्रायोगिक प्रमाणों को ज्ञान का आधार ~~मानकी~~ मानती है।

६७. ह्यूरिस्टिक विधि अपनाने के सन्दर्भ में आप कौन सी बात ध्यान में रखेंगे? उ० - ऐसी समस्याओं का चयन करना जिन्हें वैज्ञानिक विधियों से हल किया जा सकता है, ऐसी समस्याओं के बारे में विस्तृत ज्ञान कारी एकत्रित करना, प्राप्त सामग्री की व्याख्या करना।

६८. ह्यूरिस्टिक विधि का गुण है - उ० - करके सीखना, वैज्ञानिक विधि का प्रशिक्षण, आत्मनिर्भरता।

६६. ह्यूरिस्टिक विधि का एक सबसे बड़ा दोष है कि- उ०- यह बालक को एक वैज्ञानिक मान ली है.

७०. ह्यूरिस्टिक शिक्षक विधि का भारतीय कक्षाओं में प्रयोग है-उ०- अव्यावहारिक.

७१. विज्ञान-प्रयोगशाला के लिए है, अथवा प्रयोगशाला विज्ञान के लिए है में कौनसा कथन उपयुक्त है? -उ०- द्वितीय.

७२. ह्यूरिस्टिक शिक्षण विधि को लागू करने के लिए उत्तम वातावरण होगा -उ०- ऐसे विद्यालय में जहाँ शिक्षक-छात्र दोनों ही प्रतिभाशाली हो.

७३. ह्यूरिस्टिक विधि का सर्वोत्तम प्रयोग हो सकता है - उ०- विज्ञान क्लब की गतिविधियों में.

७४. ह्यूरिस्टिक विधि से शिक्षण में छात्रों को गृहकार्य से मुक्ति मिल जाती है क्योंकि -उ०- इस विधि में समस्त क्रियाकलाप प्रयोगशाला में ही सम्पन्न हो जाता है.

७५. ह्यूरिस्टिक विधि अनुपयुक्त है - उ०- पारम्परिक पाठ्यक्रम के लिए, पारम्परिक विद्यालयों के लिए, पारम्परिक कार्य-प्रणाली के लिए.

७६. यदि छात्रों को परिश्रम स्वतः अध्ययन का प्रशिक्षण प्रदान करना चाहते हैं तो कौन सी शिक्षण पद्धति अधिक उपयुक्त रहेगी? -उ०- ह्यूरिस्टिक विधि,

७७. छात्रों को मुक्त रूप से सीखने की योग्यताएँ जन्म देती हैं उनमें - उ० - आत्मविश्वास को, सहजता को, आत्म प्रकाशन को,

७८. ~~अ~~ ह्यूरिस्टिक विधि में शिक्षक-छात्र संबंध होता है एक - उ०- (मार्गदर्शक, कार्यसहभागी, मित्र) - इन तीनों का सम्मिलित स्वरूप.
Guide Helper Friend

७९. 'समस्या' है - उ०- एक अनुत्तरित प्रश्न, एक मानसिक बोझ, एक निरन्तर चलने वाला तनाव.

८०. समस्या-समाधान विधि का मूलभूत आधार मिलता-जुलता है- उ०- वैज्ञानिक विधि से.

८१. समस्या-समाधान विधि एक ऐसी प्रक्रिया है जो छात्रों के ~~म~~ मन ~~में~~ में समस्या उत्पन्न करती है जिससे छात्र इसका ~~हल~~ उत्साहित ढंग से युक्तिसंगत हल ढूंढते हैं, यह परिभाषा दी है - उ०- रिस्क ने.

८२. समस्या-समाधान व्यवहार प्रायः उत्पन्न होता है - उ०- असाधारण कठिनाई युक्त ~~परिस्थितियों से~~, परिस्थितियों में.

८३. समस्या-समाधान है - ~~•~~ उ०- एक मनोवैज्ञानिक सम्प्रत्यय, एक शिक्षण विधि का प्रकार, एक उच्च चिन्तन की योग्यता.

८४. समस्या-समाधान विधि के द्वारा शिक्षण में आप किस बात पर ध्यान देंगे- उ० - समस्या शिक्षा परक हो, समस्या छात्रों के लिए उपयोगी हो, समस्या छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल हो.

Imp

८५. समस्या-समाधान शिक्षण विधि के प्रमुख पद हैं - उ०- समस्या को परिभाषित करना, उपयुक्त प्रदत्तों का संकलन करना, घटनाओं का प्रेक्षण करना तथा निष्कर्ष प्राप्त करना.

८६. समस्या-समाधान विधि का गुण है - उ०- स्वयं करके सीखने, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास, आत्मनिर्भरता.

८७. समस्या-समाधान विधि का अवगुण है - उ० - मंदगति का होना, प्रायोगिक कार्यों पर बल, पाठ्य-पुस्तकों की अनुपलब्धता.

८८. समस्या-समाधान विधि को एक सामान्य विद्यालय में लागू नहीं किया जा सकता है क्योंकि यह - उ० - पाठ्यक्रम के अनुरूप नहीं होती, समय अधिक लेती है, केवल प्रयोगात्मक ढंग से सीखने पर बल देती है.

८९. प्राय: समस्या-समाधान के संदर्भ में एक प्रचलित अवधारणा है कि यह - उ० - केवल होनहार शिक्षकों के द्वारा क्रियान्वित की जा सकती है एवं केवल होनहार छात्रों के लिए ही उपयुक्त है.

९०. असाइनमेंट विधि एक सम्मिश्रित स्वरूप है - उ० - व्याख्यान-प्रदर्शन विधि तथा व्यक्तिगत प्रयोगशालीय कार्य की.

९१. असाइनमेंट होते है - उ० - दो प्रकार के.

९२. 'होम असाइनमेंट' (Home Assignment) से तात्पर्य है - उ० - शिक्षक द्वारा दिए गए कार्य को घर से करके लाना.

९३. स्कूल असाइनमेंट का संबंध होता है - उ० - छात्र द्वारा स्कूल में किए जाने वाले प्रयोगों की निष्पादन क्षमता से.

९४. असाइनमेंट विधि में छात्रों के सही मूल्यांकन के लिए शिक्षक क्या उपाय अपनाता है? उ० - छात्रों का प्रोग्रेस रिकॉर्ड तैयार करना है

९५. असाइनमेंट के उद्देश्य हैं - उ० - वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास करना, वैज्ञानिक विधि का प्रशिक्षण प्रदान करना, वैज्ञानिक तथ्यों की खोज करना तथा उनसे सिद्धान्तों की व्युत्पत्ति करना.

९६. यदि एक छात्र का होम असाइनमेंट सन्तोषप्रद नहीं है तो शिक्षक को क्या करना चाहिए ? -उ०- उक्त छात्र को स्कूल असाइनमेंट से वंचित करना.

९७. उत्तम असाइ असाइनमेंट की कसौटियाँ है - उ०- असाइनमेंट बालक को दिए गए प्रकरण से संबंधित हो, असाइमेंट संक्षिप्त एवम् उद्देश्यपूर्ण हो, असाइनमेंट परिस्थिति के अनुकूल परिवर्तित हो सकता हो.

९८. एक असाइनमेंट की योजना निर्माण के चरण है - उ० -असाइनमें असाइनमेंट के लिए पूर्व तैयारी, यूनिट के शिक्षण के समय ध्यान में आनेवाली समस्याओं का चयन, उक्त यूनिट से मूल्यांकन करना.
एक असाइनमेंट की योजना निर्माण का चरण नहीं है - उ०- पूर्व छात्रों के द्वारा पूरे किए गए असाइनमेंट्स को वितरित करना.

९९. असाइनमेंट तैयार करते समय शिक्षक को कौनसी क्या योजना बनानी चाहिए :- उ०- समस्त पाठ्यक्रम को सत्र के प्रारम्भ में ही असाइनमेंट खण्डों में तोड़ देना चाहिए असाइनमेंट के लिए उद्देश्यों का चयन करना चाहिए, असाइनमेंट वितरण में छात्र की आयु, बुद्धि, कक्षा, स्तर आदि का ध्यान रखना चाहिए.

१००. असाइनमेंट देते समय प्रायः शिक्षक संदर्भ पुस्तकों की सूची भी बताते हैं. इनमें से आपके अनुसार एक उत्तम शिक्षक होगा। उ० जो असाइनमेंट के साथ-साथ संदर्भ ग्रन्थ सूची की अधिकांश पुस्तकों से व्यक्तिगत परिचित है.

१०१. असाइनमेंट विधि का केन्द्रीय गुण है -उ० - छात्र प्रयोगशाला में स्वयं करके सीखते हैं।

१०२. असाइनमेंट विधि का एक प्रमुख दोष है — उ०- पाठ्य पुस्तकों की अनुपलब्धता, उपयुक्त पुस्तकालय की आवश्यकता, उपयुक्त प्रयोगशाला की आवश्यकता होती है.

१०३. असाइनमेंट विधि अपेक्षाकृत उपयुक्त है — उ०- हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट के छात्रों के लिए.

१०४. प्रोजेक्ट विधि के ~~प्रमेल~~ प्रणेता हैं — उ०- जॉन ड्यूवी, डब्ल्यू एवं किलपैट्रिक.

१०५. प्रोजेक्ट विधि का आधारीय दर्शन है — उ०- प्रयोजनवाद.

१०६. प्रोजेक्ट विधि में क्या कार्य नहीं किया जाता है? — उ०- ~~बालक के अनु~~ बालक के अनुसार पाठ्यक्रम पर विचार, बालक के अनुसार पाठ्यसामग्री पर विचार, बालक के अनुरूप तकनीकियों पर विचार.

१०७. ~~प्रोजेक्ट~~ 'प्रोजेक्ट एक समस्यामूलक कार्य है जो अपनी स्वाभाविक परिस्थितियों के अन्तर्गत पूर्णता को ~~प्राप्त~~ प्राप्त करता है' यह कथन है — उ०- ~~जे० ए० स्टीवेन्सन का~~ जे० ए० स्टीवेन्सन का.

१०८. प्रोजेक्ट विधि में बल दिया जाता है — उ०- हस्तकार्य द्वारा सीखने पर (learning by doing), जीवन कार्य द्वारा सीखने पर (learning by learning), साहचर्य एवं सहयोग द्वारा सीखने पर.

१०९. 'जीवन कार्य द्वारा सीखना' ~~से~~ (learning by ~~doing~~ living) से तात्पर्य है — बालक स्वयं अपने जीवन के द्वारा सीखता है क्योंकि जीवन छोटे-छोटे प्रोजेक्टों का संकलन है.

११०. ~~प्र~~ प्रोजेक्ट विधि में अनेक विषयों के ज्ञान पर निर्भर रहना पड़ता है इस विधि के उक्त गुण को कहते हैं — उ०- समवायता (Correlation) का गुण.

१११. क्रमबद्ध रूप से प्रोजेक्ट विधि के चरण हैं — उ०- परिस्थिति का

निर्माण करना, योजना बनाना, क्रियान्वित करना, मूल्यांकन करना, रिकार्ड तैयार करना.

112. प्रोजेक्ट विधि में शिक्षक की भूमिका होती है – मित्र, मार्गदर्शक एवं कार्य सहयोगी जैसी.

113. प्रोजेक्ट विधि का सर्वश्रेष्ठ गुण है – उ० – इसके द्वारा वैज्ञानिक विधि का प्रशिक्षण प्रदान करना.

114. एक उत्तम प्रोजेक्ट की विशेषता है – उ० – उद्देश्यपूर्णता, बालकों की सक्रीयता के अनुकूल क्रियाएँ, बालकों को कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता.

115. प्रोजेक्ट का चयन करना चाहिए – उ० – शिक्षकों एवं छात्रों दोनों के द्वारा.

116. प्रोजेक्ट होना चाहिए – उ० – न तो अधिक कठिन और न अधिक सरल.

117. प्रोजेक्ट विधि द्वारा अधिगम के किन सिद्धान्तों की प्राप्ति (पूर्ति) होती है – उ० – तत्परता का सिद्धान्त, अभ्यास का सिद्धान्त, प्रभाव का सिद्धान्त.

118. प्रोजेक्ट विधि की कमियाँ हैं – उ० – समय की बर्बादी, शिक्षक के लिए अतिरिक्त कार्यभार, शिक्षक से अधिकाधिक प्रत्याशा.

119. प्रोजेक्ट शिक्षण विधि का प्रचलित स्वरूप है – उ० – छात्रों से केवल मॉडल तैयार करना, सतत कार्य में बालक को व्यस्त रखना, छात्रों को एक-दो विषय में प्रोजेक्ट बाँटकर पूरा करके लाने के लिए कहना.

१२०. चर्चा विधि (Discussion Method) का उद्देश्य है – उ०- छात्रों में स्वयं पढ़ने - समझने की भावना विकास करना.

१२१. चर्चा विधि को क्रियान्वित किया जाता है – उ० – सर्वप्रथम शिक्षक प्रकरण की पृष्ठभूमि एवं सामान्य आख्या प्रस्तुत करता है, पुनः छात्रों को समूह में अध्ययन एवं चर्चा का समय दिया जाता है, शिक्षकों के द्वारा छात्रों को पुस्तकालय में रखे संदर्भ ग्रन्थों की सूची प्रदान की जाती है, इसके बाद शिक्षक चर्चा प्रारम्भ करते हैं.

१२२. चर्चा विधि के लिए प्रकरण चयन में एक शिक्षक को सावधानी बरतनी चाहिए – उ० – प्रकरण न तो अधिक सरल हो ~~न~~ ~~हो~~ और न ही अधिक कठिन, छात्रों को पाठ्य-पुस्तकों से परे सभी संदर्भों को पढ़ने की सलाह देनी चाहिए, चर्चा को वाद-विवाद में न बदला जाए.

१२३. आगमन विधि में शिक्षण गति करता है – विशेष उदाहरण से सामान्यीकरण की ओर.

१२४. आगमन विधि के लाभ हैं – उ० – वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास, तर्कशक्ति का विकास, अध्ययन आदतों का विकास.

१२५. जब छात्रों के समक्ष नियम, सिद्धान्त एवं सामान्यीकरण प्रस्तुत किए जाते हैं और छात्र उन्हें किसी विशेष उदाहरण से सत्यापित ~~कर~~ करते हैं तो इसे कहते हैं – उ० – निगमनात्मक विधि.

१२६. निगमनात्मक विधि की सबसे बड़ी कमी है कि यह – उ० – एक अमनोवैज्ञानिक पद्धति है।

१२७. निगमनात्मक विधि को तर्कसंगत ढंग से प्रयोग किया जा सकता है – उ० – छोटे छात्रों (निम्नस्तरीय कक्षाओं के साथ जो स्वयं वैज्ञानिक तथ्यों को न तो खोज सकते हैं और न ही तर्क दे सकते हैं।

१२८. निगमनात्मक विधि में जिस शिक्षण सूत्र का प्रयोग किया जाता है, वह है -उ०- सामान्य से विशेष की ओर, अमूर्त से मूर्त की ओर.

१२९. आगमनात्मक एवं निगमनात्मक शिक्षण विधियाँ हैं -उ०- एक दूसरे की पूरक.

१३०. आगमनात्मक-निगमनात्मक विधि का प्रचलित रूप में प्रयोग किया जाता है -उ०- गणित, विज्ञान एवं ग्रामर (व्याकरण) शिक्षण में.

१३१. शिक्षण विधि के चयन में क्या सावधानी बरतनी चाहिए -उ०- शिक्षण-विधि विषय-वस्तु के शिक्षण उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली हो, शिक्षण विधि छात्रों का बाह्य जगत के पर्यावरण से अन्तःक्रिया कराने वाली हो, शिक्षण विधि छात्रों को प्रयोग, तर्क, चिन्तन एवं मनन के पर्याप्त अवसर प्रदान करती हो.

१३२. एक शिक्षण विधि में क्या गुण होने चाहिए -उ०- छात्रों में सीखने की रुचि एवं उत्साह उत्पन्न करना, छात्रों को सुसंगठित एवं ~~सुव्य~~ सुव्यवस्थित ढंग से सूचनाओं को संप्रेषित ~~करना~~ करना, ~~शिक्षवि~~ शिक्षण विधि गत्यात्मक हो.

१३३. शिक्षक को अपने शिक्षण काल में महारत हासिल करनी चाहिए -उ०- सभी शिक्षण विधियों में समान रूप से.

१३४. भारतीय परिवेश में बाल-केन्द्रित अभिनव शिक्षण विधियों की स्थिति है -उ०- दयनीय- क्योंकि इन्हें लागू करने की संभावनाएँ बहुत कम हैं, सोचनीय- क्योंकि उनके अनुरूप पाठ्यक्रम एवं प्रयोगशालाएं ~~तैयार~~ तैयार नहीं की जाती है, विवादास्पद- क्योंकि वो सतही कार्य बालकों से कराये जाते हैं,

१३५. इन्हें ही प्रोजेक्ट, असाइनमेंट आदि कह सकते,

1. मूल्यांकन शब्द से तात्पर्य है - उ० व्यक्ति / बालक की उपलब्धि एवं योग्यताओं का मूल्य निर्णय,

~~2. मापन एवं मूल्यांकन~~

2. मापन एवं मूल्यांकन में संबंध है - उ० - मापन किसी व्यक्ति गुण का मात्रात्मक वर्णन है, जबकि मूल्यांकन उक्त गुण का मात्रात्मक + गुणात्मक वर्णन है मूल्यांकन व्यापक है और इसमें मापन निहित रहता है मापन की शुद्धता एवं सार्थकता उसके मूल्यांकन को प्रभावित करती है.

3. मूल्यांकन किसी शील गुण (Trait) के संदर्भ में बताता है - उ० - उक्त गुण को क्या मूल्य दिया जाए.

4. मूल्यांकन की उपस्थिति किस शिक्षा प्रक्रिया के अंग में विद्यमान रहती है - उ० - उद्देश्यों के निर्माण में, पाठ्यक्रम योजना में, शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया में.

5. मूल्यांकन की परिभाषा है - उ० - मूल्यांकन, व्यक्ति एवं समाज की दृष्टि से जो उत्तम एवं वांछनीय है - इस पर विचार करता है, मूल्यांकन किसी वस्तु या प्रक्रिया का मूल्य निर्धारित करता है, शैक्षिक उद्देश्यों की किस सीमा तक प्राप्ति हुई है - यह निर्णय लेना ही मूल्यांकन है।

6. एन. सी. ई. आर. टी. (1960) के अनुसार मूल्यांकन से आशय है - उ० - पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हो रही - इसकी जानकारी लेना,
कक्षा में दिये जाने वाले अधिगम - अनुभव कितने प्रभावोत्पादक रहे हैं - इस तथ्य पर विचार करना,
शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति कितने उत्तम ढंग से हुई है - इस तथ्य को ज्ञात करना.

८. कोठारी कमीशन के अनुसार - मूल्यांकन है - उ० - सतत प्रक्रिया,

९. मूल्यांकन के बुनियादी सिद्धान्त हैं - उ० - मूल्यांकन प्रक्रिया में निर्णय एवं मूल्य अति आवश्यक है, मूल्यांकन में त्रुटियों के निराकरण के पर्याप्त उपाय करने चाहिए, मूल्यांकन प्रक्रिया को शिक्षण प्रक्रिया के विभिन्न स्तरों पर अनुसार लाना चाहिए.

१०. मूल्यांकन एक लक्ष्य नहीं है - साधन है, इसका तात्पर्य है - उ० - मूल्यांकन लक्ष्यप्राप्ति का साधन है, मूल्यांकन शिक्षण-अधिगम के मूल्यों के निर्धारण का साधन है, मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ साधन है।

१०. मूल्यांकन का उद्देश्य है - उ० - यह पाठ्यवस्तु के परिमार्जन में उपयोगी है, यह विभिन्न शिक्षण विधियों को प्रभावी बनाता है, यह वैज्ञानिक ढंग से शिक्षण-प्रक्रिया के विभिन्न बिन्दुओं को एकीकृत करता है.

११. मूल्यांकन अध्ययन करता है - उ० - छात्रों एवं शिक्षकों का.

१२. मूल्यांकन लाभप्रद है - शिक्षकों, प्रधानाचार्य तथा विद्यालय प्रबंधक के लिए.

१३. डॉ० पटेल ने शैक्षिक प्रक्रिया के सूत्र बताए हैं - शैक्षिक उद्देश्य, विषयवस्तु, अधिगम क्रिया एवं मूल्यांकन पद्धति.

१४. शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण में सावधानी बरतनी चाहिए - उ० - इसमें विषयवस्तु पर भलीभांति विचार किया जाए, इसमें अधिगम क्रियाओं का ठीक ढंग से विचार किया जाए, इसमें बालकों के ज्ञान, समझ, कौशलों में परिवर्तन हेतु पर्याप्त प्रयास किए जाएं.

16. अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) का तात्पर्य है – उ० - बालक के व्यवहार में होनेवाला परिवर्तन.

17. अधिगम अनुभवों को प्रदान करते समय शिक्षक को ध्यान रखना चाहिए – उ० - बालकों की आयु एवं मानसिक स्तर का.

18. उपयुक्त अधिगम अनुभवों का मानदण्ड है – उ० - क्या अधिगम अनुभव शिक्षक उद्देश्यों से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है?, क्या अधिगम अनुभव बालक के लिए सार्थक एवं संतोषप्रद है?, क्या ये अनुभव बालक की परिपक्वता के अनुकूल हैं?

19. अधिगम अनुभवों का आयोजन किया जाता है – उ० - बालकों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन के लिए, बालकों के व्यक्तित्व का विकास करने के लिए.

20. मूल्यांकन के प्रमुख उपकरण हैं – उ० - परीक्षण प्रक्रियाएँ (Testing Procedure), स्व-आलेख प्रविधियाँ (Self-reporting techniques), निरीक्षणात्मक विधियाँ (observational Methods)

21. मूल्यांकन में प्रयुक्त होनेवाली परीक्षण प्रक्रियाँ हैं – उ० - मौखिक परीक्षाएँ, लिखित परीक्षाएँ, निष्पादन परीक्षाएँ.

22. निरीक्षणात्मक विधियों के अन्तर्गत सम्मिलित है – उ० - वृत्तांत अभिलेख, जाँचसूची, निर्धारण मापनी.
निरीक्षणात्मक विधियों के अन्तर्गत सम्मिलित नहीं है – उ० - साक्षात्कार.

23. प्रक्षेपी प्रविधियों का उपयोग किया जाता है – उ० - बालकों के व्यक्तिगत एवं सामाजिक समायोजन को ज्ञात करने के लिए, बालकों की दमित इच्छाओं को ज्ञात करने के लिए, बालकों की मनोवृत्तियों को ज्ञात करने के लिए.

24. प्रक्षेपी मानक नहीं है – उ० - पिक्चर - फ्रस्ट्रेशन परीक्षण.
~~प्रक्षेपी मानक है – रोर्शा इंक ब्लॉट टेस्ट, टी०ए०टी०~~,

25. मूल्यांकन सहायक सिद्ध होता है – उ० - विद्यालय की गतिविधियों के सुधार में, पाठ्यक्रियाओं के संबंध में जानकारी प्राप्त करने में, शिक्षण के विभिन्न घटकों की जानकारी एकत्रित करने में.

26. मूल्यांकन में लिखित परीक्षाओं का प्रारम्भ माना जाता है – उ० - सन् 1840 से.

27. ऐतिहासिक दृष्टि से लिखित परीक्षाओं के साथ नाम जुड़ा है – उ० - होरेस मान का

28. उपलब्धि शब्द से आशय है – बालक के द्वारा अधिगमित विषयवस्तु की मात्रा, बालक का पाठ्यक्रम संबंधी ज्ञान का अर्जन.

२२. बालककी उपलब्धि आयु किसे कहेंगे ? - उ० - बालक की आयु के अनुसार किसी विषय विशेष में स्थिति।

२६. उपलब्धि परीक्षण मापन करते हैं - उ० - विषयवस्तु संबंधी ज्ञान का।

३०. प्रायः उपलब्धि परीक्षण होते हैं - शक्ति परीक्षण।

३१. उपलब्धि परीक्षण एवं निदानात्मक परीक्षण में संबंध है - उ० - निदानात्मक परीक्षण, उपलब्धि परीक्षण के ही अंग हैं।

३२. बालक की शैक्षिक आयु (Educational Age) से तात्पर्य है - उ० - बालक द्वारा विभिन्न विषयविशेष में प्रदर्शित सामान्य उपलब्धि का औसत मूल्य।

३३. बालक की शैक्षिक लब्धि (Educational quotient) - उ० - शैक्षिक आयु/वास्तविक आयु × 100

३४. उपलब्धि लब्धि (Achievement Quotient) का सही सूत्र है - उ० - शैक्षिक आयु/मानसिक आयु × 100.

३५. शिक्षक उपलब्धि परीक्षणों का निर्माण करते हैं, क्योंकि - उ० - छात्रों को वर्गीकृत किया जा सके, छात्रों को निर्देशित किया जा सके, छात्रों के अधिगम को उन्नत किया जा सके।

३६. उपलब्धि परीक्षण की सीमाएँ हैं -
उ० - शिक्षकों के द्वारा शिक्षण को इतना अधिक जटिल बना लेना जिससे कि छात्रों की अधिगम उन्नत कीया किया जा सके, इन परीक्षणों में अनेक अधिगम अनुभवों को समाहित नहीं किया जाता है, इनका समस्त शैक्षिक क्षेत्रों में मानकीकरण हानिकारक है।

३८. एक उत्तम उपलब्धि परीक्षण की शर्त है - उ० - सुनिश्चित उद्देश्यों की पूर्ति, छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल, व्यावहारिक रूप से उपयोगी।

३९. एक उत्तम उपलब्धि परीक्षण का सर्वोच्च गुण है - उ० - उसकी विश्वसनीयता, वैधता एवं वस्तुनिष्ठता।

४०. जो उपलब्धि परीक्षण दैनिक कक्षागत छात्र व्यावहारों के मूल्यांकन के लिए तैयार किए जाते हैं, उन्हें कहते हैं - उ० - शिक्षक निर्मित उपलब्धि परीक्षण।

४१. मानकीकृत उपलब्धि परीक्षण का गुण है - उ० - वस्तुनिष्ठता, वैधता एवं विश्वसनीयता।

४२. अध्यापक निर्मित उपलब्धि परीक्षण के प्रकार हैं - उ० - निबन्धात्मक परीक्षण, वस्तुनिष्ठ परीक्षण, निदानात्मक परीक्षण।

अध्यापक निर्मित उपलब्धि परीक्षण का प्रकार नहीं है - उ० - वाचन परीक्षण।

1. शिक्षण में सहायक सामग्री का उपयोग किया जाता है - उ० शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए, शिक्षण को मनोरंजनपूर्ण बनाने के लिए, शिक्षण को स्वाभाविक एवम् अधिक उपयोगी बनाने के लिए.

2. शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग है - उ० - शिक्षण को आयोजित एवं संवर्धित करना, अधिगम को उन्नत करना.

शिक्षण सहायक सामग्री का एक उपयोग नहीं है - शिक्षक को स्वतंत्र करना.

3. शिक्षण में सहायक सामग्री को होना चाहिए - उ० - शिक्षण उद्देश्यों के अनुकूल.

4. शिक्षक एक दृश्य-श्रव्य सामग्री है, क्योंकि - उ० - वह शिक्षण को बोधगम्य बनाने के लिए हाव-भाव, मुद्राओं आदि का सहारा लेता है.

5. दृश्य-श्रव्य सामग्री को कहते हैं - उ० - सहायक सामग्री.

7. दृश्य-श्रव्य सामग्री अपना प्रभाव छोड़ती है, क्योंकि - उ० - प्रत्यक्ष ज्ञान पर आधारित है, आकर्षक एवम् उत्सुकता प्रधान है, वैज्ञानिक सिद्धान्त का अनुपालन करती है.

8. दृश्य-श्रव्य सामग्री है - उ० - जिनमें नेत्र एवं कान दोनों ही अतिरिक्त सक्रियता ग्रहण करके सहभागिता करते हैं.

9. दृश्य-श्रव्य सामग्री की उपयुक्त परिभाषाएँ हैं -

उ० - ऐसी सामग्री जो एक कक्षा में लिखित या बोली जाने वाली सामग्री के अवबोध में सहायक होती है, ऐसी सामग्री जिसके माध्यम से शिक्षण-प्रक्रिया को उद्दीप्त किया जाता है, ऐसी सामग्री जो छात्रों की रुचि एवम् अवधान को केन्द्रित करती है.

10. दृश्य-श्रव्य सामग्री कार्य करती है - उ० - एक उत्प्रेरक (catalyst) की भाँति.

11. दृश्य-श्रव्य सामग्री से होता है - उ० स्थायी अधिगम, रोचकता, शिक्षण प्रभावशीलता.

12. दृश्य-श्रव्य सामग्री के मौलिक उद्देश्य हैं - उ० छात्रों में रुचि उत्पन्न करना, छात्रों में अधिगमित सामग्री की धारणा में वृद्धि करना, प्रतिभाशाली बालकों को अभिनव ज्ञान प्रदान करना.

13. दृश्य-श्रव्य सामग्री का उद्देश्य नहीं है - उ० - बालकों के लिए आकर्षक एवं चमत्कारिक घटनाओं का विज्ञापन करना.

14. दृश्य-श्रव्य सामग्री किसी पाठ्य सामग्री को सरल, सुबोध एवं

एवं स्पष्ट बनाती है, क्योंकि ये - उ० - अमूर्त प्रत्ययों को मूर्त अवस्था में परिवर्तित कर देती है, जटिल प्रक्रियाओं को सरलीकृत रूप में प्रकट करती हैं, छात्रों के स्तर को समझते हुए उनकी जिज्ञासाओं को शांत करती है

१४. दृश्य-श्रव्य सामग्री प्रायः बढ़ा देती हैं - उ० - छात्रों की धारणा (Retention), छात्रों का अवधान (Attention), छात्रों द्वारा विषयवस्तु की पहचान.

१५. दृश्य-श्रव्य सामग्री का महत्व है - उ० - अधिगम प्रक्रिया (Learning Process) में अभिप्रेरणा (Motivation) को स्थायी बनाना, शिक्षण-अधिगम को कुशल, प्रभावी एवम् आकर्षक बनाना, वैयक्तिक विभिन्नताओं पर ध्यान देना.

१७. दृश्य-श्रव्य सामग्री की विशेषता है - उ० - शिक्षक के कथनों को न्यूनतम करना, अनुभवजन्य ज्ञान प्रदान करना, वैज्ञानिक प्रवृत्ति का विकास करना.

१८. दृश्यश्रव्य सामग्री का आपके विचार में उपयोग है - उ० ये शिक्षण-अधिगम को उत्कृष्ट एवं प्रभावी बनाती है.

१९. शिक्षण के दौरान दृश्य-श्रव्य सामग्री से अधिक लाभ की प्राप्ति होती है - उ० - शिक्षक को क्योंकि वे भगजपच्ची से बच जाते हैं, छात्रों को क्योंकि वे शौक-शौक में सीखते हैं.

२०. दृश्य-श्रव्य सामग्री का कौनसा एक ऐसा गुण है जिसे आप छोड़ देना पसन्द करेंगे? - उ० - उच्च लागत (High Cost)

२१. दृश्य-श्रव्य सामग्री की अनुकूलता (Adoptability) से तात्पर्य यह है कि - उ० - दृश्य-श्रव्य सामग्री विषयवस्तु के अनुकूल होनी चाहिए.

२२. "विषयवस्तु का शिक्षण किया जाए, शिक्षण दृश्य-श्रव्य सामग्री का नहीं" इसका तात्पर्य है - उ० - शिक्षक को केवल शिक्षण उद्देश्य को स्पष्ट करते तथा उसकी सहायतार्थ शिक्षण सामग्री का प्रयोग करने का प्रयास करना चाहिए

२३. हम नेत्रों से ज्ञान की मात्रा ग्रहण करते हैं - उ० - ८५ प्रतिशत.

२४. दृश्य-श्रव्य सामग्री महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़पाती हैं, क्योंकि - उ० - बाह्यजगत का अधिकांश ज्ञान हम नेत्रों एवं कानों से प्राप्त

करते हैं जिनका संबंध दृश्य-श्रव्य सामग्री से होता है.

25. दृश्य-श्रव्य सामग्री का चयन करते समय आप कौन सी प्रमुख सावधानी बरतेंगे? - उ० - यह छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल हो, यह अधिगम लक्ष्यों की पूर्ति में सहायक हो, यह छात्रों की रुचियों को संवर्द्धित करने वाली हो.

26. दृश्य-श्रव्य सामग्री को कक्षा में ले जाते समय सावधानियाँ रखनी होंगी - उ० - उसे उचित ढंग से ले जाएँ, यह सामग्री खुली न रहे, जब उसे प्रदर्शित करना हो तभी खोला जाए.

27. 'एडगर डेल' का योगदान है - उ० - अनुभव शंकु.

28. अनुभव शंकु के शीर्षस्थ स्तर पर है - उ० - अमूर्त शिक्षण (सहायक सामग्री का चरम बिन्दु.

29. अनुभव शंकु में व्यवस्था की गई है - उ० - दृश्य-श्रव्य सामग्री की बढ़ती हुई अमूर्तता के क्रम में व्यवस्था.

30. आप एडगर डेल के अनुभव शंकु के आधार पर क्या पाते हैं? उ० - प्रत्यक्ष उद्देश्यपूर्ण अनुभव.

31. बालकों के प्रत्यक्ष ज्ञान सम्बन्धी अनुभवों का संबंध होता है - सरस्वती यात्राओं से, पर्यावरणीय अन्तःप्रक्रियाओं से, प्रयोग-प्रदर्शन से.

32. श्रव्य सामग्री में सम्मिलित करते हैं - उ० - रेडियो एवं टेपरिकॉर्डर को

33. प्रक्षेपण के आधार पर सहायक सामग्री को वर्गीकृत किया जाता है - उ० - प्रक्षेपी एवं अप्रक्षेपी विधियों में.

34. यदि शिक्षक सहायक सामग्री का क्रम देखें (दृश्य सामग्री, श्रव्य सामग्री, तथा दृश्य-श्रव्य सामग्री में) तो सर्वाधिक प्रभावशाली सामग्री होगी - उ० - दृश्य-श्रव्य सामग्री.

35. यदि आपके पास सीमित संसाधन हैं आप एक दृश्य श्रव्य प्रयोगशाला तैयार करते हुए किसको प्रधानता देंगे? - श्यामपट्ट, वास्तविक पदार्थ, मॉडल एवं स्लाइड्स.

36. श्यामपट्ट की आवश्यकता होती है - उ० - शिक्षक को.

37. श्यामपट्ट है एक - उ० - दृश्य सहायक सामग्री.

38. श्यामपट्ट के साथ किस आविष्कारक का नाम जुड़ा है - उ० - जेम्स विलियम का.

३९. एक अध्यापक के व्यक्तित्व को कक्षा प्रतिबिम्ब कहा जाता है
उ०- श्यामपट्ट पर किये गये कार्य को.
४०. शिक्षक स्वयं सहायक सामग्री की तरह हो सकता है, यदि उसमें गुण हैं - उ० - सुन्दर लेखन का, सुन्दर वक्तृत्व शैली का।
४१. 'ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड' ने सर्वप्रथम किस न्यूनतम सहायक सामग्री की संस्तुति प्रस्तुत की थी - उ० - श्यामपट्ट एवं चॉक.
४२. श्यामपट्ट का प्रयोग किया जा सकता है - उ० - पाठ का सारांश लिखने के लिए, पाठसम्बन्धी संक्षिप्त व्याख्या / नियम / सिद्धान्त / सूत्र लिखने के लिए, विभिन्न उपकरणों आदि के चित्र खींचने के लिए.
४३. श्यामपट्ट के प्रकार हैं - लकड़ी, सीमेंट, काँच
४४. चिकने रैक्सीन (Finished Rexin) से तैयार किए जाने वाले श्यामपट्ट को कहते हैं - उ० - रोलअप श्यामपट्ट
४५. लपटे श्यामपट्ट का प्रयोग संभव है - उ० - शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के लिए.
४६. श्यामपट्ट पर कार्य करते हुए शिक्षक - उ० - कक्षा का पर्यवेक्षण करना अति आवश्यक है.
४७. यदि आपका हैंडराइटिंग सामान्य स्थिति में अच्छा है, तो आपका ब्लैक बोर्ड पर हैंड राइटिंग होना चाहिए - उ० - कह नहीं सकते हैं.
४८. शिक्षकों की राय है कि - उ० - शिक्षक हैं, तो उन्हें श्यामपट्ट का भरपूर उपयोग करना ही चाहिए.
४९. "आप 'ब्लैक बोर्ड' को कक्षा में बाहर होने से पूर्व ऐसा छोड़िए जैसा आप स्वयं दूसरों से अपेक्षा करते हैं।"
५०. श्यामपट्ट पर कार्य में कौनसी सावधानी बरतेंगे?
उ० - श्यामपट्ट की ओर मुँह करके न बोलिए, श्यामपट्ट का लगभग २-२½ का अक्षर लिखिए ताकि कक्षा का अंतिम छात्र भी उसे पढ़ सकें, चित्रों को रंगीन चॉक से ही खींचिए
५१. श्यामपट्ट एवं शिक्षक के शरीर में परस्पर अनुपात होना चाहिए - लगभग ४५° का,

५२. श्यामपट्ट कार्य में छात्रों की सहभागिता होनी चाहिए - उ०- अधिकतम.

५३. वास्तविक पदार्थों को शिक्षण सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग करते समय आप क्या सही करेंगे ? - उ० - आप पेड़-पौधों को प्रदर्शित करेंगे जिन्हें आसानी से प्रस्तुत किया जा सकता है, आप ऐसे वास्तविक पदार्थ प्रयोग करेंगे जो छात्रों के अनुभव क्षेत्र से बाहर हैं और प्रदर्शनीय हैं.

५४. मॉडल से तात्पर्य है - ऐसी नकल या बनावट जो वास्तविक वस्तु की हूबहू प्रतिलिपि होती है तथा सामान्यतया प्रदर्शन हेतु उपलब्धता नहीं हो पा रही है,

५५. मॉडल द्वारा लाभ है - उ० - यथार्थ वस्तु के लघु चित्र का अवबोध एवं स्मृति धारणा.

५६. स्लाइड्स (Slides) का निर्माण किया जाता है - उ० - नेत्रों से अदृश्य वस्तुओं को स्लाइड बनाकर सूक्ष्मदर्शी द्वारा देखने के लिए.

५७. फोटोग्राफिक स्लाइड्स किस प्रकार की फिल्म पर तैयार की जाती है - उ० - स्लाइड के लिए प्रयुक्त होने वाली फोटोग्राफिक फिल्म के द्वारा.

५८. फिल्म स्ट्रिप एक सहायक सामग्री है - उ० अत्यधिक प्रभावी.

५९. फिल्म स्ट्रिप दिखाने से पूर्व कक्षा की तैयारी होनी चाहिए उ०- सम्बन्धित विषयवस्तु पर कक्षा में व्यापक विवेचना.

६०. डॉक्यूमेन्टरी फिल्मों का निर्माण किया जाता है - उ०- किसी विषय ~~विष~~वस्तु के केन्द्रिय घटक या घटना की जानकारी देने के लिए.

६१. चार्ट तैयारी करते समय ध्यान देने योग्य बात है-

उ० - रंगीन एवम् आकर्षक हों, उद्देश्यपूर्ण हों, प्रदर्शनीय हों.

६२. ग्राफ में पाया जाता है - उ० - दृश्य गुण.

६३. ग्राफ का निर्माण होना चाहिए - उ० - प्रभावशीलता के लिए, सुन्दरता के लिए, ध्यान आकृष्ट करने के लिए.

६४. छड़ आकार का ग्राफ बनाया जाता है - उ० - किसी चर को वर्गीकृत ढंग से प्रस्तुत करने के लिए.

६५. ऐसा ग्राफ, जिसमें बहुकोणीय रेखाएं बनती हों कहते हैं - उ० - पॉलीगॉन (Polygon)

यदि आपको वायु में मिश्रित उनके घटकों की मात्रा का प्रदर्शन
६७. करना है, तो अपेक्षाकृत उत्तम चित्र होगा -उ० -पाई ग्राफ.
६८. मानचित्र एक दुर्लभ दृश्य सामग्री है, क्योंकि यह -उ०- दो स्थानों के मध्य की दूरी बताता है, स्थानविशेष का क्षेत्रफल बताता है, स्थानविशेष की भौगोलिक जलवायु का संकेत देता है।
६९. कक्षा में चित्र प्रदर्शन करते समय आप क्या सावधानी बरतेंगे?
उ० - ये विषय एवं प्रसंग के अनुरूप हों, ये प्राकृतिक एव ~~वास्त~~ वास्तविक दिखें, ये सही एवं शुद्ध अनुपात में हो.

७०. एक शिक्षक को कक्षा में चित्रों का प्रयोग करना चाहिए
उ० - केवल जब आवश्यकता हो तभी प्रयोग करना चाहिए.
७१. कौनसी सहायक सामग्री का दूरगामी लाभदायक परिणाम होगा? - जब आप स्वयं चित्र ~~कि~~ खींचें और छात्रों को खींचने के लिए प्रेरित करें.
७२. चित्रों का कक्षा में उपयोग किया जाना चाहिए - उ० - छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल, छात्रों की रुचियों के अनुकूल, छात्रों की योग्यताओं के अनुकूल.
७३. प्रायः श्यामपट्ट पर अनेक चित्र बनाते समय चित्रांकन क्रम रखना चाहिए -उ०- दाहिनी ओर से क्रमशः बाईं ओर.
७४. संग्रहालय छात्रों की रुचियों को सन्तुष्ट करने के लिए बनाए जाते हैं तथा ये ~~शिक्षण को~~ शिक्षण अधिगम को बनाते हैं - उ०- सरल एवं सुगम्य, प्रत्यक्ष एवम् अनुभवजन्य, उत्सुकता पूर्ण एवं ~~कौशल~~ कौशलयुक्त.
७५. संग्रहालय की व्यवस्था का महत्वपूर्ण बिन्दु है -
उ० - सभी वस्तुएँ क्रमिक एवं व्यवस्थित ढंग से सुसज्जित हों, प्रत्येक वस्तु पर उसकी विस्तृत जानकारी हेतु टैग (tag) लगा, प्रत्येक वस्तु छात्रों के स्पर्श से दूर हो.
७६. शैक्षिक दृष्टि से लाभप्रद संग्रहालय है - उ० - जनसाधारण संग्रहालय, स्थानीय संग्रहालय, स्कूल संग्रहालय.
७७. स्कूल संग्रहालय में संग्रहीत कर सकते हैं - उ० - सभी विषयों से संबंधित दृश्य सामग्री जो व्यवस्थित ढंग से सुसज्जित की गई हो.

७८. प्रदर्शनी आयोजन से विद्यालय को लाभ है, उ०- विद्यालय की अतिरिक्त आय हो जाती है, विद्यालय का ~~मुफ्त~~ मुफ्त में विज्ञापन हो जाता है, विद्यालय कर्मियों का मुफ्त में मनोरंजन हो जाता है,

७९. प्रदर्शनी का आयोजन करते समय केन्द्रीय विचार होना चाहिए - छात्र हित.

८०. प्रदर्शनी के ~~उद्देश्य~~ आयोजन में विचारणीय बिन्दु है -
उ०- प्रदर्शनी का एक 'थीम' (Theme) होना चाहिए, प्रदर्शनी की व्यवस्थाओं का दायित्व छात्रों को देना चाहिए, प्रदर्शनी का योजना नुसार कार्यान्वयन किया जाना चाहिए.

८१. बुलेटिन बोर्ड का उपयोग किया जाता है - उ० - विद्यालय कार्यक्रम का प्रदर्शन करने के लिए, विभिन्न समाचार पत्रों में सूचनाओं के संकलन के लिए, शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सूचनाओं के सम्प्रेषण के लिए.

८२. बुलेटिन बोर्ड पर प्रदर्शित सामग्री का शिक्षक ~~छात्रों~~ को छात्रों के द्वारा कार्य कराया जाना चाहिए - उ०- उक्त सामग्री का संकलन, उक्त सामग्री का सम्पादन, उक्त सामग्री का व्यवस्थित संगठन.

८३. बुलेटिन बोर्ड एवं फ्लैनेल बोर्ड में - उ०- आकार-प्रकार एवं प्रदर्शित की जाने वाली सामग्री का अन्तर है.

८४. फ्लैनेल बोर्ड प्रायः बनाये जाते है - उ०- फलालैन से.

८५. श्रव्य सहायक सामग्री में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है - उ० रेडियो को.

८६. रेडियो पाठों का प्रसारण किया जाना चाहिए - उ०- छात्रों को पूर्व सूचना देकर.

८७. स्लाइड्स (Slides) को प्रदर्शित करने के लिए जिस यंत्र का प्रयोग किया जाता है, उसे कहते हैं - उ०- स्लाइड प्रोजेक्टर.

८८. स्लाइड का आकार होता है - उ०- ३५ मिमी.

८९. स्लाइड्स के प्रोजेक्शन के साथ-साथ शिक्षक करता है - उ० - उसका शिक्षण में तर्कसंगत सम्मिश्रण.

९०. एपीडायास्कोप (Epidiascope) क्या है? - ~~उ०~~ उ०- पारदर्शी एवं अपारदर्शी वस्तुओं का पर्दे पर प्रक्षेपण.

९१. ओवर हैड प्रोजेक्टर' में प्रदर्शित सामग्री का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है - उ०- बोलने वाले की पीठ के पीछे स्क्रीन पर और सिर के ऊपर,

ओवरहैड प्रोजेक्टर का प्रयोग करते हैं - उ. चित्रों के निर्माण को समझाने के
९२. लिए, किसी कठिन विषयवस्तु को समझाने के लिए, किसी विषयवस्तु
को एक बड़े समूह में प्रदर्शित करने के लिए.
मैजिक लालटेन को कहा जाता है - उ. - डायास्कोप.
९३. मैजिक लालटेन का सर्वाधिक प्रयोग किया जाता है - उ. - ग्रामीण
९४. परिवेश में.
एपीडायास्कोप का लाभ है - उ. - पुस्तक के अन्य स्थान से लिए
९५. गए चित्रों को चार्ट के आकार का बड़ा बनाने के लिए, चार्ट तैयार
करने के लिए.
ओवरहैड प्रोजेक्टर द्वारा विषय सामग्री को तैयार किया जाता है - उ.
९६. स्टेण्डर्ड ट्रांसपेरेन्सीज पर.
९७. ट्रांसपेरेन्सीज पर लिखने के लिए उपकरण प्रयोग किये जाते हैं
- उ. - अलग प्रकार के स्थायी इंक पैन.
९८. ओवरहैड प्रोजेक्टर को आप प्रयोग करते समय कौनसी सावधानी
प्राथमिकता के आधार पर सबसे पहले रखेंगे? - उ. - प्रयोग के समय
बल्ब जलाना और प्रयोग के तत्काल बाद उसे बुझा देना.
९९. फिल्म प्रोजेक्टर जिन्हें विद्यालयों में प्रयोग किया जाता है प्रायः होते
हैं - उ. - 8 मिमी के और 16 मिमी के.
१००. शैक्षिक टेलीविजन कार्यक्रम है - उ. - स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम, सांस्कृतिक
कार्यक्रम, सामान्य ज्ञान संवर्द्धन कार्यक्रम.
१०१. 'एडूसेट' (Edusat) है - उ. - शिक्षण उपग्रह.
१०२. टेलीविजन का शिक्षण में योगदान है - उ. - अत्यधिक.
१०३. टेलीविजन नेटवर्क को शिक्षा में प्रयोग करने के लिए क्या उपाय
करने चाहिए? - उ. - प्रत्येक विद्यालय में - शिक्षकों के पर्यवेक्षण में
दूरदर्शन पाठ्य सामग्री का प्रसारण, - शैक्षिक दूरदर्शन चैनल्स की पर्याप्त
सम्भावनाएँ, - दूरदर्शन शिक्षण के लिए आवंटित समय का सदुपयोग.
१०४. टेलीविजन द्वारा शिक्षण किया जाता है - उ. - वास्तविक, अवबोधपूर्ण
एवं मनोरञ्जनात्मक.
१०५. पारम्परिक टेलीविजन शिक्षण का एक दोष है - उ. - शिक्षक-छात्र
अन्तःक्रियाओं का अभाव.
१०६. कम्प्यूटर है - उ. - शिक्षण के लिए वरदान.

१८७. शिक्षण मशीन के जन्मदाता कहे जाते हैं - उ०- एस०एस० प्रैसी.
१८८. शिक्षण सहायक सामग्री के द्वारा किया जाना चाहिए - उ० प्रभावशाली शिक्षण.

1. अनुसंधान किसी राष्ट्र के 'पहिचान चिह्न' कहे जाते हैं क्योंकि -
उ०- अनुसंधान राष्ट्र की प्रगति के द्योतक है, अनुसंधान मानव विकास को महत्व देते हैं, अनुसंधान अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के अर्जन में सहायक हैं.

2. 'अनुसंधान' का संधि विच्छेद करने पर प्राप्त दो शब्द होंगे - उ०- अनु + संधान.

3. हिन्दी भाषा में शब्द 'अनुसंधान' से तात्पर्य है - उ० - लक्ष्य का अनुगामी होना.

4. 'अनुसंधान' शब्द लिया गया है - उ०- प्राचीन तीरंदाजी के लिए उपयोगी लक्ष्यों की प्रेरणा के आधार पर, मॉडर्न राइफल निशानेबाजी के लक्ष्यों के आधार पर.

5. मॉउली (M.oulp) के कथनानुसार - उ० समस्याओं के समाधान के लिए व्यवस्थित रूप में बौद्धिक ढंग से वैज्ञानिक विधि का प्रयोग एवं अध्यापन ही अनुसंधान है.

6. अनुसंधान आधारित होते हैं - उ०- वैज्ञानिक विधि पर.

7. यदि एक सामान्य व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में अनेक प्रकार के प्रयोग एवं प्रेक्षण करता है तथा इसी आधार पर निष्कर्ष प्राप्त करता है, इस रूप में उस व्यक्ति को मानेंगे - उ०- एक सामान्य व्यक्ति.

8. एक वैज्ञानिक के प्रयोग एवं परीक्षणों सम्बन्धी प्रेक्षण होते हैं - उ०- वैज्ञानिक नियमों पर आधारित.

9. 'अवैज्ञानिक' होने के लिए पर्याप्त है - उ०- कुतर्क, अंधविश्वास, असहमति.

10. यदि आप एक भूल करने के बाद उसकी पुनः पुनरावृत्ति करते आ रहे हैं आपको कहा जाएगा - उ०- बेवकूफ.

11. यदि एक समस्या के समाधान एवं प्राप्त परिणामों की विवेचना के लिए आप वैज्ञानिक पदावली का प्रयोग कर रहे हैं तो यह प्रक्रिया कही जायेगी - उ० - वैज्ञानिक.

12. मैकग्रेथ एवं वाटसन (Mc Grath and watson) ने अनुसंधान के लिए कहा है - उ० - खोज प्रविधि का प्रयोग कार्य.

१३. अनुसंधान समस्याओं के अध्ययन की एक विधि है, जहाँ अनुसंधान में प्रदत्त तथ्यों के द्वारा समस्याओं के हलों की प्राप्ति की जाती है। यह कथन है – उ० – बेस्ट का.

१४. अनुसंधान एक समस्या के प्रति ईमानदारी एवं व्यापक रूप में समझदारी के साथ की गई खोज है। यह कथन है – ~~बेस्ट का~~ वाटसन का.

१५. एक अनुसंधान पर शर्त लागू होती है कि वह – उ० – ईमानदारीपूर्ण खोज हो, तथ्यों एवं सिद्धान्तों की जानकारी हो, उपलब्धि एवं निष्कर्ष प्रामाणिक हों.

१६. अनुसंधान की विशेषता है – उ० – गम्भीर एवं गहन अध्ययन से पूर्ण, विवेकपूर्ण, प्रामाणिक निष्कर्षों पर आधारित.

१७. एक अनुसंधान को होना चाहिए – उ० – वस्तुनिष्ठ, वैध, विश्वसनीय.

१८. एक अनुसंधान की विशेषता नहीं हो सकती है – उ० – दूषित प्रदत्त संकलन, दूषित प्रदत्त विश्लेषण, दूषित निष्कर्ष

१९. अनुसंधान में 'पूर्वकथन' की विशेषता होने के लिए आवश्यक है कि – उ० – यह ठोस प्रदत्तीय आधार पर सम्पन्न किया गया हो.

२०. एक अनुसंधानकर्ता में होनी चाहिए – उ० – वैज्ञानिक अभिवृत्ति.

२१. यदि आप स्वयं को एक वैज्ञानिक के रूप में देखना चाहते हैं तो स्वयं में क्या परिवर्तन ~~करना~~ करना पसन्द करेंगे ?
– उ० – वैज्ञानिक अभिवृत्तियों का विकास.

२२. विश्वसनीयता अनुसंधान का मूलभूत गुण है जोकि इसके साथ-साथ परिचायक होता है – उ० – वैधता का.

२३. यदि एक ही अनुसंधान को उन्हीं परिस्थितियों में दूसरी बार दोहराने पर प्राप्त परिणामों में अन्तर ज्ञात हो तो ऐसे अनुसंधान को आप कहेंगे – अविश्वसनीय.

२४. अनुसंधान की रिपोर्टिंग की जानी चाहिए – उ० – वैज्ञानिक ढंग से.

२५. अनुसंधान सदैव होता है – उ० – नवीन ज्ञान की खोज करनेवाला, प्राचीन ज्ञान का सत्यापन करनेवाला, ज्ञान के मध्य होनेवाले रिक्तस्थान को भरनेवाला.

उपागम = निकट, आना, वांदा, छाटना, कष्ट/अनुभूति, स्वीकृति.

२६. प्रायः अनुसंधानों के ~~आँकड़े~~ आँकड़े होते हैं - उ० - परिमाणात्मक, गुणात्मक.

२७. सामान्यीकरण (Generalisation) से तात्पर्य है - उ० - किसी अनुसंधान निष्कर्ष को बृहद् स्तर पर लागू करना.

२८. वस्तुनिष्ठ प्रेक्षणों की आवश्यकता अनुभव की जाती है - उ० - सभी परिस्थितियों में.

२९. अनुसंधान के उद्देश्य हैं - उ० - तथ्यात्मक उद्देश्य, सत्यात्मक उद्देश्य, सैद्धान्तिक उद्देश्य.

३०. अनुसंधान के सैद्धान्तिक उद्देश्य होते हैं - उ० - व्याख्यात्मक.

३१. अनुसंधान के तथ्यात्मक उद्देश्यों की विशेषता है - उ० - ये वर्णनात्मक प्रकृति के होते हैं.

३२. तथ्यात्मक उद्देश्य अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं - उ० - ऐतिहासिक अनुसंधानों में.

३३. विकासात्मक प्रकार के अनुसंधानों के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है - उ० - क्रियात्मक अनुसंधान को.

३४. योगदान की दृष्टि से समस्त अनुसंधानों को वर्गीकृत किया जाता है - उ० - मौलिक - व्यवहृत - एवं क्रियात्मक अनुसंधान.

३५. अनुसंधान उपागम हैं - उ० - अनुदैर्घ्य एवं क्रॉस काट.

३६. प्रायः नवीन ज्ञान का प्रतिपादन एवं वृद्धि की जाती है - उ० - मौलिक अनुसंधानों के माध्यम से.

३७. सर्वेक्षण अनुसंधानों को वर्गीकृत किया जाता है - उ० - मौलिक तथा प्रयोगात्मक अनुसंधानों के अन्तर्गत.

३८. अतीत के अध्ययन के द्वारा नवीन तथ्यों में खोज करने की प्रक्रिया से संबंधित अनुसंधान है - ऐतिहासिक अनुसंधान.

३९. मौलिक अनुसंधान (Fundamental Research) के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों को प्रयुक्त किया जाता है - उ० - अनुप्रयुक्त/व्यवहृत अनुसंधान में.

४०. अनुसंधान है (मानव प्रकृति के संबंध के संदर्भ में) - उ० एक पृच्छा अभिवृत्ति (Attitude of Enquiry)

४१. एक अनुसंधान की बुनियादी आवश्यकता है - उ० योजना तैयार करना.

४२. नवीन मूल्यों एवं सिद्धान्तों की स्थापना की जाती है - उ० दार्शनिक अनुसंधानों के द्वारा.

४४. क्रियात्मक अनुसंधान है - उ० - एक प्रकार का तात्कालिक समस्याओं के समाधान के लिए किया जाने वाला अनुसंधान.

४४. ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना को वर्गीकृत किया जा सकता है - उ० - क्रियात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत.

४५. 'गंगा एक्शन प्लान' - एक क्रियात्मक अनुसंधान योजना कही जा सकती है क्योंकि इसमें है - उ० - एक सुनिश्चित लक्ष्य प्राप्ति, एक सुनिश्चित अवधि, एक सुनिश्चित आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था.

४६. अनुदैर्ध्य उपागम का संबंध है - उ० - दीर्घकालिक अनुसंधान से.

४७. उपागम के आधार पर अनुसंधानों के वर्गीकरण की युक्ति का जन्म हुआ है - उ० - जैविकीय विज्ञानों से.

४८. अनुदैर्ध्य उपागम में अनुसंधानों का प्राथमिक रूप से संबंध पाया जाता है - उ० - कालक्रम से (Temporal sequence)

४९. क्रॉस-काट अनुसंधानो (cross-sectional Researches) का आधारीय प्रकृति का संबंध है - उ० - न्यादर्श से.

५०. अनुदैर्ध्य उपागम एवं क्रॉस काट उपागम में एक अन्तर है - उ० - अनुदैर्ध्य में एक ही प्रयोज्य समूह दीर्घकाल तक बना रहता है जबकि क्रॉस काट में न्यादर्श द्वारा चयन करके तत्काल प्रदत्त एकत्रित कर लिये जाते हैं,

अनुदैर्ध्य में अनुसंधानकर्ता को अत्यधिक धैर्य से काम करना होता है, किन्तु क्रॉस काट में नहीं,

अनुदैर्ध्य अध्ययन विशिष्ट व्यक्तियों के विशिष्ट परिस्थितियों में किये जाते हैं जबकि क्रॉस काट में ऐसा नहीं होता.

---

१. ~~माडले~~ माडले (Mooly) के अनुसार अनुसंधान विधियों के प्रकार है - उ० - ऐतिहासिक विधि, सर्वेक्षण विधि, प्रयोगात्मक विधि.

२. ऐतिहासिक विधि के प्रकार है - उ० ऐतिहासिक - संवैधानिक एवं प्रलेखी.

३. सर्वेक्षण विधि में न्यादर्श की स्थिति होती है - उ० - अनिवार्य रूप से.

४. सर्वेक्षण विधि में नियन्त्रण की आवश्यकता - उ० - आंशिक रूप से होती है.

५. बाह्य एवम आन्तरिक वैधता उपस्थित रहती है - उ० - घटनोत्तर विधि से प्राप्त निष्कर्षों में

६. कौन सी विधि न्यादर्श, नियंत्रण एवं निष्कर्ष वैधता सम्बन्धी समस्याओं से मुक्त रहती है? - उ० - ऐतिहासिक विधि.

७. निष्कर्ष सम्बन्धी आन्तरिक वैधता का संबंध है - उ० - प्रयोगात्मक विधि से.

८. घटनोत्तर विधि का संबंध होता है - उ० न्यादर्श से, नियंत्रण से, निष्कर्ष संबंधी वैधता से.

९. न्यादर्श, नियंत्रण एवं निष्कर्ष वैधता के संदर्भ में ~~कौन~~ कौनसी विधियाँ लगभग एकसमान प्रकृति की हैं? - उ० - ऐतिहासिक एवं दार्शनिक विधि.

१०. सर्वेक्षण विधि का संबंध रहता है - उ० - उन अभ्यासों से जो निरन्तर चालू हैं, ऐसी प्रक्रियाएँ जो ~~निरन्तर~~ अनवरत चल रही हैं, ऐसे अनुभव जो किए जा रहे हैं.

११. सर्वेक्षण विधि की विशेषताएँ हैं - उ० - यह एक साथ वृहद् जनसमूह से प्रदत्त एकत्र करने में समर्थ है, इसमें पूर्ण परिभाषित समस्या पर कार्य किया जाता है, इस विधि के उद्देश्य निश्चित एवं विशिष्ट होते हैं.

१२. कौन सी विशेषताएँ सर्वेक्षण अनुसंधान विधि से संबंधित हैं - उ० - यह अपेक्षाकृत अधिक जटिल एवं परिवर्तनशील है, इसमें कल्पना-पूर्ण नियोजन की आवश्यकता होती है, यह व्यक्तियों की विशेषताओं से संबंधित नहीं है.

कौन सी एक विशेषता सर्वेक्षण विधि से संबंधित नहीं है? - उ० - यह वैज्ञानिक सिद्धान्तों का संगठन करती है.

१३. सर्वेक्षण विधि में सूचनाएँ संकलित की जाती हैं - उ० - वर्तमान स्थिति से संबंधित, अनुसंधान के लक्ष्य से संबंधित, अनुसंधान की लक्ष्यप्राप्ति से संबंधित.

१४. ~~सर्वेक्षक~~ सर्वेक्षण विधि की विशेषता है - उ० - स्थानीय स्तर पर समस्याओं का समाधान करना, ज्ञान पिंड की मात्रा में वृद्धि करना, वर्तमान समस्याओं का समाधान करना.

१५. सर्वेक्षण विधि को वर्गीकृत किया जाता है - उ०- चर की प्रकृति के आधार पर, मापन योग्य वर्ग या समूह के आधार पर, प्रदत्त संकलन स्रोत के आधार पर.

१६. चर की प्रकृति (Nature of variable) के आधार पर सर्वेक्षण विधि ~~सर्वेक्षण विधि~~ के प्रकार हैं - स्तरीय सर्वेक्षण एवं सर्वेक्षण अनुसंधान.

१७. विवरणात्मक अध्ययन का संबंध है - उ०- सर्वेक्षण अनुसंधान विधि से, प्रयोगात्मक अनुसंधान विधि से, व्यक्तिगत अध्ययन विधि से.

१८. विवरणात्मक अध्ययन (Descriptive Research) का उद्देश्य है -
उ०- वर्तमान परिस्थितियों को पहचानना एवम उन पर केन्द्रित करना, विषय अथवा घटना की स्थिति का शीघ्र अध्ययन करना, तथ्यों को प्राप्त करना.

१९. ऐतिहासिक अनुसंधान विधि का संबंध है - उ०- सभी विषयों के अन्तर्गत होनेवाली ऐतिहासिक खोजों से.

२०. ऐतिहासिक अनुसंधान से तात्पर्य है - उ०- ऐतिहासिक समस्याओं के अध्ययन हेतु वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करना, ऐतिहासिक तथ्यों एवं वर्तमान घटनाओं में संबंध स्थापित करना, अतीत की घटनाओं का ~~के~~ विशिष्ट ~~छ~~ अन्वेषण करना.

२१. ऐतिहासिक अनुसन्धान विधि के सोपान हैं - उ०- समस्या की पहचान करना, प्रदत्त संकलन करना, प्रदत्तों की समालोचना करना.

२२. ऐतिहासिक अनुसंधान विधि के पदों का ~~क~~ वैज्ञानिक क्रम है
उ० - समस्या की पहचान करना - प्रदत्त ~~सं~~संकलन करना; प्रदत्त समालोचना करना, ~~प्र~~ प्रदत्त अर्थापन.

२३. दार्शनिक अनुसंधान विधि की आवश्यकता अनुभव की जाती है - उ०- सभी सामाजिक विज्ञानों के लक्ष्यों को खोजने संबंधी अनुसंधानो में.

२४. तत्वमीमांसा से संबंधित अनुसंधान हेतु प्रश्न (समस्या) हो सकती है - उ०- अस्तित्व से क्या तात्पर्य है, वस्तुओं के अस्तित्व की क्या विशेषताएं हैं, वस्तुओं की वैयक्तिकता को कैसे ज्ञात ~~क~~ किया जा ~~सक~~ सकता है

२५. ज्ञानमीमांसा के क्षेत्रान्तर्गत किस समस्या का समाधान किया जा सकता है – उ० - अपने निजी विचारों के अतिरिक्त मस्तिष्क और क्या ज्ञान पाता है, किस प्रकार यह ज्ञान एक ही समय में विषयनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ हो जाता है, सत्य एवम् असत्य के बारे में निर्णय लेने का क्या आधार हो सकता है.

२६. नीतिशास्त्र का संबंध है – व्यक्ति की मान्यताओं से, अधिनियम की प्रकृति से, नागरिक नियम एवम् उनके अधिकारों से

२७. प्रयोगात्मक विधि है – उ० - परिकल्पना परीक्षण की एक विधि.

२८. प्रयोगात्मक विधि के सन्दर्भ में असत्य है – उ० - प्रयोगशाला एक उपयोगी विधि मात्र है.

२९. प्रयोगात्मक विधि की मूलभूत अवधारणा का संबंध है – उ० - एक चर नियम से.

३०. एक चर नियम के जन्मदाता हैं – उ० - जे०एस० एस० मिल०

३१. चर (Variable) से तात्पर्य है – उ० - एक ऐसा गुण जिसके विभिन्न मूल्य हो सकते हैं, किसी घटना का ऐसा स्वरूप जो अपनी उपस्थिति से किसी घटना को प्रभावित करता है.

३२. चर प्रायः होते हैं – उ० - चार प्रकार के - स्वतंत्र, परतंत्र, मध्यवर्ती एवं नियंत्रित चर.

३३. प्रयोगात्मक विधि की विशेषता है – उ० यह विधि एक चर नियम का अनुपालन करती है, यह अनुसंधान की एक प्रायोगिक विधि है जो शुद्ध उधार ~~विज्ञानों~~ विज्ञानों से उधार ली है, यह वैज्ञानिक सिद्धान्त का अनुसरण करती है.

३४. प्रयोगात्मक विधि का पद है – उ० - समस्या चयन एवं परिभाषीकरण, संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण, प्रायोगिक प्रारूप.

३५. प्रयोगात्मक विधि के प्रकार हैं – एक समूह प्रयोग, समानांतर समूह प्रयोग, क्रमावर्तन समूह प्रयोग,

प्रयोगात्मक विधि का एक प्रकार नहीं है – रेजीड्यू (Residue) समूह प्रयोग.

३६. लिंडक्विस्ट ने प्रायोगिक प्रारूप बताए हैं – उ० - 23 प्रकार के.

३७. घटनोत्तर अनुसंधान से तात्पर्य है – उ० - घटना के बाद किए जाने वाले अनुसंधान.

३८. घटनोत्तर में प्रायः अनुसंधान संबंधी चरों की स्थिति होती है -उ०- प्रायः स्वतंत्र चर अनुसंधान पूर्व ही घटित हो चुका होता है, अनुसंधानकर्ता एक आश्रित चर अथवा परतंत्र चरों से प्रारम्भ करता है, इसके बाद वह इनके मध्य संभावित संबंधों को प्रतिगामी रूप में अध्ययन करता है.

३९. बाल अपराधी प्रवृत्तियों पर अनुसंधान के लिए सर्वोत्तम विधि है- उ०- घटनोत्तर अनुसंधान विधि.

४०. घटनोत्तर अनुसंधान के सहसम्बन्धात्मक प्रारूप में अध्ययन किया जाता है - उ० - उस चर का जिसे पूर्व में मापा गया है और जो दूसरे चर का कारण बनता है, उस दूसरे चर का जिसे मापा जा रहा है तथा वह पूर्व चर का कारण है, उस तृतीय चर का जो मापा नहीं जा सकता है, किन्तु प्रथम एवं द्वितीय चर का कारण है.

४१. केस-स्टडी विधि संकेत करती है - उ० - किसी इकाई के निकट अध्ययन की ओर, किसी इकाई के गहन अध्ययन की ओर, किसी इकाई (केस) के संचयी अध्ययन की ओर.

४२. 'केस-स्टडी' का योगदान है - उ० - किसी इकाई (case) की जाति, आयु, लिंग, धर्म, समस्याएँ, बुद्धिस्तर, आर्थिक स्तर आदि के अध्ययन एवं प्रदत्त संकलन में, संबंधित व्यक्तियों के ऐतिहासिक तथ्यों का मूल्यांकन करने में, सामाजिक, संस्थागत समूहों एवं परिवारों का अध्ययन करने में.

४३. केस-स्टडी के उद्देश्य हैं - उ० - उपचारात्मक, निदानात्मक, शैक्षिक.

४४. केस-स्टडी के प्रमुख प्रकार हैं - उ० - छः

४५. एक उत्तम केस-स्टडी की कसौटी है - उ०- सात्यता, प्रदत्त पूर्णता, प्रदत्त वैधता.

४६. 'केस-स्टडी' (इकाई अध्ययन) प्रदत्त संकलन करती है - उ० - स्वयं व्यक्ति से, जीवन-वृत्त लेखों से, राजकीय प्रमाणों से.

४७. केस-स्टडी विधि के सोपानों का उचित क्रम है - उ० - अध्ययन केन्द्र बिन्दु, प्रदत्त-संकलन, कारण-तथ्य के लक्षणों की पहचान, सामंजस्य उपचार, अनुवर्ती सेवा कार्यक्रम.

४८. केस-स्टडी की सीमा है - उ० - इसमें व्यक्तिनिष्ठता पाई जाती है, इसमें अवधारणाओं का सूत्रपात करना सम्भव नहीं है, इसमें जटिल सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग नहीं किया जा सकता है

४९. अभिक्रिया x प्रयोज्य प्रारूप से तात्पर्य है - उ० - ऐसा प्रायोगिक प्रारूप जिसमें सभी क्रियाएँ समान प्रयोज्यों को बारी-बारी से प्रस्तुत करती हैं, ऐसा प्रायोगिक प्रारूप जिसमें प्रयोज्य संबंधी त्रुटियों को समाप्त किया जाता है.

५०. यादृच्छिक पुनरावृत्ति अभिकल्प (Random Replication Design) से लाभ है - उ० - यह लगभग सभी प्रकार की त्रुटियों (न्यादर्श एवं प्रायोगिक परिस्थिति) को नियंत्रित कर पाता है, इसमें संस्थाओं के प्रभावों का अध्ययन एक साथ किया जा सकता है, यह समाज विज्ञान में प्रचुरता से प्रयोग किया जाता है.

---

१. अनुसंधान है - उ० - एक मूल्यपरक प्रक्रिया.

२. अनुसंधान को मूल्य परक होना चाहिए - उ० - मानव के हित में.

३. अनुसंधान एक सौन्दर्यबोधयुक्त प्रक्रिया है. यहाँ पर सौन्दर्यबोध से अभिप्राय है - उ० - अनुसंधान में शोध मूल्यों की पूर्ति से.

४. दर्शनशास्त्र के तीन अंगों में से मूल्यों का अध्ययन किया जाता है - उ० - एथिक्स के अन्तर्गत.

५. अनुसंधानकर्ता के मूल्यों एवं गुणों का स्थानान्तरण होता है - उ० - उसके द्वारा सम्पन्न किए जाने वाले समस्त कार्यों में.

६. अनुसंधान की एथिक्स का संबंध है - उ० - वैज्ञानिक विधि से, विश्वसनीयता से, मानवीयता से.

अनुसंधान की 'एथिक्स' का संबंध नहीं है - उ० - व्यक्तिगत स्वार्थ से

७. अनुसंधान के संदर्भ में त्रुटिपूर्ण ~~कथन~~ कथन है - उ० - अनुसंधान आविष्कार हेतु किया जाता है, अनुसंधान ख्याति प्राप्त करने के लिए किया जाता है, अनुसंधान उपाधि से विभूषित होने के लिए किया जाता है.

८. यदि एक अनुसंधानकर्ता किसी समस्या के प्रति पूर्वाग्रह रखता है, तो उसके द्वारा किये जाने वाले अनुसंधान को कहा जाएगा. - उ० - दूषित अनुसंधान.

९. आप अपने अनुसंधान को मूल्यपरक बनाने के लिए क्या उपाय करेंगे।
उ- आप उसमें ईमानदारी एवं विश्वास को सुनिश्चित करेंगे.
१०. अनुसंधान के मूल्यों का ह्रास हो जाता है, जबकि एक -उ०-
अनुसंधानकर्ता पक्षपातपूर्ण व्यवहार करे, अनुसंधानकर्ता भ्रांतियों का शिकार हो जाए, अनुसंधानकर्ता काल्पनिक अवधारणाओं को अन्तिम रूप से स्वीकार कर ले.
११. यदि एक शोधकर्ता व्यक्तिनिष्ठ ढंग से अनुसन्धान कार्य में संलग्न है, तो उसका परिणाम होगा - अशुद्ध लक्ष्य निर्माण, अशुद्ध उपकरण चयन, अशुद्ध अनुसंधान प्रदत्त संकलन
१२. अनुसंधान आँखों पर पट्टी बाँध कर नहीं किया जाना चाहिए- इसका आशय है - उ- अनुसंधान सभी प्रकार के व्यक्तिगत प्रभावों से मुक्त हो, अनुसंधान सदैव अपनी व्यक्तिगत दुर्बलताओं से मुक्त हो, अनुसंधान सदैव स्वविचारों से पृथक् हो.
१३. अनुसंधान की वस्तुनिष्ठता वृद्धि करती है -उ०- उसकी विश्वसनीयता, वैधता एवं निष्पक्षता में.
१४. प्रायः कुछ शोध छात्र सोचते हैं कि यदि अपने डिसरटेशन (लघु शोध ग्रंथ) को थोड़ा आकार-प्रकार में बढ़ा दें, तो वह पी० एच० डी० की उपाधि के लिए अनुकूल हो जायगा. ऐसा विचार परिचायक है - उ०- अनुसंधान कर्ता की भ्रांति का.
१५. अनुसंधान में नैतिक परक मूल्यों का समावेश करने के लिए अनिवार्य है कि वह -उ०- अनुसंधान कर्ता की योग्यताओं के अनुकूल हो
१६. अनुसंधान कार्य प्रभावित नहीं होता है -उ०- अन्य अनुसंधानकर्ता के अभिशाप से
१७. अवधारणाएँ निर्मित होती हैं -उ०-देश की संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में.
१८. प्रदूषित तथ्य जन्म दे सकते हैं - प्रदूषित अनुसंधान को.
१९. यदि अनुसंधानकर्ता को सामाजिक परिवेश को प्रदत्तों के रूपमें एकत्रित कर पाने का गुण नहीं है, तो ऐसा अनुसंधान -उ० शुद्ध अनुसंधान नहीं होगा.

२०. अनुसंधान का प्रत्येक शब्द होना चाहिए - उ० - औचित्यपूर्ण.
२१. औचित्यीकरण स्पष्ट करता है - शोध ~~न~~ - उ० - शोध की उपयुक्तता को.
२२. यदि एक अनुसंधान कर्ता अन्वेषणात्मक सद्गुणों से परिपूर्ण है तथा अपने शोध विषय की बारीकियों में दक्ष भी है, तो ऐसा शोध होगा - उ० - मूल्यपरक.

२

१. शोध-पत्र लिखे जाते हैं - उ० - अपने शोध को ~~सर्वप्रथम~~ सर्वसुलभ बनाने के लिए.
२. शोधपत्र लिखे जाते हैं - उ० - शोध छात्रों के द्वारा, शोध पर्यवेक्षकों के द्वारा, वैज्ञानिकों के द्वारा.
३. शोध-पत्र लेखन की प्रक्रिया है - उ० - वैज्ञानिक.
४. शोध-पत्र लेखन से लाभ है - उ० - शोध संबंधी विचार विनिमयीकरण, शोध उपागमों से परिचय, वर्तमान शोध क्षेत्रों की जागरुकता.
५. अनुसंधान है - उ० - एक ईमानदारी से की जाने वाली खोज.
६. शोध-पत्रों के प्रकाशन की अनिवार्यता है - उ० - समस्त उच्चस्तरीय शिक्षकों के लिए.
७. शोध-पत्र लिखने की अनिवार्यता से विद्रूप स्थिति उत्पन्न हो गई है, क्योंकि - उ० - प्रत्येक शिक्षक शोध-पत्र लेखन में रुचि नहीं रखता, प्रत्येक शिक्षक में शोध-पत्र लेखन की वांछनीय योग्यताएँ नहीं होती हैं, प्रत्येक शिक्षक में वैज्ञानिक अभिवृत्ति की अपेक्षा करना व्यर्थ है.
८. अनुसंधान-पत्र के लाभ हैं - उ० - लक्ष्योन्मुखी अनुसंधान का परिमार्जन, अनुसंधान निष्कर्षों की व्यापक आलोचना हेतु प्रस्तुति, राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तरों पर ख्याति अर्जन.
अनुसंधान-पत्र का लाभ नहीं है - उ० - व्यक्तिगत हित के लिए अनुसंधान-पत्र लेखन.
९. अनुसंधान-पत्रों के लेखन की विधा में न्यूनाधिक परिवर्तन होते हैं - उ० - शोध-पत्रिकाओं के अपने मापदण्ड के अनुरूप, शोध करने वाले विद्वान् की रुचियों के अनुकूल, शोध-क्षेत्रों की परम्पराओं के अनुकूल.
१०. शोध-पत्र लेखन के लिए आवश्यक है - उ० - शोध संबंधी योग्यताएँ, शोध संबंधी दक्षताएँ, शोध परक अभिवृत्तियाँ.

११. प्रायः शोध-पत्र की रूपरेखा मिलती-जुलती है – उ० – एक सिनोप्सिस से.

१२. प्रायः शोध-पत्र, पत्रिकाओं में प्रत्येक लेख का एब्सट्रैक्ट (Abstract) तैयार किया जाता है, जिसमें जोर दिया जाता है – उ० – शोध-पत्र के केन्द्रीय थीम के, शोध-पत्र लेखन में प्रयुक्त किसी अभिनव विधा/उपागम को, शोध-पत्र के प्रभावी निष्कर्ष को.

१३. कॉलेज/विश्वविद्यालय स्तर पर व्यक्तिगत उन्नति (Personal Promotion Scheme) के तहत एक रीडर के प्रत्याशी को शोध-पत्र लिखने होते हैं – उ० 3-5 तक.

१४. अनुसंधान-पत्र एवम् अनुसंधान लेख हैं – ~~उ० – एक ही लेख के दो पृथक्-पृथक् नाम~~,
उ० – एक प्रदत्त जनित निष्कर्षों पर आधारित है, तो दूसरा सैद्धान्तिक, एक की पृष्ठभूमि सर्वेक्षणात्मक या प्रयोगात्मक है तो दूसरे की वैचारिक.

१५. अनुसंधान लेख की पृष्ठभूमि हो सकती है – उ० – दार्शनिक, ऐतिहासिक तथा समसामयिक में से कोई भी.

१६. शोध-लेख की अपेक्षा शोध-पत्र अधिक प्रभावशाली माने जाते हैं, क्योंकि ये होते हैं – उ० – प्रदत्त जनित एवं सांख्यिकीय अधिष्ठित.

१७. प्रायः शोध-लेख प्रचुरता से प्रस्तुत किए जाते हैं – उ० – सेमीनारों में, पत्र-पत्रिकाओं में, विचार-गोष्ठियों में.

१८. कॉन्फ्रेंस (सम्मेलन) है, एक – उ० – अनुसंधान कार्यों पर गहन विचार करने का प्रावधान, अनुसंधान समस्याओं का उचित समाधान, अनुसंधान निष्कर्षों का व्यापक हस्तान्तरण.

१९. सम्मेलन में प्रायः उपस्थित रहते हैं – उ० – विषय-विशेषज्ञ, अनुसंधानकर्ता, जिज्ञासु.
सम्मेलन (कॉन्फ्रेन्स) में प्रायः उपस्थित नहीं रहते – उ० – अज्ञानी या सामान्य जन.

२०. प्रायः शोध सम्मेलन बुलाए जाते हैं – उ० – मार्गदर्शन के लिए.

२१. शोध सम्मेलन हो सकते हैं – उ० – क्षेत्रीय स्तर के, राष्ट्रीय स्तर के, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के.

२२. एक अनुसंधान सम्मेलन में प्रायः होते हैं - उ०- स्थायी सदस्य, विषय-विशेषज्ञ, सम्मेलन अध्यक्ष.
एक अनुसंधान सम्मेलन में प्रायः नहीं होते हैं - उ०- जनसाधारण व्यक्ति
२३. कॉन्फ्रेंस (सम्मेलन) से प्रमुख लाभ है - उ०- प्रजातान्त्रिक मूल्यों का विकास, नव अनुसंधान कर्ताओं का मार्गदर्शन, पारस्परिक विचार-विनिमय.
२४. कार्यशाला के आयोजन का प्रमुख लक्ष्य है - उ०- अनुसंधानकर्ताओं में विशेष समस्या के समाधान हेतु क्रियात्मक कौशलों को परिमार्जित करना, अनुसंधान कर्ताओं को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना, अनुसंधानकर्ताओं को किसी अनुसंधान के क्षेत्र विशेष में सिद्धहस्त करना.
२५. 'कार्यशाला' शब्द अनुसंधान के क्षेत्र में आया है - उ०- अभियान्त्रिकी से.
२६. कार्यशाला के आयोजन में ज्ञानात्मक उद्देश्य निहित हैं - उ०- जटिल समस्याओं का समाधान ढूँढना, अनुसंधान के सामाजिक-दार्शनिक पक्षों का विवेचन करना, अनुसंधान विधियों का निर्धारण करना.
२७. कार्यशाला का भावात्मक उद्देश्य है - उ०- वर्तमान समस्या क्षेत्रों के प्रति जागरूकता, तात्कालिक समस्याओं के प्रति सक्रियता, अनुसंधान ~~विधियों~~ विधा में निपुणता
२८. कार्यशाला का प्रमुख मनः क्रियात्मक उद्देश्य है - उ०- अनुसंधान अभिकल्प (~~Reas~~ Research Design) तैयार करने की ~~दक्ष~~ दक्षता, अनुसंधान समस्या का चयन एवं निर्धारण संबंधी योग्यता, अनुसंधान उपकरण निर्माण सम्बन्धी योग्यताएँ.
२९. प्रायः कार्यशाला आयोजन का लक्ष्य होता है - उ०- शोध करने की कला का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना.
३०. कार्यशाला के मानवीय संसाधन हैं - उ० - आयोजक - संचालक - विषय-विशेषज्ञ - भागीदार.
३१. कार्यशाला में अहं भूमिका रहती है - उ०- विषय-विशेषज्ञ की.
३२. शोध कार्यशाला का पद है - उ०- प्रकरण का प्रस्तुतीकरण एवं स्पष्टीकरण, उपागम को प्रयोग करने का अभ्यास, प्रकरण का अनुसरण एवं मूल्यांकन.

३३. कार्यशाला की विशेषता है — उ० — अनुसंधान संबंधी उच्च ज्ञानात्मक एवं क्रियात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति, अनुसंधानों के नवीन उपागमों के सैद्धान्तिक एवं क्रियात्मक पक्षों का अवबोध, अनुसंधानों के व्यावहारिक उपयोगों की सम्भावनाओं को खोजना.

३४. एक शोध कार्यशाला की सीमाएँ हैं — उ० — समय की अत्यधिक आवश्यकता (उपलब्धता), क्रियात्मकता पर अत्यधिक बल, विशिष्ट शोध सामग्री की आवश्यकता.

३५. विचार गोष्ठी (सेमिनार) है — उ० — चिन्तन स्तर को समुन्नत करने की प्रक्रिया, उच्चशक्तियों को पोषित करनेवाली प्रक्रिया, चिन्तन की एक अन्तः प्रक्रिया.

३६. विचार गोष्ठी का प्रमुख ज्ञानात्मक उद्देश्य है — उ० — अनुसंधानकर्ता में आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक क्षमताओं का विकास करना, अनुसंधानकर्ता में निरीक्षण एवम् अनुभवों के प्रस्तुतीकरण की क्षमताओं का विकास करना, अनुसंधानकर्ता में संश्लेषणात्मक एवं मूल्यांकन संबंधी योग्यताओं का विकास करना.

३७. विचार गोष्ठी के भावात्मक उद्देश्य हैं — उ० — अनुसंधानकर्ता में धैर्य एवं सहनशीलता के गुण उत्पन्न करना, अनुसंधानों के शोध निष्कर्षों की प्रशंसा करना, अनुसंधानकर्ता में भावात्मक स्थिरता एवं ~~प्रेरणा~~ प्रेरणा उत्पन्न करना.

३८. एक विचार गोष्ठी के संघटक तत्व हैं — उ० — व्यवस्थापक — अध्यक्ष — वक्तागण — सहभागी.

३९. विचार गोष्ठी के प्रकार हैं — उ० — अन्तर्राष्ट्रीय विचार गोष्ठी, राष्ट्रीय विचार गोष्ठी, मुख्य विचार गोष्ठी
विचार गोष्ठी का प्रकार नहीं है — उ० — गृह गोष्ठी.

४०. विचार गोष्ठी से लाभ है — उ० — अनुसंधान के उच्च ज्ञानात्मक एवं भावनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति, प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास, उत्तम अधिगम आदतों का निर्माण.

४१. विचार गोष्ठी एक अनुसंधानकर्ता को अवसर प्रदान करती है — उ० — भाव प्रदर्शन, विचार विनिमयन, स्वाभाविक अधिगम.

४२. विचार गोष्ठियों के आयोजन का प्राथमिक लक्ष्य होता है उ० — ज्ञानार्जन.

४३. आधुनिक युग में विचार गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है – उ० – शिक्षकों को अनुसंधान संबंधी युक्तियों से सुसज्जित करने के लिए है.

४४. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मानकों के अनुसार प्रत्येक शिक्षक को विचार गोष्ठियाँ आयोजित करनी ~~चाहिए सम्मिलित~~ सम्मिलित होना अनिवार्य बना दिया है, क्योंकि – उ० – ये भावी युवा पीढ़ी के निर्माणकर्ता हैं

४५. 'सिम्पोजियम' कहते हैं – उ० बौद्धिक मनोरंजन को

४६. सिम्पोजियम है एक – उ० – सुनियोजित समूह जिसमें कुछ वक्ता तथा अधिकांश श्रोता हैं, पारस्परिक विचार विनिमय द्वारा किसी सुनियोजित लक्ष्य तक पहुँचने की प्रक्रिया, सामूहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया.

४७. विचार समिति का उद्देश्य है – उ० – तात्कालिक समस्या की जानकारी एवम उन्हें पहचानने की क्षमता का विकास करना, अनुसंधान प्रकरण संबंधी समस्याओं के संदर्भ में निर्णय लेना, विषय-क्षेत्र के विशेषज्ञों से राय लेना.

४८. विचार समिति की विशेषता है – उ० – अनुसंधान की किसी विशेष समस्या का तथा उसके विभिन्न पक्षों का व्यापक बोध कराना. वक्ता एवं श्रोता को अपने विचारों एवं मतों को अभिव्यक्त करने की स्वतन्त्रता प्रदान करना, उच्चस्तरीय चिन्तन का प्रशिक्षण देना

४९. विचार ~~गोष्ठी~~ समिति के अन्तर्गत किसी सत्र विशेष के अध्यक्ष का कार्य होता है – उ० – सत्र संचालन, वक्ता एवं श्रोतागणों के मध्य वाद-विवाद की समाप्ति, अनुशासन नियामक.

५०. विचार गोष्ठी का आयोजन किया जा सकता है – कक्षा में, विद्यालय में, जिला स्तर पर.

---

१. शोध ग्रन्थ लेखन की विधि होनी चाहिए – उ० – वैज्ञानिक.

२. अनुसंधान संबंधी रिपोर्ट को वैज्ञानिक ढंग से लिखने में लाभ है – उ० – वैश्विक सम्प्रेषण.

३. अनुसंधान रिपोर्ट तैयार करने के लिए एक अनुसंधानकर्ता में गुण होना अनिवार्य है – उ० – कौशलात्मक दक्षताएँ, वैज्ञानिक अभिवृत्ति, मानसिक संतुलन (धैर्य)

४. आप अपने अनुसंधान का प्रतिवेदन प्रारूप तैयार करने से पूर्व सलाह करेंगे – उ० – अपने पर्यवेक्षक से, अपने अन्य वरिष्ठ साथियों से, अपने पूर्वगामियों के कार्यों को देखकर.

५. अनुसंधान के प्रमुख भाग हैं – उ० – मुखपृष्ठ-षट्क तथा पश्च भाग.

६. अनुसंधान प्रारूप का मध्य भाग तैयार करता है – उ० – अनुसंधान प्रारूप के प्रमुख भाग को.

७. अनुसंधान प्रारूप की प्राथमिकताओं में सम्मिलित हैं – उ० – मुख-पृष्ठ-विषयवस्तु-सारणी-तालिका सूची केवल.

८. अनुसंधान प्रारूप का मुखपृष्ठ होना चाहिए – उ० – सौन्दर्यबोधक.

९. अनुसंधान प्रारूप की उपमा मानव शरीर से दी जाती है, जिसमें इसके विभिन्न भागों में विभिन्नता के बावजूद होना आवश्यक है – उ० – कार्यात्मक सातत्यता का.

१०. अनुसंधान प्रबन्ध/ग्रन्थ का मुखपृष्ठ होना चाहिए – उ० – संक्षिप्त एवं सारगर्भित, वैज्ञानिक एवं तार्किक, सौन्दर्ययुक्त एवम् / आकर्षक तथा कैची.

११. अनुसंधान ग्रंथ को किसी उपाधि अथवा अन्य उद्देश्यों से प्रस्तुत करने पर पर्यवेक्षक प्रमाणपत्र प्रस्तुत किया जाता है – उ० – अन्त कार्य की प्रामाणिकता की पुष्टि करने के लिए.

१२. शोधप्रबन्ध में प्राक्कथन का महत्व है – उ० – कृतज्ञता ज्ञापन के लिए.

१३. शोध प्राक्कथन के शब्द होने चाहिए – उ० – सधे हुए, सतर्क एवं विनीत.

१४. प्रायः शोध प्राक्कथन में आभार-प्रदर्शन की रस्म अदा करते हुए यदि आप इसके विस्तार को कम करने के लिए कुछ व्यक्तियों के नाम हटाना चाहें, तो वे होंगे – उ० – निकटस्थ संबन्धी.